

गुरु पूर्णिमा विशेषांक

जुलाई 2010

मूल्य : 24/-

गुरु-तंत्र-संख्या

विज्ञान

गुरुः परम दैवतम् - गुरु शरण से ही शक्ति

त्रिपुर सुन्दरी साधना

सम्मोहन-आकर्षण 'कली' दीक्षा

शिव तत्व रहस्य

स्वर्णकर्षण भैरव





COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

शान्त और चेतना की अगमोल कृतियां

पूज्य गुरुदेव ‘डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी’

द्वारा रचित ज्ञान की गरिमा से युक्त
सम्पूर्ण जीवन को जगमगाने वाली
अनमोल कृतियां

→ → → → → → सम्पर्क :- ← ← ← ← ← ←
 मंत्र-यंत्र-तंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
 फोन : 0291-2432209, 2432220 त्रै

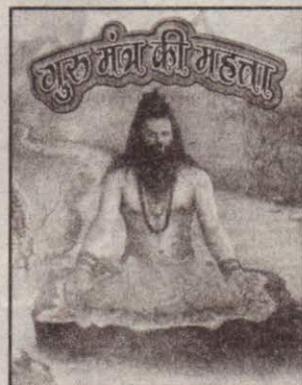
फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010

‘जुलाई’ 2010 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान ‘02’

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उच्चति, प्रगति और भारतीय गृह विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

श्रीगुरुप्रकाश

॥ॐ वस्त्र तद्वाय वास्त्रयथाय गुरुभ्यो नमः॥



सद्गुरुदेव	
सद्गुरु प्रवचन	5
स्तम्भ	
शिष्य धर्म	43
गुरुवाणी	44
वराहमिहिर	59
नक्षत्रों की वाणी	60
मैं समय हूँ	62
इस मास जोधपुर में	80
एक दृष्टि में	84

साधना	
नाग पंचमी साधना	33
छाया पुरुष सिद्धि	
साधना	37
कर्ण पिशाचनी साधना	39
पंचागुली साधना	40
राधा के अद्वितीय	
साधना प्रयोग	46
<u>निपुर सुन्दरी साधना</u>	56
स्वर्णकिर्षण	
भैरव साधना	63
मदनाक्षी अप्सरा	
साधना	66
Shani Sadhana	82
Sammohan Sadhana	83



दीक्षा

कृष्ण शक्ति तत्व युक्त	
आकर्षण सम्मोहन प्रवायक	
'कलीं दीक्षा'	72



विशेष	
गुरु परम दैवतम्	23
आत्म वेदना	
हे! निखिलेश्वर	26
आदि देव महादेव नमो नमः	
शिव तत्व	28
गुरु से जुड़ना...	
...गुरु सेवा ही है	41
इबोपी	
विशुद्ध चक्र जागरण	51
सद्गुरुदेव निखिल का	
शाश्वत आह्वान	69



:: सम्पर्क ::

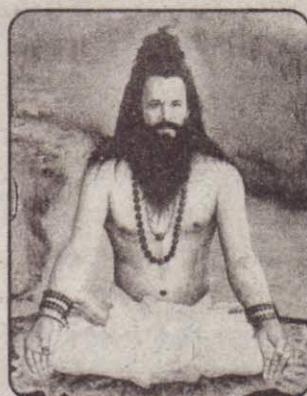
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 011-27356700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोट कॉलोनी, जोधपुर - 342031 (राज.) फोन: 0291-2432209, टेली फैक्स: 0291-2432010
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - mtyv@siddhashram.org

प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरालं जी)

प्रधान सम्पादक
श्री नन्द किशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक
श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली
श्री अरविन्द श्रीमाली



प्रकाशक एवं स्वामित्व
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

द्वारा
सुदर्शन प्रिन्ट्स
487/505, पीरागढ़ी,
रोहतक रोड, नड़ विल्ली-87
से मुद्रित तथा
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हाईकोट
कॉलोनी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति: 24/-
वार्षिक: 258/-

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमकड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का परिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर-न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 258/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्वयों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

☆ प्रार्थना ☆

अभ्यर्थिनां नम शिरोत्तमानां, सत्साधनाकानां ननु भगव्येण।
तद्वौमि निष्ठिलेश्वर देवदेव, यस्मिन् प्रसङ्गे सकलार्थ सिद्धिः॥

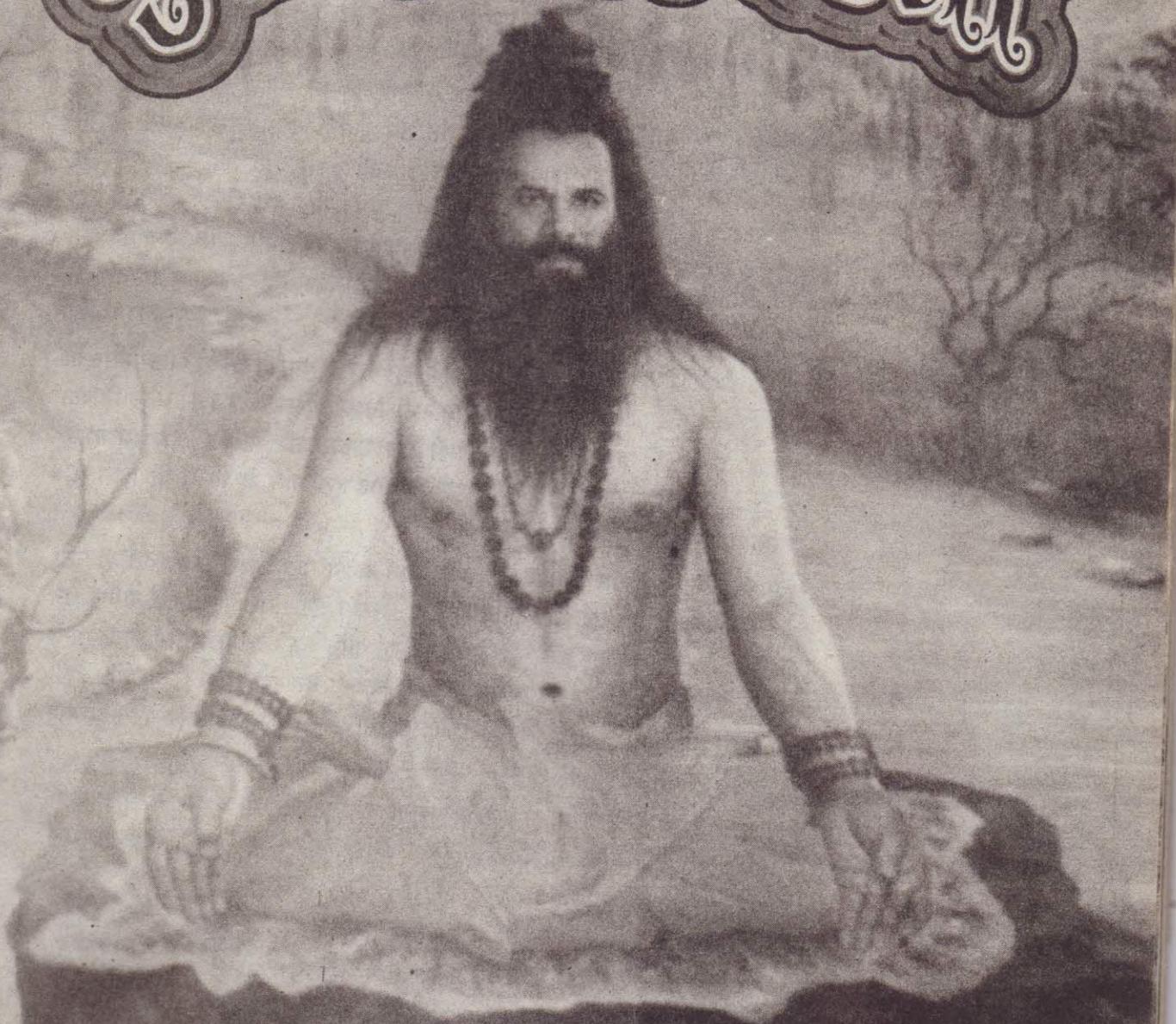
भौतिक और आध्यात्मिक कामनाओं की पूर्ति हेतु श्री चरणों में झुके हुए श्रेष्ठतम साधकों के सौभाग्य रूप, देवाधिदेव गुरुदेव निखिल के श्री चरणों में भक्तिभावयुक्त प्रणामांजलि अर्पित करता हूँ। जिसकी प्रसन्नता से सिद्धियां स्वतः फलीभूत होती हैं। अन्य देवी देवताओं की आराधना या उपासना से कुछ भी प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता, क्योंकि सभी शक्ति तत्वों में गुरु ही समाहित होकर चेतना पुंज को प्रदान करते हैं।

☆ पहला कदम ☆

एक सीधा-साधा किसान जीवन में पहली बार पहाड़ की यात्रा को निकला। रात्रि के सफर के लिए उसने कहीं से एक कंदील जुटाई। पहाड़ियों पर जाने के लिए रात को निकल जाना ही जरूरी था। सूरज निकल आने से सफर की कठिनाई बढ़ जाने का डर जो था। यात्रा की खुशी के कारण किसान ठीक से सो भी नहीं सका, अर्धरात्रि को ही उठकर वह सफर के लिए निकल पड़ा, लेकिन गांव के बाहर आकर ही वह ठिठककर खड़ा हो गया। उसके मन में एक दुविधा पैदा हो गई। उसने महसूस किया कि उसके पास जो कंदील थी उसका प्रकाश तो दस कदमों से ज्यादा नहीं पड़ा रहा था और सफर था दस किलोमीटर का। वह सोचने लगा कि जाना तो दस किलोमीटर है और रोशनी है मात्र दस कदमों की। यह रोशनी इतने लम्बे सफर के लिए कैसे पूरी पड़ेगी। इतने घुप्प अंधकार में इतनी सी कंदील के प्रकाश को लेकर जाना क्या उचित रहेगा? यह तो सागर में छोटी सी नाव लेकर उतरने जैसा ही है। अतः इसी चिंता में वह सूर्य के निकलने का इंतजार करने लगा। तभी उसने देखा कि एक बूँदा आदमी उसके पास से निकलकर पहाड़ियों की ओर जा रहा है। उसके हाथ में उससे भी छोटी कंदील थी। उस किसान ने वृद्ध को रोककर अपनी दुविधा बताई तो वह पहले तो खूब हंसा और फिर बोला, 'पागल! तू पहले दस कदम तो चल। इतना चलने के बाद, इतना ही फिर आगे दिखने लगेगा। यदि एक कदम भी आगे का दिखता रहे तो सारी दुनिया की परिक्रमा की जा सकती है।' बात किसान की समझ में आ गई, वह उठा और यात्रा पर चल पड़ा। सूर्य निकलने से पूर्व वह पहाड़ियों पर था। जीवन के मार्ग पर क्या उस बूँदे की सीख याद रखने योग्य नहीं हैं?

साधना के मार्ग में भी यही करना चाहिये, धीरे-धीरे साधना मार्ग पर आगे बढ़ने से ही पूर्णता प्राप्त होती है।

ਗੁਰ ਮਿਸ਼ਨ ਕੀ ਯਾਹਲਾ



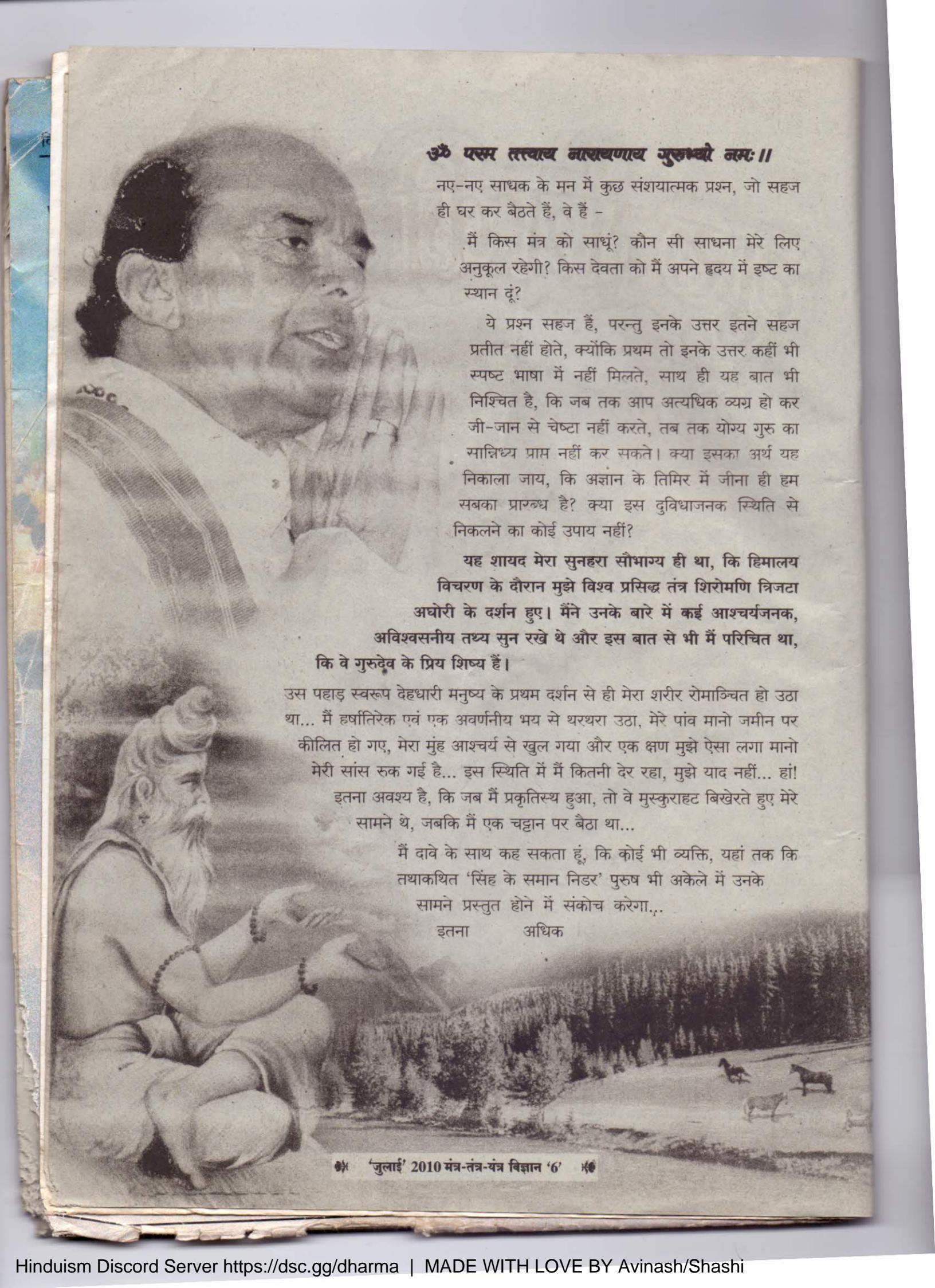
1712

1710

8X

5

X



ॐ एस्म तत्त्वाद नासद्यणाय गुरुभ्यो नमः ॥

नए-नए साधक के मन में कुछ संशयात्मक प्रश्न, जो सहज ही घर कर बैठते हैं, वे हैं -

मैं किस मंत्र को साधूँ? कौन सी साधना मेरे लिए अनुकूल रहेगी? किस देवता को मैं अपने हृदय में इष्ट का स्थान दूँ?

ये प्रश्न सहज हैं, परन्तु इनके उत्तर इतने सहज प्रतीत नहीं होते, क्योंकि प्रथम तो इनके उत्तर कहीं भी स्पष्ट भाषा में नहीं मिलते, साथ ही यह बात भी निश्चित है, कि जब तक आप अत्यधिक व्यग्र हो कर जी-जान से चेष्टा नहीं करते, तब तक योग्य गुरु का गान्धिध्य प्राप्त नहीं कर सकते। क्या इसका अर्थ यह निकाला जाय, कि अज्ञान के तिमिर में जीना ही हम सबका प्रारब्ध है? क्या इस दुविधाजनक स्थिति से निकलने का कोई उपाय नहीं?

यह शायद मेरा सुनहरा सौभाग्य ही था, कि हिमालय विचरण के दौरान मुझे विश्व प्रसिद्ध तंत्र शिरोमणि त्रिजटा अघोरी के दर्शन हुए। मैंने उनके बारे में कई आश्चर्यजनक, अविश्वसनीय तथ्य सुन रखे थे और इस बात से भी मैं परिचित था, कि वे गुरुदेव के प्रिय शिष्य हैं।

उस पहाड़ स्वरूप देहधारी मनुष्य के प्रथम दर्शन से ही मेरा शरीर रोमाञ्चित हो उठा था... मैं हृषीतिरेक एवं एक अवर्णनीय भय से थरथरा उठा, मेरे पांव मानो जमीन पर कीलित हो गए, मेरा मुंह आश्चर्य से खुल गया और एक क्षण मुझे ऐसा लगा मानो मेरी सांस रुक गई है... इस स्थिति में मैं कितनी देर रहा, मुझे याद नहीं... हाँ! इतना अवश्य है, कि जब मैं प्रकृतिस्थ हुआ, तो वे मुस्कुराहट बिखेरते हुए मेरे सामने थे, जबकि मैं एक चट्टान पर बैठा था...

मैं दावे के साथ कह सकता हूँ, कि कोई भी व्यक्ति, यहां तक कि तथाकथित 'सिंह के समान निंदर' पुरुष भी अकेले में उनके सामने प्रस्तुत होने में संकोच करेगा...

इतना अधिक



तेजस्वी एवं भयावह स्वरूप है उनका। शायद मैं यह जानता था, कि वे मेरे गुरु भाई हैं या शायद उनके चेहरे पर उस समय ममत्व के भाव थे, जो मैं उनके सामने बैठा रह सका... थोड़ी देर उनसे बात हुई, तो मेरा रहा-सहा संकोच भी जाता रहा... उन्हें गुरुदेव द्वारा 'टेलीपैथी' से मुझसे मिलने का आदेश मिला था (इस भ्रमण के दौरान यह मेरी आंतरिक इच्छा थी, कि मैं त्रिजटा से मिलूं और शायद गुरुदेव ने इसे जान लिया था) और उन्हें मेरा मार्गदर्शन करने को कहा था।

उस समय मेरा मन भी इस प्रकार के संशयात्मक प्रश्नों से ग्रस्त था और उन पर विजय प्राप्त करने के लिए मैं उनसे ज़्यूझता रहता था। पर मुझे जल्दी ही इस बात का अहसास हो गया था, कि मैं एक हारती हुई बाजी खेल रहा हूं और मेरे मस्तिष्क-पटल पर कई नवीन प्रश्न दस्तक देने लगे - मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? मुझे क्या करना चाहिए? मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ पथ कौन सा है? आदि-आदि।

जब मैंने अपनी दुविधा त्रिजटा के समक्ष रखी, तो वे ठहाका लगा कर हँसने लगे, मानो मेरी अज्ञानता पर उन्हें दया आई हो... और फिर उन्होंने जो कुछ भी तथ्य मेरे आगे स्पष्ट किये, उनके आगे तो तीनों लोक की निधियां भी तुच्छ हैं।

उन्होंने कहा - 'प्रत्येक मनुष्य इस प्रकार की समस्या का सामना कभी न कभी करता ही है, परन्तु केवल प्रजावान एवं सूक्ष्म विवेचन युक्त व्यक्ति ही इससे पार पा सकता है; बाकी व्यक्ति इसमें उलझ जाते हैं और जीवन का एक स्वर्णिम अवसर गंवा देते हैं, अत्यन्त सामान्य रूप से जीवन व्यतीत कर देते हैं।'

'हमारे शास्त्रों में, तैतीस करोड़ देवी-देवताओं की उपस्थिति स्वीकार की गई और उन सबके एकत्व रूप को ही 'परम सत्य' या 'परब्रह्म' कहा गया है। इसका अर्थ यह है, कि यदि साधक को पूर्णता प्राप्त करनी है, तो उसे इन ३३ करोड़ देवी-देवताओं को सिद्ध



करना पड़ेगा; परन्तु यह तभी संभव है, जब व्यक्ति लगातार पृथ्वी पर अपने पूर्व जन्मों की स्मृति के साथ हजारों जन्म ले अथवा वह हमेशा-हमेशा के लिए अजर-अमर हो जाये...'

'परन्तु ये दोनों ही रस्ते बड़े पेचीदा और असंभव सी लगने वाली कठिनाईयों से युक्त हैं। इसके अलावा तुम्हें ज्ञान नहीं होता, कि कब तुम्हारी छोटी सी त्रुटि की वजह से तुम्हारी वर्षों की तपस्या नष्ट हो जायेगी और तुम ऊँचाई से वापस साधारण स्थिति में आ गिरोगे।'

'मैं अत्यधिक लम्बे समय से हिमालय में तपस्यारत हूं और असंभव कही जाने वाली साधनाएं भी सिद्ध कर चुका हूं। इतने वर्षों के अनुभव के बाद यह मेरी धारणा है, कि सभी मंत्रों में 'गुरु मंत्र' सर्वश्रेष्ठ मंत्र है, सभी साधनाओं में 'गुरु साधना' अद्वितीय है और गुरु ही सभी देवताओं के सिरमौर हैं। वे इस समस्त ब्रह्माण्ड को गतिशील रखने वाली आदि शक्ति हैं और कुछ शब्दों में कहा जाय, तो वे - 'साकार ब्रह्म' हैं।'

मेरे चेहरे पर आश्चर्य की लकीरें उभर आईं, जिसे देखकर उन्होंने कहा - 'तुम्हें यों अवाक् होने की जरूरत नहीं, मुझे इस बात का पूरा ज्ञान है, कि मैं क्या कह रहा हूं। भ्रमित तो तुम लोग हुए हो, तुम हर चीज को बिना गूढ़ता से निरीक्षण किये ही मान लेते हो, तभी तो आज विभिन्न देवी-देवताओं की साधनाएं तुम्हारे मन-मस्तिष्क को इतना लुभाती हैं। तुम्हारी स्थिति उस मछली की तरह है, जो कि नदी को ही सक्षम और अनन्त समझती है, क्योंकि सागर की विशालता से अनभिज्ञ होती है।'

'भगवान शिव के अनुसार सभी देवी-देवता, पवित्र नदियां एवं तीर्थ गुरु के दक्षिण चरण के अंगुष्ठ में स्थित हैं, वे ही अध्यात्म के आदि, मध्य एवं अंत हैं, वे ही निर्माण, पालन, संहार एवं दर्शन, योग, तंत्र-मंत्र आदि के स्तोत्र हैं। वे सभी प्रकार की उपमाओं से परे हैं... इसीलिए यदि कोई पूर्णता प्राप्त करने का इच्छुक है, यदि कोई ईमानदारी से 'दिव्य बोध' प्राप्त करने का इच्छुक है, तो उसे एक क्षण भी गंवाये बिना सद्गुरु के चरण-कमलों की शरण ग्रहण कर लेनी चाहिए और उनकी साधना एवं मंत्र को जीवन में उतारने की चेष्टा करनी चाहिए।'

'गुरु मंत्र' शब्दों

का समूह

मात्र न होकर समस्त ब्रह्माण्ड के विभिन्न आयामों से युक्त उसका मूल तत्त्व होता है। अतः गुरु साधना में प्रवृत्त होने से पहले यह उपयुक्त होगा, कि हम गुरु मंत्र का बाह्य और गुह्य दोनों ही अर्थ भली प्रकार से समझ लें।'

'पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त गुरु मंत्र का क्या अर्थ है?' - मैंने बीच में टोकते हुए पूछा।

एक लम्बी खामोशी... जो इतनी लम्बी हो गई थी, कि खलने लगती थी... उनके चेहरे के भावों से मुझे अनुभव हुआ, कि वे निश्चय और अनिश्चय के बीच झूल रहे हैं। अंततः उनका चेहरा कुछ कठोर हुआ, मानो कोई निर्णय ले लिया हो। अगले ही क्षण उन्होंने अपने नेत्र मूँद लिये, शायद वे टेलीपैथी के माध्यम से गुरुदेव से सम्पर्क कर रहे थे; लगभग दो मिनट के उपरान्त मुस्कुराते हुए उन्होंने आंखे खोल दीं।

'इस मंत्र के मूल तत्त्व की तुम्हारे लिये उपयोगिता ही क्या है? मंत्र तो तुम जानते ही हो, इसके मूल तत्त्व को छोड़ कर इसकी अपेक्षा मुझसे आकाश गमन सिद्धि, संजीवनी विद्या अथवा अटूट लक्ष्मी ले लो, अनन्त सम्पदा ले लो, जिससे तुम सम्पूर्ण जीवन में भोग और विलास प्राप्त करते रहेंगे... ऐसी सिद्धि ले लो, जिससे किसी भी नर अथवा नारी को वश में कर सकोगे।'

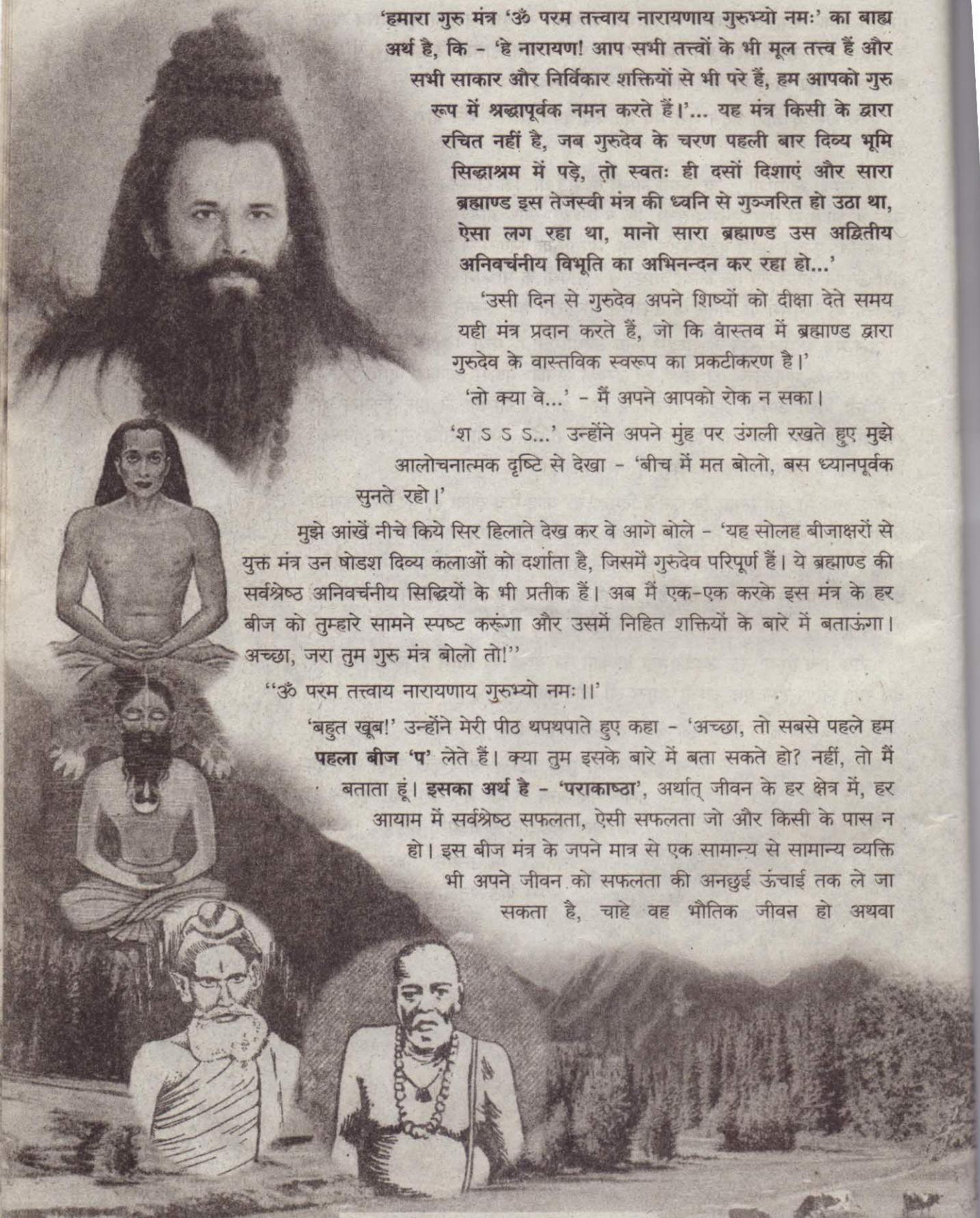
एक क्षण तो मुझे लगा, कि उनके दिमाग का कोई पेंच ढीला है, पर मेरा अगला विचार इससे बेहतर था। मैंने सुना था, कि उच्चकोटि के योगी या तांत्रिक साधक को श्रेष्ठ, उच्चकोटि का ज्ञान देने से पूर्व उसकी परीक्षा लेने हेतु कई प्रकार के प्रलोभन देते हैं, कई प्रकार के चक्रमें देते हैं... वे भी अपना कर्तव्य बड़ी खूबसूरती से निभा रहे थे...

करीब पांच मिनट तक उनकी मुझे बहकाने की चेष्टा पर भी मैं अपने निश्चय पर दृढ़ रहा, तो उन्होंने एक लम्बी श्वास ली और कहा -

'अच्छा ठीक है। बोलो क्या जानना चाहते हों?'

'सब कुछ' - मैं चहक उठा - 'सब कुछ अपने गुरु मंत्र एवं उसके मूल तत्त्व के बारे में। मेरा नम्र निवेदन है, कि आप कुछ भी छिपाइयेगा नहीं।'

आखिर मैं उन्होंने आश्वस्त होकर निम्न बातें बताईं -



‘हमारा गुरु मंत्र ‘ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः’ का बाह्य अर्थ है, कि - ‘हे नारायण! आप सभी तत्त्वों के भी मूल तत्त्व हैं और सभी साकार और निर्विकार शक्तियों से भी परे हैं, हम आपको गुरु रूप में श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं।’... यह मंत्र किसी के द्वारा रचित नहीं है, जब गुरुदेव के चरण पहली बार दिव्य भूमि सिद्धाश्रम में पढ़े, तो स्वतः ही दसों दिशाएं और सारा ब्रह्माण्ड इस तेजस्वी मंत्र की ध्यनि से गुञ्जरित हो उठा था, ऐसा लग रहा था, मानो सारा ब्रह्माण्ड उस अद्वितीय अनिवर्चनीय विभूति का अभिनन्दन कर रहा हो...’

‘उसी दिन से गुरुदेव अपने शिष्यों को दीक्षा देते समय यही मंत्र प्रदान करते हैं, जो कि वास्तव में ब्रह्माण्ड द्वारा गुरुदेव के वास्तविक स्वरूप का प्रकटीकरण है।’

‘तो क्या वे...’ - मैं अपने आपको रोक न सका।

‘श ॐ ऽ...’ उन्होंने अपने मुंह पर उंगली रखते हुए मुझे आलोचनात्मक दृष्टि से देखा - ‘बीच में मत बोलो, बस ध्यानपूर्वक सुनते रहो।’

मुझे आंखें नीचे किये सिर हिलाते देख कर वे आगे बोले - ‘यह सोलह बीजाक्षरों से युक्त मंत्र उन षोडश दिव्य कलाओं को दर्शाता है, जिसमें गुरुदेव परिपूर्ण हैं। ये ब्रह्माण्ड की सर्वश्रेष्ठ अनिवर्चनीय सिद्धियों के भी प्रतीक हैं। अब मैं एक-एक करके इस मंत्र के हर बीज को तुम्हारे सामने स्पष्ट करूँगा और उसमें निहित शक्तियों के बारे में बताऊँगा। अच्छा, जरा तुम गुरु मंत्र बोलो तो।’

“ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥”

‘बहुत खूब!’ उन्होंने मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा - ‘अच्छा, तो सबसे पहले हम पहला बीज ‘प’ लेते हैं। क्या तुम इसके बारे में बता सकते हो? नहीं, तो मैं बताता हूँ। इसका अर्थ है - ‘पराकाष्ठा’, अर्थात् जीवन के हर क्षेत्र में, हर आयाम में सर्वश्रेष्ठ सफलता, ऐसी सफलता जो और किसी के पास न हो। इस बीज मंत्र के जपने मात्र से एक सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी अपने जीवन को सफलता की अनछुई ऊँचाई तक ले जा सकता है, चाहे वह भौतिक जीवन हो अथवा

आध्यात्मिक। ऐसे व्यक्ति को स्वतः ही अदूट धन-सम्पदा, ऐश्वर्य, मान, सम्मान प्राप्त हो जाता है। वह भीड़ में भी 'नायक' ही रहता है, वह मानव जाति का 'मार्गदर्शक' कहलाता है और आने वाली पीढ़ियां उसे 'युगपुरुष' कह कर पूजती हैं।

'इसके द्वारा व्यक्ति को सूक्ष्म एवं दिव्य दृष्टि भी प्राप्त हो जाती है और वह 'काल ज्ञान' में भी पारंगत हो जाता है। अतः वह आसानी से किसी भी व्यक्ति, सभ्यता और देश के भूत, भविष्य और वर्तमान को आसानी से देख लेता है।'

'वाह!' - मेरे मुंह से सहज ही निकल पड़ा।

'हाँ, पर... क्या तुम और भी जानना चाहोगे या तुम इतने से ही खुश हो' -
उनकी आंखों में शरारत झलक रही थी।

'नहीं! रुकिये मत! मैं सब कुछ जानना चाहता हूँ।'

वे मेरी परेशानी में प्रसन्नता महसूस कर रहे थे और मेरी व्यग्रता उन्हें एक संतोष सा प्रदान कर रही थी।

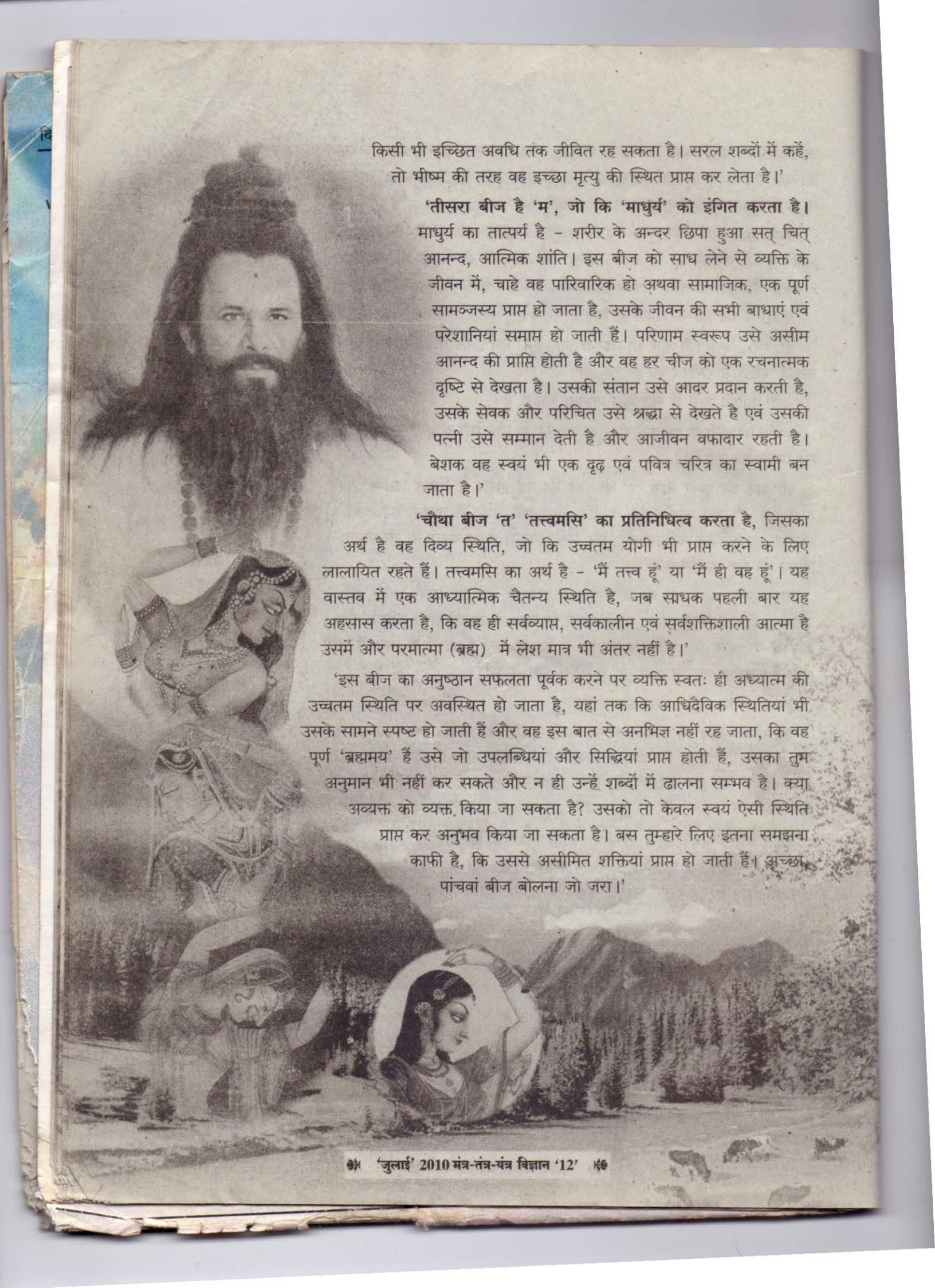
'तो अब हम दूसरे बीज 'र' को लेते हैं। यह शरीर में स्थित 'अग्नि' को दर्शाता है, जिसका कार्य व्यक्ति के रोग, दुष्प्रभावों आदि से बचाना है। इसके अलावा यह इच्छित व्यक्तियों को 'रति सुख' (काम) प्रदान करता है, जो मानव जीवन की एक आवश्यकता है।'

'यह सूक्ष्म अग्नि का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो कि ऊपर बताई गई अग्नि से भिन्न होती है इसका कार्य, व्यक्ति के चित्त से उसकी सारी कमियों और विकारों को जला कर पवित्र करना है। ये विकार 'पांच विकारों' के नाम से जाने जाते हैं। अच्छा जरा बताओ तो, वे कौन-कौन से हैं?'

'काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार।'

'बिल्कुल सही। इन पांच मुख्य व्याधियों अथवा विकारों को नष्ट करने से मानव चेतना का पवित्रीकरण हो जाता है, उसमें दिव्यता आ जाती है और सबसे बड़ी बात यह है, कि सारे ब्रह्माण्ड का ज्ञान उसके मस्तिष्क में स्थित हो जाता है।'

'ऐसा व्यक्ति सबके द्वारा पूजनीय 'अग्नि विद्या' में पारंगत हो जाता है और यदि वह पूर्ण विधि-विधान के साथ सही ढंग से इस बीज मंत्र का अनुष्ठान सम्पन्न कर लेता है, तो वह



किसी भी इच्छित अवधि तक जीवित रह सकता है। सरल शब्दों में कहें, तो भीष्म की तरह वह इच्छा मृत्यु की स्थित प्राप्त कर लेता है।'

'तीसरा बीज है 'म', जो कि 'माधुर्य' को इंगित करता है। माधुर्य का तात्पर्य है - शरीर के अन्दर छिपा हुआ सत् चित् आनन्द, आत्मिक शांति। इस बीज को साध लेने से व्यक्ति के जीवन में, चाहे वह पारिवारिक हो अथवा सामाजिक, एक पूर्ण सामञ्जस्य प्राप्त हो जाता है, उसके जीवन की सभी बाधाएं एवं परेशानियां समाप्त हो जाती हैं। परिणाम स्वरूप उसे असीम आनन्द की प्राप्ति होती है और वह हर चीज को एक रचनात्मक दृष्टि से देखता है। उसकी संतान उसे आदर प्रदान करती है, उसके सेवक और परिचित उसे श्रद्धा से देखते हैं एवं उसकी पत्नी उसे सम्मान देती है और आजीवन वफादार रहती है। बेशक वह स्वयं भी एक दृढ़ एवं पवित्र चरित्र का स्वामी बन जाता है।'

'चौथा बीज 'त' 'तत्त्वमसि' का प्रतिनिधित्व करता है, जिसका अर्थ है वह दिव्य स्थिति, जो कि उच्चतम योगी भी प्राप्त करने के लिए लालायित रहते हैं। तत्त्वमसि का अर्थ है - 'मैं तत्त्व हूं' या 'मैं ही वह हूं'। यह वास्तव में एक आध्यात्मिक चैतन्य स्थिति है, जब साधक पहली बार यह अहसास करता है, कि वह ही सर्वव्याप्त, सर्वकालीन एवं सर्वशक्तिशाली आत्मा है उसमें और परमात्मा (ब्रह्म) में लेश मात्र भी अंतर नहीं है।'

'इस बीज का अनुष्ठान सफलता पूर्वक करने पर व्यक्ति स्वतः ही अध्यात्म की उच्चतम स्थिति पर अवस्थित हो जाता है, यहां तक कि आधिदैविक स्थितियां भी उसके सामने स्पष्ट हो जाती हैं और वह इस बात से अनभिज्ञ नहीं रह जाता, कि वह पूर्ण 'ब्रह्ममय' हैं उसे जो उपलब्धियां और सिद्धियां प्राप्त होती हैं, उसका तुम अनुमान भी नहीं कर सकते और न ही उन्हें शब्दों में ढालना सम्भव है। क्या अव्यक्त को व्यक्त किया जा सकता है? उसको तो केवल स्वयं ऐसी स्थिति प्राप्त कर अनुभव किया जा सकता है। बस तुम्हारे लिए इतना समझना काफी है, कि उससे असीमित शक्तियां प्राप्त हो जाती हैं। अच्छा, पांचवां बीज बोलना जो जरा।'

‘पांचवां बीज... ॐ परम तत्त्वा... ‘वा’...’

‘हां, यह मानव शरीर में व्याम पांच प्रकार की वायु की दशता है, वे हैं - प्राण, अपान, व्यान, समान और उदान। इन पांचों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर ही व्यक्ति क्रिया योग में पारंगत हो पाता है। ‘क्रिया’ का अर्थ उस तकनीक से है, जिसे इस्तेमाल कर व्यक्ति इच्छित परिणाम प्राप्त कर लेता है। क्रिया में मुद्राओं, बंधों एवं आसनों का अभ्यास शामिल है, परन्तु यह एक लम्बी और दुस्साध्य प्रक्रिया है, जिसमें कोई ठोस परिणाम प्राप्त करने में कई वर्ष लग सकते हैं।’

‘परन्तु इस गुरु मंत्र के उच्चारण से, जिसमें क्रिया योग का तत्त्व निहित है, व्यक्ति इस दिशा में महारत हासिल कर सकता है और अपनी इच्छानुसार कितने ही दिनों की समाधि ले सकता है।’

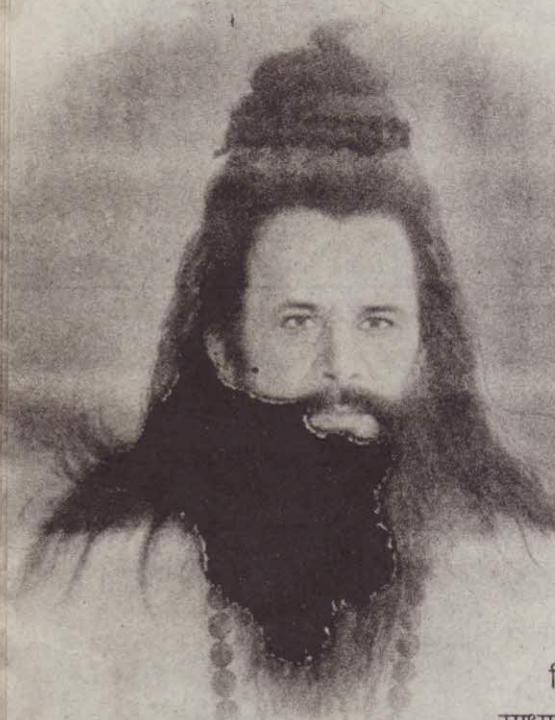
‘इस बीज को साथ लेने से व्यक्ति ‘लोकानुलोक गमन’ की सिद्धि प्राप्त कर लता है और पलक झपकते ही ब्रह्माण्ड के किसी भी लोक में जा कर वापिस आ सकता है। दूसरी उपलब्धि जो उसे प्राप्त होती है, वह है - ‘वर’ अर्थात् वह जो कुछ कहता है, वह निकट भविष्य में सत्य होता ही है। सरल शब्दों में वह किसी को वरदान या श्राप दे सकता है।’

‘परन्तु यह तो एक खतरनाक स्थिति है, क्या आपको ऐसा नहीं लगता? मेरा मतलब है, कि व्यक्ति किसी को भी अवर्णनीय नुकसान पहुंचा सकता है।’

‘अरे बिल्कुल नहीं! क्योंकि इस स्थिति पर पहुंचने पर साधक दया, ममता और मानवीयता के उच्चतम सोपान पर पहुंच जाता है। ऐसे व्यक्ति बिल्कुल लापरवाह नहीं होते और स्वार्थ से कोसों दूर होते हैं। अतः दूसरों को नुकसान पहुंचाने की कल्पना वे स्वप्न में भी नहीं कर सकते। ठीक है न! अब मैं आगे बोलूँ?’

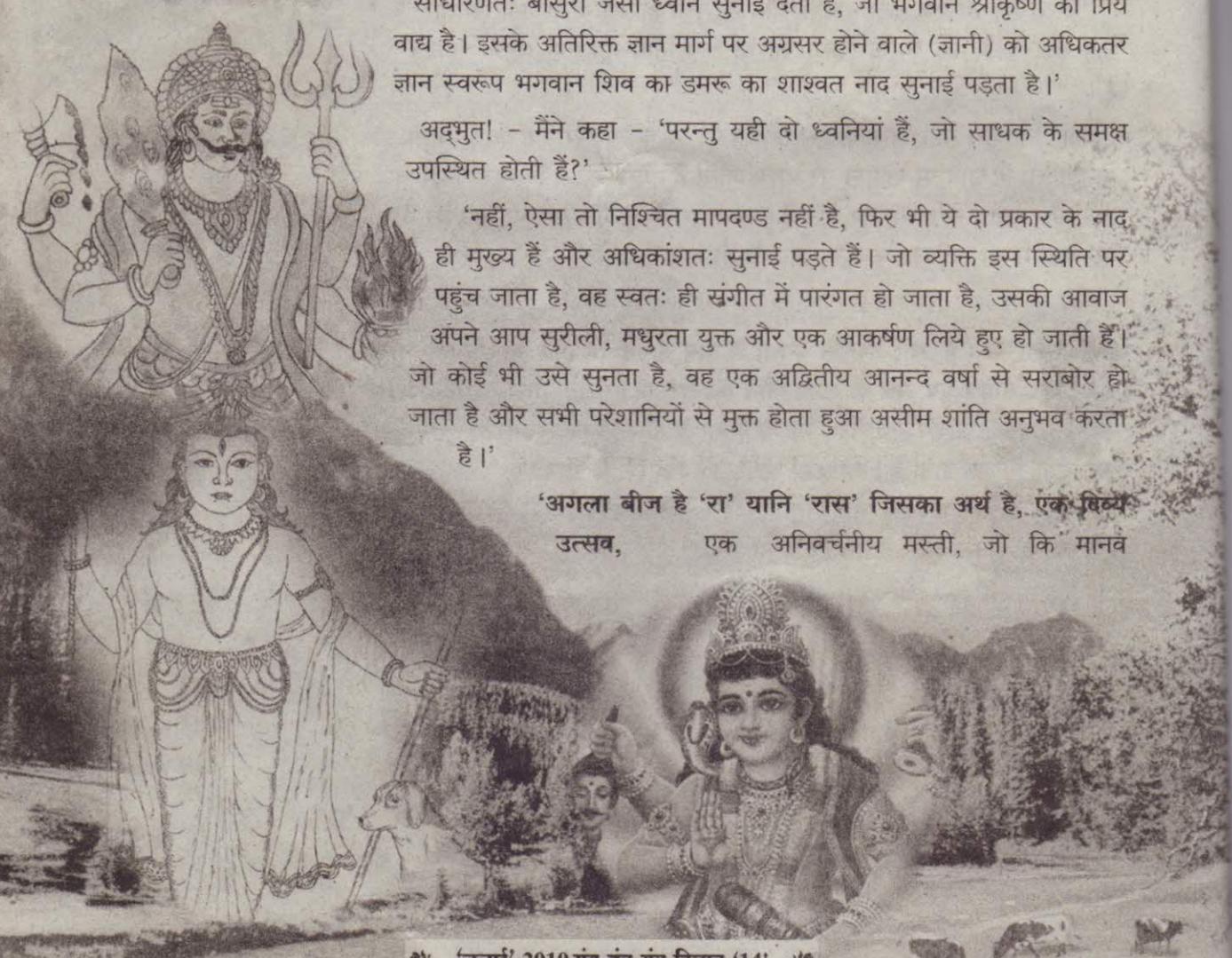
मैंने हां में सिर हिलाया।

‘अगला बीज है ‘य’, जिससे बनता है ‘यम’ (यम-नियम), अर्थात् जीवन को एक सही, पवित्र एवं लय के साथ जीने का तरीका। इसके द्वारा व्यक्ति को एक अद्वितीय, आकर्षक शरीर प्राप्त हो जाता है और उसका व्यक्तित्व कई गुण निखर जाता है। जो कोई भी उसके सम्पर्क में आता है, वह स्वतः ही उसकी ओर आकर्षित हो जाता है और उसकी हर एक बात मानने को तैयार हो जाता है।’



‘एक और महत्वपूर्ण बात यह है, कि ऐसा व्यक्ति ‘यम’ (जो यहां यमराज को इंगित करता है) पर पूर्ण विजय प्राप्त कर लेना है और आश्वस्त हो जाता है, साधारण शब्दों में वह मृत्युञ्जय हो जाता है, अमर हो जाता है, मृत्यु कभी उसका स्पर्श नहीं कर सकती... मुझे एक बेवकूफ की भाँति घूरने की जरूरत नहीं (शायद उसने मेरी आँखों में उभरती संशय की लकीरों को देख लिया था)। गोरखनाथ, वशिष्ठ, हनुमान आदि ने इस उपलब्धि को प्राचीन काल में प्राप्त किया है, यह कोई नवीन स्थिति नहीं।’

वे सत्य ही कह रहे थे।



‘फिर आता है ‘ना’ यानि ‘नाद’, ‘अनहद नाद’ अर्थात् दिव्य संगीत, एक आनन्दमय, शक्तिप्रद गुञ्जरण, जो कि ऐसे व्यक्ति के आत्म में, जो नित्य गुरु मंत्र का जप करता है, गुञ्जरित होता रहता है। यह नाद वास्तव में व्यक्ति की वास्तविकता पर बहुत निर्भर करता है। उदाहरणतः जो व्यक्ति भक्ति के पथ पर कायल हो, उसे साधारणतः बांसुरी जैसी ध्वनि सुनाई देती है, जो भगवान श्रीकृष्ण का प्रिय वाद्य है। इसके अतिरिक्त ज्ञान मार्ग पर अग्रसर होने वाले (ज्ञानी) को अधिकतर ज्ञान स्वरूप भगवान शिव का डमरू का शाश्वत नाद सुनाई पड़ता है।’

अद्भुत! - मैंने कहा - ‘परन्तु यही दो ध्वनियां हैं, जो साधक के समक्ष उपस्थित होती हैं?’

‘नहीं, ऐसा तो निश्चित मापदण्ड नहीं है, फिर भी ये दो प्रकार के नाद ही मुख्य हैं और अधिकांशतः सुनाई पड़ते हैं। जो व्यक्ति इस स्थिति पर पहुंच जाता है, वह स्वतः ही संगीत में पारंगत हो जाता है, उसकी आवाज अपने आप सुरीली, मधुरता युक्त और एक आकर्षण लिये हुए हो जाती हैं। जो कोई भी उसे सुनता है, वह एक अद्वितीय आनन्द वर्षा से सराबोर हो जाता है और सभी परेशानियों से मुक्त होता हुआ असीम शांति अनुभव करता है।’

‘अगला बीज है ‘रा’ यानि ‘रास’ जिसका अर्थ है, एक दिव्य उत्सव, एक अनिवार्य मस्ती, जो कि मानव

जीवन की असली पहचान है। क्या तुम बिना उत्साह, खुशी और जीवन्तता के जीने की कल्पना कर सकते हो? क्या तुम बिना उत्सव और प्रसन्नता के जीवन के विषय में विचार कर सकते हो? नहीं। इसलिए इस बीज मंत्र की मदद से व्यक्ति अपने जीवन में उस तत्त्व को उतार पाने में सफल होता है, जिसके द्वारा उसका सम्पूर्ण जीवन परिवर्तित हो जाता है, दरिद्रता, सम्पन्नता में बदल जाती है, दुःख खुशियों में परिवर्तित हो जाते हैं, शत्रु मित्र बन जाते हैं और असफलताएं सफलताओं में परिवर्तित हो जाती हैं।

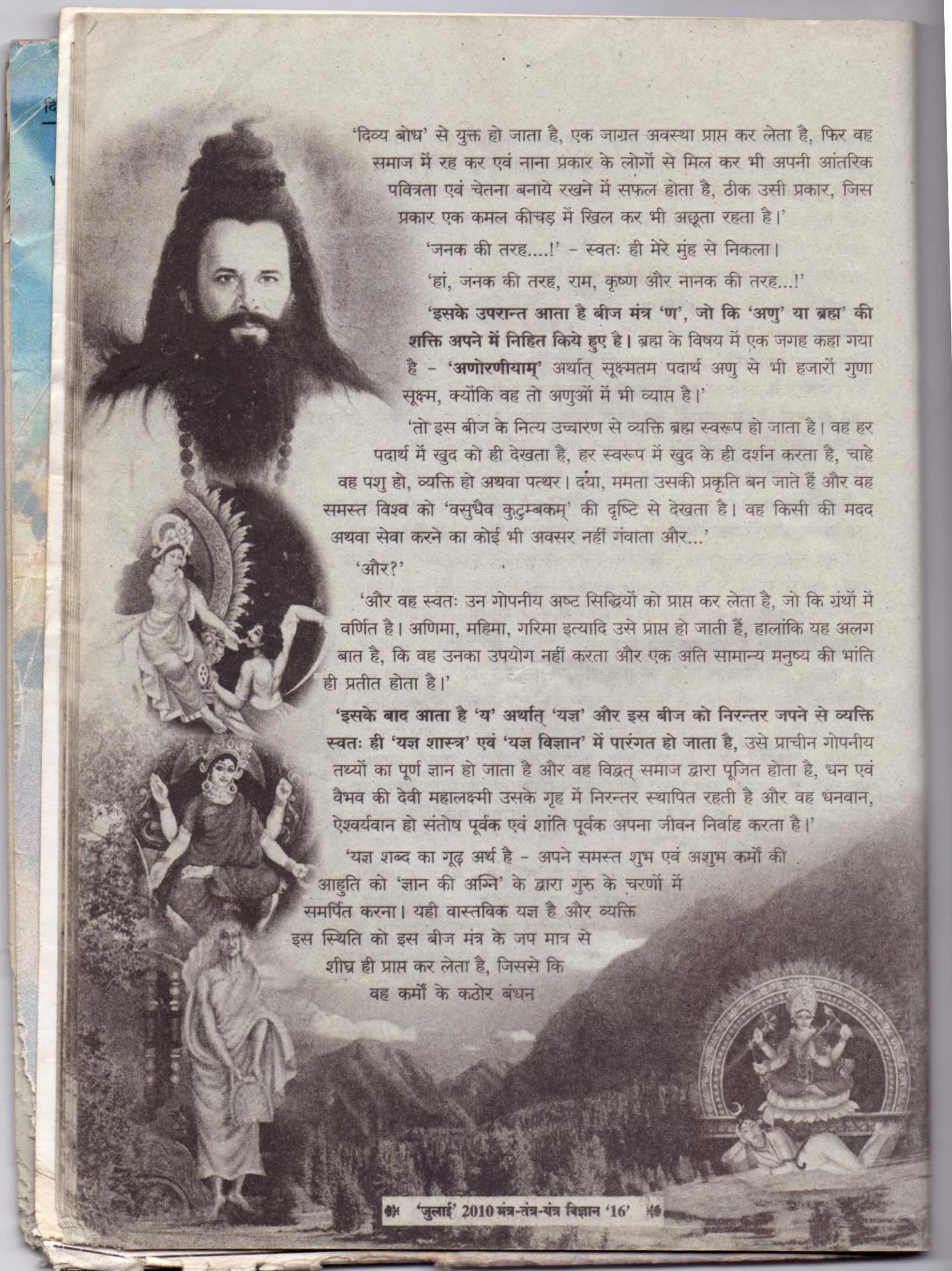
‘यदि इसका सूक्ष्म विवेचन किया जाय, तो यह उस गुप्त प्रक्रिया को दर्शाता है, जो द्वापर में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा गोपियों पर की गई थी। वास्तव में महारास एक ऐसी प्रक्रिया थी, जिसके द्वारा कुण्डलिनी शक्ति को मूलाधार में स्पन्दित कर ऊपर की ओर अग्रसर किया जाता है। इस बीज के अनवरत जप से व्यक्ति सहज ही भाव समाधि में पहुंच जाता है, वह गुरु में लीन हो जाता है और उसकी कुण्डलिनी पूर्णतः जाग्रय हो जाती है, फलस्वरूप सहगमिनी सिद्धियाँ जैसे कि परकाया प्रवेश, जलगमन, अटूट लक्ष्मी एवं असीमित शक्ति व्यक्ति को सहज ही प्राप्त हो जाती है।’

ऐसा कहते-कहते उन्होंने अपना दाहिना हाथ हवा में उठाया और दूसरे ही क्षण उसमें एक केतली और दो गिलास आ गए। केतली में से वाष्प निकल रही थी। आश्चर्य से मेरा मुँह खुला का खुला रह गया और मैं एक विस्मय से उनकी ओर देखता रह गया। उन्होंने केतली में से कोई तरल पदार्थ गिलास में डाला और एक गिलास मेरी ओर बढ़ा दिया। वह पेरिस की मशहूर ‘क्रीम्ड कॉफी’ थी।

‘हां, मैं जानता हूं कि तुम क्या सोच रहे हो?’ - त्रिजटा ने एक चुस्की लेते हुए कहा - ‘पर विश्वास करो, यह कोई असामान्य घटना नहीं है, क्योंकि हर व्यक्ति के अन्दर ऐसी शक्तियाँ निहित हैं, जरूरत है मात्र उनको उभारने की।’

उन्होंने फिर एक चुस्की भरी और तरोताजा हो उन्होंने अपना प्रवचन प्रारम्भ किया - ‘अगला बीज है ‘य’ और इसका तात्पर्य है ‘यथार्थ’ अर्थात् वास्तविकता, सच्चाई, परम सत्य। इस बीज पर मनन करने से व्यक्ति को अपनी न्यूनताओं का भान होता है और वह पहली बार इसके कारण अर्थात् ‘माया’ के स्वरूप को देखता है और जान पाता है।’

‘यदि व्यक्ति नित्य गुरु मंत्र का जप करे, तो वह माया जाल को क्लाइने में सफल हो सकता है जिसमें कि वह जकड़ा हुआ है, स्वतः ही उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और वह



‘दिव्य बोध’ से युक्त हो जाता है, एक जाग्रत अवस्था प्राप्त कर लेता है, फिर वह समाज में रह कर एवं नाना प्रकार के लोगों से मिल कर भी अपनी आंतरिक पवित्रता एवं चेतना बनाये रखने में सफल होता है, ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार एक कमल कीचड़ में खिल कर भी अद्भुत रहता है।

‘जनक की तरह....!’ - स्वतः ही मेरे मुंह से निकला।

‘हां, जनक की तरह, राम, कृष्ण और नानक की तरह....!'

‘इसके उपरान्त आता है बीज मंत्र ‘ण’, जो कि ‘अणु’ या ब्रह्म की शक्ति अपने में निहित किये हुए है। ब्रह्म के विषय में एक जगह कहा गया है - ‘अणोरणीयाम्’ अर्थात् सूक्ष्मतम् पदार्थ अणु से भी हजारों गुणा सूक्ष्म, क्योंकि वह तो अणुओं में भी व्याप्त है।’

‘तो इस बीज के नित्य उच्चारण से व्यक्ति ब्रह्म स्वरूप हो जाता है। वह हर पदार्थ में खुद को ही देखता है, हर स्वरूप में खुद के ही दर्शन करता है, चाहे वह पशु हो, व्यक्ति हो अथवा पत्थर। दैया, ममता उसकी प्रकृति बन जाते हैं और वह समस्त विश्व को ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ की दृष्टि से देखता है। वह किसी की मदद अथवा सेवा करने का कोई भी अवसर नहीं गंवाता और....’

‘और?’

‘और वह स्वतः उन गोपनीय अष्ट सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है, जो कि ग्रंथों में वर्णित है। अणिमा, महिमा, गरिमा इत्यादि उसे प्राप्त हो जाती हैं, हालांकि यह अलग बात है, कि वह उनका उपयोग नहीं करता और एक अति सामान्य मनुष्य की भाँति ही प्रतीत होता है।’

‘इसके बाद आता है ‘य’ अर्थात् ‘यज्ञ’ और इस बीज को निरन्तर जपने से व्यक्ति स्वतः ही ‘यज्ञ शास्त्र’ एवं ‘यज्ञ विज्ञान’ में पारंगत हो जाता है, उसे प्राचीन गोपनीय तथ्यों का पूर्ण ज्ञान हो जाता है और वह विद्वत् समाज द्वारा पूजित होता है, धन एवं वैभव की देवी महालक्ष्मी उसके गृह में निरन्तर स्थापित रहती है और वह धनवान, ऐश्वर्यवान हो संतोष पूर्वक एवं शांति पूर्वक अपना जीवन निर्वाह करता है।’

‘यज्ञ शब्द का गूढ़ अर्थ है - अपने समस्त शुभ एवं अशुभ कर्मों की आहुति को ‘ज्ञान की अग्नि’ के द्वारा गुरु के चरणों में समर्पित करना। यही वास्तविक यज्ञ है और व्यक्ति इस स्थिति को इस बीज मंत्र के जप मात्र से शीघ्र ही प्राप्त कर लेता है, जिससे कि वह कर्मों के कठोर बंधन

से मुक्त हो जन्म-मृत्यु के आवागमन चक्र से भी छूट जाता है।'

'अगला बीज है 'गु' अर्थात् 'गुञ्जरण' और यह व्यक्ति के आंतरिक शरीरों - भू, भवः, स्वः, मह, जनः, तपः, सत्यम् - से उसके चित्त के योग को दर्शाता है। यह अत्यन्त ही उच्च एवं भव्य स्थिति है, जिसे प्राप्त कर वह योगी अन्य योगियों में श्रेष्ठ कहलाता है और 'योगीराज' की उपाधि से विभूषित हो जाता है। ऐसे व्यक्ति की देवता एवं श्रेष्ठ ऋषि भी पूजा करते हैं और उसकी झलक मात्र के लिए लालायित रहते हैं।'

'चूंकि 'गु' गुरु का भी बीज मंत्र है, अतः इसको जपने से व्यक्ति स्वतः ही गुरुमय हो जाता है और गुरु का सारा ज्ञान, शक्तियां एवं तेजस्विता उसके शरीर में उत्तर जाती हैं। वह समस्त विश्व में पूजनीय हो जाता है और इच्छानुसार किसी भी लोक अथवा ग्रह में आ-जा सकता है।'

'परा जगत के लोग एवं ग्रह... तो क्या पृथ्वी के अलावा भी जीवन की स्थिति है?'

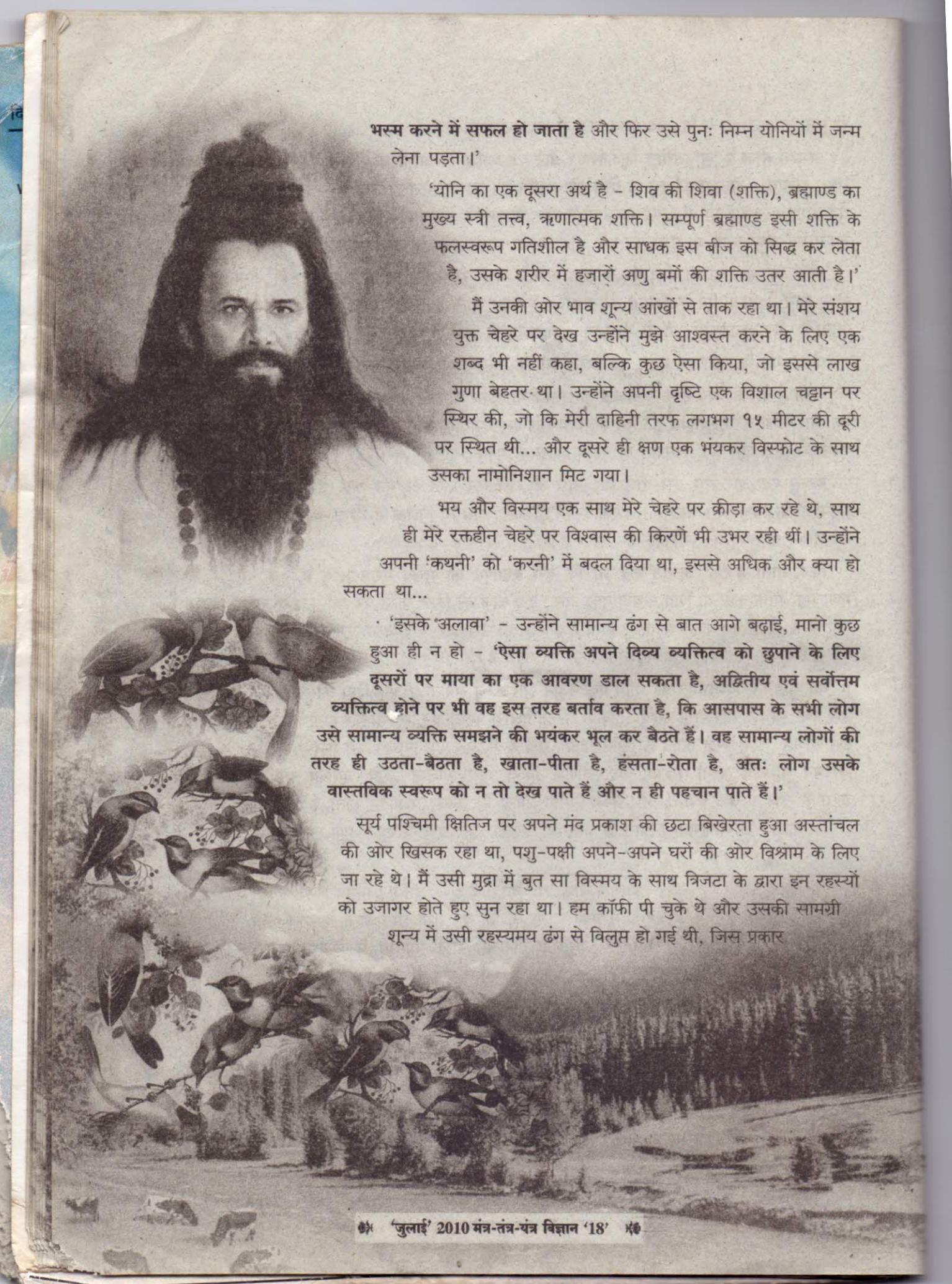
'कैसा मूर्खों का प्रश्न है?' - त्रिजटा कुछ उत्तेजित होकर बोले - 'क्या तुम सोचते हो, कि मात्र पृथ्वी पर ही जीवन है? तुम लोग अहं से इतने पीड़ित हो, कि अपने आपको ही 'भगवान द्वारा चुने गए' समझते हो' - वे व्यंग्य से मुस्कुराये।

'परन्तु एक बार तुम इस बीज को साध लो, तो तुम कोई अद्भुत और अनसुनी घटनाओं के साक्षी बन जाओगे। बेशक देर से ही सही, अब तो विज्ञान ने भी अन्य लोकों पर जीवन के तथ्य को स्वीकार कर लिया है।'

'फिर आता है 'रु' अर्थात् रुद्र जो कि इस ब्रह्माण्ड का मुख्य पुरुष तत्त्व है, उसे चाहे गुणात्मक शक्ति कहो या शिव अथवा कुछ और। इस बीज को सिद्ध करने पर व्यक्ति कभी वृद्ध नहीं होता, न ही वह काल-कवलित होता है और न ही उसे बार-बार जन्म लेना पड़ता है। वह सर्वव्यापी, सर्वज्ञाता एवं सर्वशक्तिशाली हो जाता है।'

'वह चाहे, तो विश्वामित्र की भाँति एक नवीन सृष्टि रच सकता है और शिव की तरह उसे नष्ट भी कर सकता है सम्पूर्ण प्रकृति उसके इशारों पर नृत्य करती प्रतीत होती है। उसे भोजन, जल, निद्रा आदि की आवश्यकता नहीं होती, परिणाम स्वरूप उसे मल-मूत्र विसर्जन भी नहीं करना पड़ता। एक स्वर्णिम, दिव्य आभा मण्डल उसके चतुर्दिक् बन जाता है और प्रत्येक व्यक्ति, जो उसके समीप आता है, उससे प्रभावित होता है और उसका भी आध्यात्मिक उत्थान हो जाता है, उसकी सारी इच्छाएं स्वतः पूर्ण हो जाती हैं।'

'अगले बीज 'यो' का अर्थ है - 'योनि'। मानव जन्म के विषय में कहा जाता है, कि यह तभी प्राप्त होता है, जब जीव विभिन्न चौरासी लाख योनियों में विचरण कर लेता है, परन्तु इस बीज के दिव्य प्रभाव से व्यक्ति अपनी समस्त पाप राशि को



भ्रम करने में सफल हो जाता है और फिर उसे पुनः निम्न योनियों में जन्म लेना पड़ता।'

'योनि का एक दूसरा अर्थ है - शिव की शिवा (शक्ति), ब्रह्माण्ड का मुख्य स्त्री तत्त्व, ऋणात्मक शक्ति। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड इसी शक्ति के फलस्वरूप गतिशील है और साधक इस बीज को सिद्ध कर लेता है, उसके शरीर में हजारों अणु बर्मों की शक्ति उत्तर आती है।'

मैं उनकी ओर भाव शून्य आंखों से ताक रहा था। मेरे संशय युक्त चेहरे पर देख उन्होंने मुझे आश्वस्त करने के लिए एक शब्द भी नहीं कहा, बल्कि कुछ ऐसा किया, जो इससे लाख गुण बेहतर था। उन्होंने अपनी दृष्टि एक विशाल चट्ठान पर स्थिर की, जो कि मेरी दाहिनी तरफ लगभग १५ मीटर की दूरी पर स्थित थी... और दूसरे ही क्षण एक भयंकर विस्फोट के साथ उसका नामोनिशान मिट गया।

भय और विस्मय एक साथ मेरे चेहरे पर कीड़ा कर रहे थे, साथ ही मेरे रक्तहीन चेहरे पर विश्वास की किरणें भी उभर रही थीं। उन्होंने अपनी 'कथनी' को 'करनी' में बदल दिया था, इससे अधिक और क्या हो सकता था...

• 'इसके "अलावा" - उन्होंने सामान्य ढंग से बात आगे बढ़ाई, मानो कुछ हुआ ही न हो - 'ऐसा व्यक्ति अपने दिव्य व्यक्तित्व को छुपाने के लिए दूसरों पर माया का एक आवरण डाल सकता है, अद्वितीय एवं सर्वोत्तम व्यक्तित्व होने पर भी वह इस तरह बर्ताव करता है, कि आसपास के सभी लोग उसे सामान्य व्यक्ति समझने की भयंकर भूल कर बैठते हैं। वह सामान्य लोगों की तरह ही उठता-बैठता है, खाता-पीता है, हँसता-रोता है, अतः लोग उसके वास्तविक स्वरूप को न तो देख पाते हैं और न ही पहचान पाते हैं।'

सूर्य पश्चिमी क्षितिज पर अपने मंद प्रकाश की छटा बिखेरता हुआ अस्तांचल की ओर खिसक रहा था, पशु-पक्षी अपने-अपने घरों की ओर विश्राम के लिए जा रहे थे। मैं उसी मुद्रा में बुत सा विस्मय के साथ त्रिजटा के द्वारा इन रहस्यों को उजागर होते हुए सुन रहा था। हम कौफी पी चुके थे और उसकी सामग्री शून्य में उसी रहस्यमय ढंग से विलुप्त हो गई थी, जिस प्रकार

से आई थी। मैं सोच रहा था, कि गुरु मंत्र में कितनी सारी गूढ़ सम्भावनाएं छुपी हुई हैं और मैं अज्ञानियों की भाँति तथाकथित श्रेणी की छोटी-मोटी साधनाओं के पीछे पड़ा हूं। मैं यही सब सोच रहा था, जब त्रिजटा की किञ्चित् तेज आवाज ने मेरे विचार-क्रम को भंग कर दिया।

‘मैं देख रहा हूं, कि तुम ध्यान पूर्वक नहीं सुन रहे हो’ - त्रिजटा कह रहे थे, उसके शब्द क्रोधयुक्त थे - ‘और यदि यही तुम्हारा व्यवहार है, तो मैं आगे एक शब्द भी नहीं कहूंगा।’

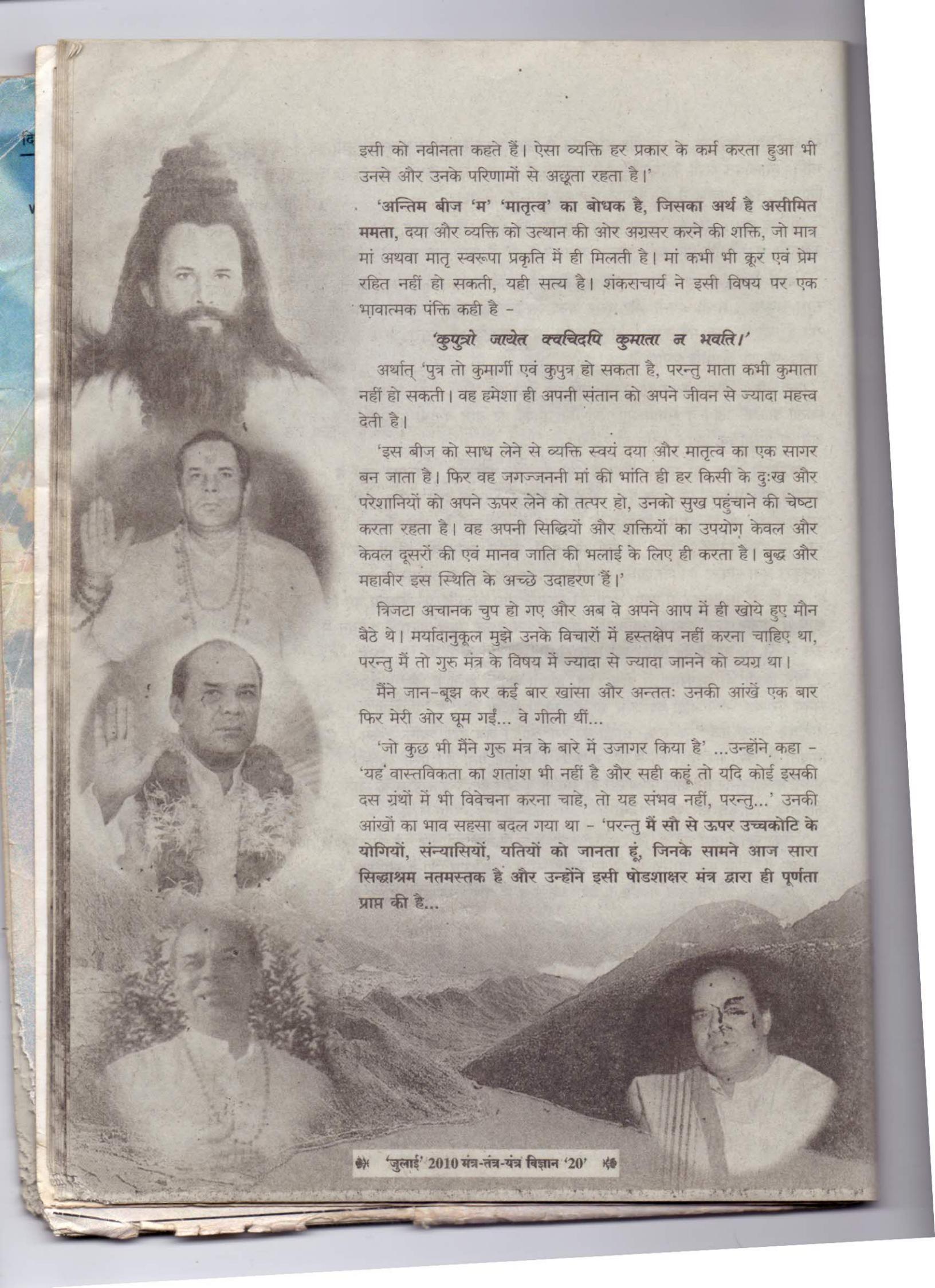
‘ओह! नहीं... मैं तो स्वप्न में भी आपकी या आपके प्रवचन की उपेक्षा करने की नहीं सोच सकता... मैं तो अपनी और दूसरे अन्य साधकों की न्यून मानसिकता पर तरस खा रहा हूं, जो कि गुरु मंत्र रूपी ‘कौस्तुभ मणि’ प्राप्त कर के भी दूसरी अन्य साधनाओं के कंकड़-पत्थरों के पीछे पागल हैं...’

एक अनिवार्यनीय मुस्कुराहट उनके होठों पर फैल गई और उनकी आँखों में संतोष की किरणें झलक उठीं। वे समझ गए, कि मैंने उनकी हर बात बखूबी हृदयंगम कर ली है, अतः वे अत्यधिक प्रसन्न प्रतीत हो रहे थे।

‘आखिरी शब्द का पहला बीज है ‘न’ अर्थात् ‘नवीनता’, जिसका अर्थ है - एक नयापन, एक नूतनता और एक ऐसी अद्वितीय क्षमता, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने आपको अथवा दूसरों को भी समय की मांग के अनुसार ढाल सकता है, बदल सकता है या चाहे तो ठीक इसके विपरीत भी कर सकता है अर्थात् समय को अपनी मांगों के अनुकूल बना सकता है। जो व्यक्ति इस बीज को पूर्णता के साथ आत्मसात् कर लेता है, वह किसी भी समाज में जाए, वहां उसे सम्मान प्राप्त होता है, फलस्वरूप वह हर कार्य में सफल होता हुआ शीघ्रातिशीघ्र शीर्षस्थ स्थान पर पहुंच जाता है, जीवन में उसे किसी भी प्रकार की कोई कमी महसूस नहीं होती।’

‘वह किसी भी व्यवसाय में हाथ डाले, हमेशा सफल होता है और समय-समय पर वह अपने बाह्य व्यक्तित्व को बदलने में सक्षम होता है, उदाहरण के तौर पर अपना कद, रंग-रूप, आँखों का रंग आदि। जब कोई व्यक्ति उससे मिलता है, हर बार वह एक नवीन स्वरूप में दिखाई देता है। ऐसा व्यक्ति अपनी इच्छानुसार हर क्षण परिवर्तित हो सकता है और अपने आसपास के लोगों को आश्चर्यचकित कर सकता है।’

‘इसका सूक्ष्म अर्थ यह है, कि उसका कोई भी व्यक्तित्व इतनी देर तक ही रहता है, कि वह इच्छाओं एवं विभिन्न पाशों में जकड़ा जाये। हर क्षण पुराना व्यक्तित्व नष्ट होकर एक नवीन, पवित्र, व्यक्तित्व में परिवर्तित होता रहता है।



इसी को नवीनता कहते हैं। ऐसा व्यक्ति हर प्रकार के कर्म करता हुआ भी उनसे और उनके परिणामों से अद्यूता रहता है।

‘अन्तिम बीज ‘म’ ‘मातृत्व’ का बोधक है, जिसका अर्थ है असीमित ममता, दया और व्यक्ति को उत्थान की ओर अग्रसर करने की शक्ति, जो मात्र मां अथवा मातृ स्वरूपा प्रकृति में ही मिलती है। मां कभी भी क्रूर एवं प्रेम रहित नहीं हो सकती, यही सत्य है। शंकराचार्य ने इसी विषय पर एक भावात्मक पंक्ति कही है -

‘कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति।’

अर्थात् ‘पुत्र तो कुमार्गी एवं कुपुत्र हो सकता है, परन्तु माता कभी कुमाता नहीं हो सकती। वह हमेशा ही अपनी संतान को अपने जीवन से ज्यादा महत्व देती है।

‘इस बीज को साध लेने से व्यक्ति स्वयं दया और मातृत्व का एक सागर बन जाता है। फिर वह जगज्जननी मां की भाँति ही हर किसी के दुःख और परेशानियों को अपने ऊपर लेने को तत्पर हो, उनको सुख पहुंचाने की चेष्टा करता रहता है। वह अपनी सिद्धियों और शक्तियों का उपयोग केवल और केवल दूसरों की एवं मानव जाति की भलाई के लिए ही करता है। बुद्ध और महावीर इस स्थिति के अच्छे उदाहरण हैं।’

त्रिजटा अचानक चुप हो गए और अब वे अपने आप में ही खोये हुए मौन बैठे थे। मर्यादानुकूल मुझे उनके विचारों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए था, परन्तु मैं तो गुरु मंत्र के विषय में ज्यादा से ज्यादा जानने को व्यग्र था।

मैंने जान-बूझ कर कई बार खांसा और अन्ततः उनकी आंखें एक बार फिर मेरी ओर घूम गई... वे गीली थीं...

‘जो कुछ भी मैंने गुरु मंत्र के बारे में उजागर किया है’ ...उन्होंने कहा - ‘यह वास्तविकता का शतांश भी नहीं है और सही कहूं तो यदि कोई इसकी दस ग्रंथों में भी विवेचना करना चाहे, तो यह संभव नहीं, परन्तु...’ उनकी आंखों का भाव सहसा बदल गया था - ‘परन्तु मैं सौ से ऊपर उच्चकोटि के योगियों, संन्यासियों, यतियों को जानता हूं, जिनके सामने आज सारा सिद्धाश्रम नतमस्तक है और उन्होंने इसी षोडशाक्षर मंत्र द्वारा ही पूर्णता प्राप्त की है...

‘कई गृहस्थों ने इसी के द्वारा जीवन में सफलता और सम्पन्नता की ऊँचाइयों को छुआ है। औरों की क्या कहूँ स्वयं मैंने भी ‘परकाया प्रवेश सिद्धि’ और ‘ब्रह्माण्ड स्वरूप सिद्धि’ इसी मंत्र के द्वारा प्राप्त की है...’

उनकी विशाल देह में भावों के आवेग उमड़ रहे थे। वे किसी खोये हुए बालक की भाँति प्रतीत हो रहे थे, जो अपनी मां को पुकार रहा हो, प्रेमाश्रु उनके चेहरे पर अनवरत बह रहे थे, जबकि उनके नेत्र उगते हुए चन्द्र की ज्योत्सना पर लगे हुए थे।

‘तुम इस व्यक्तित्व की अमूल्यता की कल्पना भी नहीं कर सकते, जिसका मंत्र तुम सबको देवताओं की श्रेणी में पहुंचाने में सक्षम है।’

‘श्री सार्थक्यं नारायणः’

- ‘वे तुम्हें सब कुछ खेल-खेल में प्रदान कर सकते हैं। अभी भी समय है, कंकड़-पत्थरों को छोड़ो और शीधे जगमगाते हीरक खण्ड को प्राप्त कर लो।’

ऐसा कहते-कहते उन्होंने मेरी ओर एक छटा युक्त रुद्राक्ष एवं स्फटिक की माला उछाली और तीव्र गति से एक चट्ठान के पीछे पूर्ण भक्ति भाव से उच्चरित करते हुए चले गए -

नमस्ते पुरुषाध्यक्षं नमस्ते भत्तवत्सलं
नमस्तेऽस्तु ऋषीकेशं नारायणं नमोऽस्तुते॥

बिजली की तीव्रता के साथ मैं उठा और त्रिजटा के पीछे भाग... परन्तु चट्ठान के पीछे कोई भी न था... केवल शीतल पवन तीव्र वेग से बहता हुआ मेरे केश उड़ा रहा था। वे वायु में ही विलीन हो गए थे। मैंने मन ही मन उस निष्काम दिव्य मानव को श्रद्धा से प्रणिपात किया, जिसने गुरु मंत्र के विषय में गूढ़तम रहस्य मेरे सामने स्पष्ट कर दिये थे।

...तभी अचानक मेरी दृष्टि नीचे अंधकार से ग्रसित घाटी पर गई, ऊपर शून्य में ‘निखिल’ (संस्कृत में पूर्ण चन्द्र को ‘निखिल’ भी कहते हैं) अपने पूर्ण यौवन के साथ जगमगा कर चातुर्दिक् प्रकाश फैला रहा था और ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो सारा वायुमण्डल, सारी प्रकृति उस दिव्य श्लोक के नाद से गुञ्जरित हो रही हो -

नमस्ते पुरुषाध्यक्षं नमस्ते भत्तवत्सलं
नमस्तेऽस्तु ऋषीकेशं नारायणं नमोऽस्तुते॥

(त्रिजटा अधोरी की एक शिष्य से वार्तालाप के कुछ अंश)

त्रिजटा अधोरी कई शिष्यों से मिलते हैं और उन्होंने सद्गुरु से सम्बन्धित कई गुढ़ रहस्यों, साधनात्मक रहस्यों का विवेचन किया है, उन्हें आगे प्रकाशित किया जाएगा।



वार्षिक सदस्यता



गणपति यंत्र

भगवान गणेश कभी देवताओं में प्रथम पूज्य देव हैं। इनके बिना और्ड भी आर्य, और्ड भी पूजा अधूरी ही मानी जाती है। कमक्षत विघ्नों का नाश करने वाले विघ्नविनाशक गणेश की यदि काधक पव रूप ऐनी कहे, तो उसके घर में ऋद्धि-क्षिद्धि, जो कि गणेश जी की पत्नियाँ हैं, और शुभ-लाभ जो कि उनके पुत्र हैं, एक भी स्थायित्व होता है। ऐसा होने के काधक के घर में कुख्य, कौशल, क्षमता, मंगल, उज्ज्ञाति, प्रगति एवं कमक्षत शुभ आर्य होते ही कहते हैं। इस प्रकाक एक यंत्र अपने आप में भगवान गणपति का प्रतीक है, और इस प्रकाक एक यंत्र प्रत्येक काधक के पूजा स्थान में स्थापित होना ही चाहिए। आद में यदि किसी भी प्रकाक एक काधना के पूर्व गणपति पूजन करना हो, तो इसी यंत्र एक कांक्षिक पूजन कर लेना होता है। इस यंत्र एक नित्य धूप आदि कमर्चित करने की भी आवश्यकता नहीं है। मात्र इसके प्रभाव के ही घर में प्रगति, उज्ज्ञाति की क्षिति होने लगती है। घर में इस यंत्र एक होना ही भगवान गणपति की रूपा एक द्योतक है, कुख्य, कौशल, शान्ति एक प्रतीक है।

स्थापन विधि - इस यंत्र को प्राप्त कर गणपति चित्र के सामने हाथ जोड़कर 'जं गणपतये नमः' का मात्र दस मिनट जप करें और गणपति से पूजा स्थान में यंत्र रूप में निवास करने की प्रार्थना करें। इसके पश्चात् यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें। अनुकूलता हेतु नित्य यंत्र के समक्ष हाथ जोड़कर नमस्कार कर दें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

**वार्षिक सदस्यता शुल्क - 258/- + 45/- डाक खर्च = 303/-, Annual Subscription 258/- + 45/- postage = 303/-
Fill up and send post card no. 4 to us at :**

-: सम्पर्क :-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342031, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342031, (Raj.), India

फोन (Phone) .0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स (Telefax) .0291-2432010

सुद्धारु लक्ष्मेव उपने शिष्यों का उत्थान करते हैं

गुरु ही परम तत्व है

गुरु की शरण में ही कल्याण है

गुरु परम दैवतम्

गुरु की महिमा महाबता
की विषष्ट कविता वह आलेक्ष्मि -

गुरु गीता श्लोकों के अनुसार गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु ही विष्णु हैं और गुरु ही शिव हैं, इनसे भी बढ़कर गुरु ही साक्षात् परब्रह्म हैं। यदि हम अपने देश के प्राचीन इतिहास को देखें, तो हमें पता चलेगा, कि हमारा देश सारे संसार में दूध की नदियां भी बहती थीं। कहने का तात्पर्य यह, कि समय देश धन-धान्य एवं सुख-समृद्धि से परिपूर्ण था। किन्तु इसके विपरीत आज वही देश कराह रहा है, भ्रष्टाचार और घोटालों का बोलबाला है, विदेशी कृष्ण के भार तले हम दबते-पिसते चले जा रहे हैं। दूध तो छोड़िये, जनता बिजली-पानी के लिए भी तरस रही है।

आखिर, आज के भारत और प्राचीन भारत में इतना अन्तर कैसे? आखिर कहां गया वह देश, जो 'सोने की चिड़िया' के नाम से जाना जाता था? कैसे सूख गयी उसकी दूध की नदियां? आखिर क्या कारण है हमारी इस गरीबी का, इस दरिद्रता का और इतने विषमतापूर्ण जीवन का? यदि हम इसकी गहराई में प्रवेश करें, तो हमें पता चलेगा, कि प्राचीन भारत में गुरुओं और ऋषियों की प्रतिष्ठा थी, उन्हें पूजा जाता था, बिना उनकी आज्ञा के, बिना उनकी कृपा के कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं होता था। उस समय गुरु-शिष्य परम्परा का स्वस्थ निर्वहन होता था, 'गुरुः परम दैवतम्' की

समाज में, देश में पूर्ण अवधारणा थी।

...और आज हमने, हमारे समाज ने, हमारे देश ने उपर्युक्त सभी अवधारणाओं को भुला दिया है। हमने अपने धर्म, अपनी पुरातन संस्कृति एवं गुरुओं और ऋषियों को विस्मृत कर दिया है। हमने मानसरोवर का परित्याग कर अपने को महज कंकड़-पत्थरों के बीच ही सीमित कर लिया है, हमें गुरुओं और ऋषियों से कोई सरोकार नहीं रहा... और यही सर्व प्रमुख कारण है हमारे इस अधःपतन का, हमारी इस दयनीय स्थिति का। इसीलिए हमें बूँद-बूँद पानी के लिए तरसना पड़ रहा है।

यदि वास्तव में हम इस विषम परिस्थिति से उबरना चाहते हैं, तो हमें गुरुओं और ऋषियों के चरणों को पकड़ना होगा, उनके चरणों में साष्टांग प्रणिपात होना होगा, क्योंकि गुरु की शरण के बिना कल्याण सम्भव नहीं है। हमें 'गुरुः परम दैवतम्' भावना की पुरनस्थापना करनी होगी, हमें 'सद्गुरु' की शरण लेनी होगी। 'प्राचीन भारतीय विद्याओं के सिद्ध आचार्य पूज्य सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी, निखिलेश्वरानंद जी ऐसे ही प्रकाश पुंज हैं, जो प्राणी मात्र का कल्याण करने के लिए, उसे उसके मूल स्वरूप का बोध करने के लिए तथा इस आर्यावर्त को ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान और चेतना से आप्लावित करने के लिए इस धरा पर अवतरित हुए हैं...'।

(मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, जनवरी - 1997)

वास्तव में हम विनाश के उस कगार पर खड़े हैं, जहां जरा सी असावधानी हमें कहां ले जा पटके, पता नहीं। जगह-जगह बास्तु सुरंगे बिछी हुई हैं, सिर्फ पलीते में आग लगनी शेष है। ऐसी भीषण एवं भयावह स्थिति से बचने के लिए एक ही उपाय है - 'सद्गुरु' की शरण। बिना गुरु-कृपा प्राप्त किये कुछ भी संभव नहीं। हमें आलोचना-प्रत्यालोचना छोड़नी होगी। कहीं चांद पर थूकने से चांद गंदा होता है?

गुरु अवतरित होते हैं, इस रसातल में जा रहे विश्व, देश, समाज को उबारने के लिए, उसके कल्याण के लिए। शिष्यों का कल्याण ही उनका प्रमुख लक्ष्य होता है। जिस प्रकार वृक्ष स्वयं अपना फल नहीं खाते और न ही नदी स्वयं अपना जल पीती है, उसी प्रकार सद्गुरु भी संसार को हमेशा कुछ न कुछ देते ही रहते हैं, उससे कुछ भी लेते नहीं। इसीलिए सद्गुरु को 'गुरुः परम दैवतम्' कहा गया है।

वृक्ष कबहु नहि फल धरै, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारने साधुन धरा शरीर॥

मीरा, सूर, तुलसी एवं कबीर पढ़े-लिखे तो थे नहीं, किन्तु उन्होंने ऐसे सशक्त गुरु एवं परब्रह्म का हाथ पकड़ा और उस मस्ती में, उस खुमारी में उनके मुंह से जो कुछ भी निकला,

गुरुक अवतरित होते हैं, इक्स क्षमातल में जा वहे विश्व, देश, समाज को उल्लासने के लिए, उक्सके कल्याण के लिए। शिष्यों का कल्याण ही उनका प्रमुख लक्ष्य होता है। जिस प्रकार वृक्ष क्षयं अपना फल नहीं खाते और न ही नदी क्षयं अपना जल पीती है, उसी प्रकार वस्तुवुक भी क्षमाक को हमेशा कुछ न कुछ देते ही रहते हैं, उससे कुछ भी लेते नहीं। इसीलिए वस्तुवुक को 'गुरुः परम दैवतम्' कहा गया है।

गुरु जीवन का सर्वस्व हैं,
पूर्णत्व का आधार हैं, श्रेष्ठता का प्रतिस्तप हैं, आकाश से श्री ब्रह्मन्त और पृथ्वी से श्री विशाल उनकी महिमा है और जिसके जीवन में गुरु स्थापित हो जाते हैं, जिसके रक्त के कण-कण में गुरु की प्रतिस्थापना हो जाती है, उसका जीवन धन्य हो जाता है, उसे जीवन में पूर्णता और सफलता प्राप्त हो जाती है और किसी प्रकार की व्युत्पत्ता, तुच्छता नहीं रह पाती...

वह धर्म एवं साहित्य की अनमोल धरोहर बन गया। आज भी बड़े-बड़े विद्वान् उनके ऊपर शोध-कार्य कर रहे हैं और कितने ही डी.लिट. एवं पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। यह सब उन्हीं 'गुरुः परम दैवतम्' की ही कृपा से सुफल है।

'सद्गुरु' को पाने के लिए हमें 'एकलव्य' बनना होगा, उसी की ही भाँति हमें पूर्ण श्रद्धा, आस्था, विश्वास के साथ सद्गुरु के चरणों में आत्म समर्पित होना होगा। एकलव्य की निष्ठा, उसकी गुरु-भक्ति देखिए - गुरु से तिरस्कृत होने पर भी गुरु-प्रतिमा बना कर, उसके सामने बैठ कर उसने धनुर्विद्या सीखी, सीखी ही नहीं, उसमें महारत भी हासिल की और फिर गुरु-दक्षिणा में अपने दाएं हाथ का अंगूठा काट कर गुरु-चरणों में समर्पित कर दिया। इस प्रकार उसने हमेशा-हमेशा के लिए गुरु-शिष्यों के बीच अपने को अमर कर दिया। यही समर्पण, यही प्रेम, यही उत्सर्ग आज पूज्य गुरुदेव अपने शिष्यों से आह्वान कर, मांग रहे हैं। बन जाइए एकलव्य और उत्सर्ग कर दीजिए अपने को पूज्य गुरुदेव के चरणों में, फिर देखिए इस 'गुरुः परम दैवतम्' के इन्द्रधनुषी एवं वात्सल्यमयी स्वरूप को।

अङ्गान तिमिरान्धस्य ज्ञानाय्यन शलाकया।
चक्रुलन्मीलितं येज तस्मै श्री गुरवे नमः॥

जिस प्रकार सूर्य का कार्य सम्पूर्ण चराचर को आलोकित करना है, उसी प्रकार सद्गुरु भी निरन्तर समाज के, शिष्य के अन्धकार (अज्ञानता) का विनाश कर अपने ज्ञान से उसे

प्रकाशित करते रहते हैं। सद्गुरु सदैव अपने शिष्यों के उत्थान की ही बात सोचते हैं। इसीलिए गुरु ही साक्षात् परब्रह्म हैं - 'सही अर्थों में आप पूर्ण ब्रह्म स्वरूप हैं,... सही अर्थों में आप शंकराचार्य हैं, सही अर्थों में आप ब्रह्मा और विष्णु हैं, सही अर्थों में आप जगद्गुरु हैं। मैं आपके सभी स्वरूपों को नतमस्तक होता हुआ प्रणाम करता हूँ, कि आप हमें जीवन का सौभाग्य, जीवन का आनन्द, जीवन की पूर्णता दें।'

(गुरु गीता, श्लोक 59)

'किसी न किसी जीवन में कभी न कभी तुमसे जरूर वायदा किया होगा, कि मैं तुम्हें अमृतत्व का पान कराऊंगा... और इसी वायदे को निभाने के लिए मैं इस धरती पर आया हूँ... और आवाज दे रहा हूँ तुम्हें अपने पास बुलाने के लिए, कि जिससे मेरे द्वारा किया गया वायदा पूरा हो सके।'

-पूज्य गुरुदेव (मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, नवम्बर 1993)

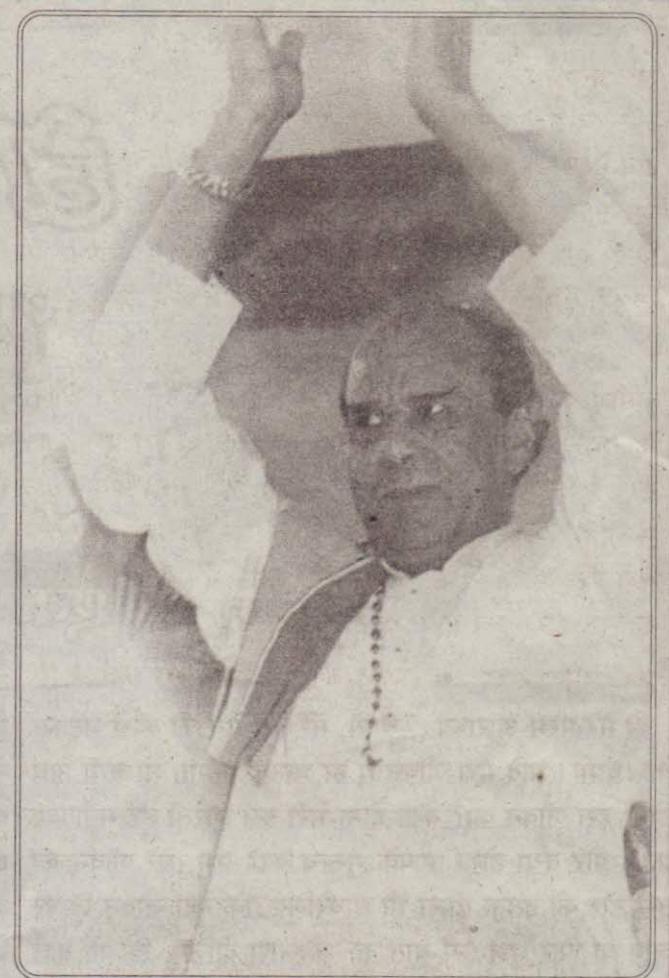
ये शब्द किसी और के नहीं, अपितु मेरे प्रभु, मेरे आराध्य, मेरे प्राण, मेरे सर्वस्व पूज्य सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी निखिलेश्वरानन्द जी के हैं, जिनके विषय में कुछ भी लिखना, कुछ भी कहना सूरज को दीपक दिखलाने जैसा है। मेरे लिए तो क्या, सम्पूर्ण प्राणी मात्र के लिए उनका शिष्यत्व ग्रहण करना गर्व की बात है। आज की दुनिया में वे सद्गुरु हैं, वे 'गुरुः परम दैवतम्' हैं।

यह आह्वान है पूज्य गुरुदेव का, सद्गुरु का, 'गुरुः परम दैवतम्' का आपके भाग्य को हीरे की कलम से तराशने के लिए, आपको आवागमन के चक्र से मुक्त करने के लिए, आपके अज्ञान को नष्ट करने के लिए। यदि इस पर भी आप नहीं जागते, प्रमाद नहीं त्यागते, तो फिर यह आपका दुर्भाग्य है।

लंकापति रावण जैसा ज्ञानी दूसरा कोई नहीं था, किन्तु अपने जीवन के संध्या काल में वह भी बुद्धि-विभ्रम से ग्रस्त हो गया था, तभी तो मन्दोदरी उसके सामने जब राम के शौर्य का गुणगान कर रही थी, तो वह उसे अपना शौर्य समझ कर प्रसन्न हो रहा था। तुलसी दास ने 'रामचरित मानस' में लिखा है -

काल दण्ड जहि काहु न मारा/
हरै धर्म बल बुद्धि विचार॥

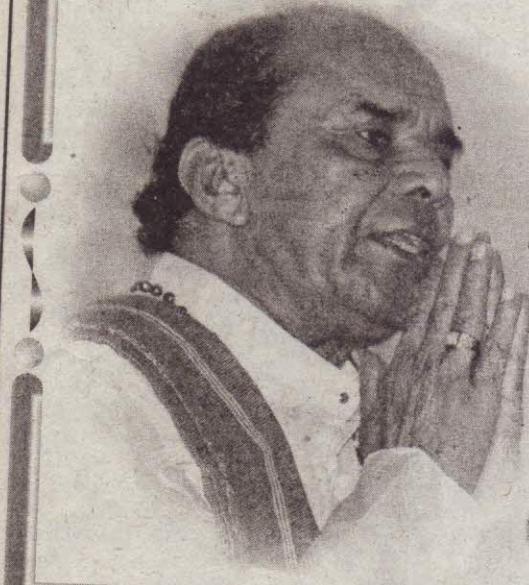
काल कभी भी सीधे प्रहार नहीं करता, वह पहले व्यक्ति के धर्म, बुद्धि, बल का हरण कर लेता है। रावण का अन्त भी धर्मच्युत होने से, बुद्धि-भ्रम से ही हुआ। मैं अपने आलोचक बंधुओं से भी विनम्र निवेदन करूँगा, कि वे अपनी इस प्रवृत्ति



का परित्याग कर दें। हमारे सद्गुरु तो विषपायी हैं, वे आपके इस जहर को भी हँसते हुए पी लेंगे, किन्तु जरा सोचें, आपको इससे क्या मिलेगा? आप भी बुद्धि-विभ्रम के रोगी हैं और बुद्धि-विभ्रम के रोगी की स्थिति सन्निपात के रोगी जैसी हो जाती है। जैसे सन्निपात का रोगी तीव्र ज्वर में अंट-शंट बकता है, उसी तरह आप भी झूठे ज्ञान के अहं में अंट-शंट बक रहे हैं... लेकिन रावण के अन्त से तो आप भली-भांति परिचित हैं ही।

क्यों इन कंकड़-पत्थरों के बीच रहकर अपना सिर फोड़ रहे हैं, क्यों मानसरोवर के पास होकर भी उससे विमुख हैं, क्यों मिथ्या अहं, भ्रष्टाचार भरे जीवन को जीने में मस्त हैं, क्यों अपने स्वर्ण के समान जीवन को रांगा, पीतल बनाने में लगे हैं? छोड़ दीजिए छल-कपट, जागिये! प्रमाद छोड़िये, देखिये, पूज्य गुरुदेव आपको बुला रहे हैं - 'मैं तुम्हारे पंखों में गति दूंगा और निरभ्र आकाश में सुदूर ऊँचाई पर उड़ने की जानकारी दूंगा... तुम्हारे सारे दुःख, दर्द, दैन्य, अभाव, विषमता और कष्ट मिटा कर तुम्हें पूर्णता दूंगा।'

- सद्गुरुदेव



है! निश्चिल कृत्वक!

आप माली नहीं श्रीमाली हैं
आप गुरु नहीं सद्गुरु हैं
अब मुझ यह कृत्व करें

एक यिष्य की अन्तिपुकार

हे मेरे परम आराध्य... थामो, मेरे इस मन की व्यर्थ भटकन को... थामो। यदि मेरा जीवन यूं ही चलता रहेगा, तो क्या अर्थ होगा इस जीवन का? क्या होगा मेरी इस गिरती हुई मनोदशा का? और क्या होगा आपके गुरुत्व का? प्रभु, मेरे जीवन की इस डोर को इतना ढीला भी न कीजिए, कि मेरा जीवन बिखर जाए या फिर मुझे इस बात का अहसास दीजिए, कि जो कुछ भी हो रहा है, वह आपका कृपा कठाक है।

मैं इस संसार में न चाहते हुए भी इस तरह से फँसता जा रहा हूं, जैसे कोई पथिक अनजाने में दलदल में गिर जाता है। गिरने के बाद वह जितना भी निकलने की कोशिश करता है, वह उतना ही उसमें फँसता जाता है। क्या आप जैसे माझी के रहते हुए भी मेरी नौका इस भव सागर में डूब जायेगी? क्या इस भंवर चक्र में मेरे निकलने का कोई उपाय आपके पास नहीं है? यदि है तो फिर इतनी देर क्यों... क्यों आप इतनी देर लगा रहे हैं? मैं और अधिक सांसारिक अनुभव नहीं चाहता। यह तो सत्य है, कि इस संसार का मैं जितना भी अनुभव करूं, इसका स्वाद कसैला है और कसैला ही रहेगा। यहीं तो अनुभव है मेरे अब तक के जीवन का, यहीं तो अनुभव किया है मैंने इस संसार सागर में डूबकर, सचमुच... बहुत ही कसैला जल है इस सागर का।

मैं जहां तक भी देखता हूं, एक बहुत बड़ी बड़ी, जिसे सामान्य भाषा में स्वार्थ कहा जा सकता है, उस बड़ी ने प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को जकड़ रखा है, जहां जितने भी

यहां कोई किसी से निश्छल प्रेम नहीं करता... सचमुच में ही नहीं करता, जरा आप अपने भीतर झांक कर तो देखिये, यहां सारे सम्बन्ध बेमानी हैं, जो कि मृत्यु के साथ ही एक ही झटके में समाप्त हो जायेंगे लेकिन जब तक हम जीवित रहेंगे, कोई हमें इच्छित जीवन नहीं जीने देगा। हमारा जीवन दूसरों के इशारों से संचालित होने वाला जीवन बन गया है। यह जीवन केवल मेरा ही नहीं, यहां सभी का ऐसा ही जीवन है।

...और हम इस भ्रम जाल में प्रसन्न हैं, कि यह सब कुछ मेरा है, ये पत्नी, ये पुत्र-पुत्रियां, ये माता-पिता, ये सगे-सम्बन्धी, ये जमीन-जायदाद... मगर सत्य तो यह है, कि यहां कुछ भी मेरा नहीं है, ये सत्य ही नहीं परम सत्य है। समय-असमय सभी साथ छोड़ जाते हैं। अगर हम धन कमा कर लायें, तो ये ही हमारे दुश्मन बनकर हमारा जीना मुश्किल कर देते हैं। ये मित्र, जब तक समय अनुकूल चलता है, ये साथ रहते हैं, जरा सी प्रतिकूल परिस्थिति आती है, ये तुरन्त किनारा कर लेते हैं। मैंने देखा है मृत्यु को, और बहुत करीब से देखा है।

मेरा एक मित्र मृत्यु को प्राप्त हो जाता है और जो माता-पिता उसे घर से बाहर नहीं जाने देते थे, कभी कोई इच्छित कार्य करने से नहीं रोकते थे माता-पिता, वही मित्र, वही सगे-सम्बन्धी उसे एक मिट्ठी समझ कर शमशान ले जाते हैं और देखते-देखते उसे जलाकर हमेशा के लिए समाप्त कर देते हैं। कहां गई वह ममता, कहां गया वह प्यार... कहीं भी मम्बन्ध हैं, वे गाँगों नारायण पर ही आधारित हैं। आत्मीयता तो दिखाई नहीं देती... अरे! जिसे तुम इतना चाहते

थे, आज क्या हो गया... क्यों उसके अस्तित्व को मिटाने की इतनी जल्दी कर दी? संसार इतना कटु क्यों है?

मेरे मित्रो! यही सब तो मेरे साथ होगा, आपके साथ होगा और हम सब के साथ होगा, जिस पुत्र को हम इतना प्यार करते हैं, वही तो इस सुन्दर शरीर को अग्नि के सुरुद कर देगा और यह सुन्दर शरीर देखते-देखते जलकर समाप्त हो गया। मिट गया... व्यक्ति विशेष के लिए तो सब कुछ मिट गया... लेकिन वे मित्र, वे सगे-सम्बन्धी, परिवार, भवन, मकान, दुकान, जायदाद सभी कुछ तो जैसा था वैसा ही है लेकिन नहीं हैं तो व्यक्ति स्वयं नहीं होंगे।

हे मेरे परम आराध्य, कैसे होगा मुक्ति का ज्ञान? कब तक हम इन छोटी-छोटी समस्याओं को लेकर, छोटे-छोटे तनावों को लेकर, छिछली सी माया को लेकर परेशान रहेंगे? कब हम आपको समझेंगे और कब हम ब्रह्म को समझेंगे? कब हमें ध्यान-धारणा का ज्ञान होगा? कब हम साधनाओं में सफलता प्राप्त करेंगे? कब हमारे भीतर पात्रता और श्रद्धा का उदय होगा? आखिर कब... बहुत हो गया... प्रभु, बहुत हो गया, अब तो यह अहसास करा ही दो, कि हमारा हाथ आपके हाथ में ही है।

कौन है हमारा इस संसार में आपके सिवाय, जो है वे सभी तो नाम मात्र के ही हैं। आखिर अंत में आप ही तो हैं, जो हमें थामेंगे... जो हमें संभालेंगे और उस दिव्यलोक तक हमारे साथ रहेंगे। फिर ये इतनी दूरी आपने हमसे क्यों बना रखी है? क्या कसूर है हमारा... और अगर कुछ है, तो हम उसे कैसे दूर करें? आखिर हमें कौन राह बतायेगा? अगर आप ही हमारा साथ न देंगे, तो कौन हमारी सहायता करेगा? अब तो यही विनती है, कि आप हृदय में... हमारे शरीर में... हमारे रोम-प्रतिरोम में और हमारे प्रत्येक अणु-अणु में आप समाहित हो जायें।

- हम देखें तो केवल आपको, हम सुनें तो केवल आपको, हम चाहें तो केवल आपको, हमारा सर्वस्व आप पर ही केन्द्रीभूत हो जाए, कुछ ऐसी कृपा करो मेरे गुरुदेव। मैं 'मैं' न रहकर आपके ही अस्तित्व में विलीन हो जाऊं। अब तो मैं रहना भी नहीं चाहता या फिर आप अगर मुझे रखना ही चाहते हो, तो गुरुमय बनाकर रखें। मेरे रोम-रोम से एक ही ध्वनि निकले गुरुदेव... गुरुदेव... गुरुदेव...

मैं जानता हूं, आप ये सब कर सकते हैं और होगा भी आपके मन से ही। मेरे तो सारे प्रयास ही निष्फल हो रहे हैं। मैं हार रहा हूं गुरुदेव, मैं हार रहा हूं।

आप मुझे विजय प्रदान कर दीजिए... आप ही मुझे विजय दे सकते हैं और आपको विजय देनी ही होगी, क्योंकि मेरी हार में आपकी ही असफलता प्रकट होगी और आप तो विजित हैं, फिर आपकी हार संभव ही नहीं है। मैं भी विजय प्राप्त करना चाहता हूं, अगर आपका थोड़ा सा भी सहारा मुझे मिल जाए, तो मैं निश्चित रूप से विजय प्राप्त कर लूंगा और सीधे शब्दों में कहूं, तो मेरी विजय वास्तव में आपकी ही विजय होगी और मैं चाहता हूं कि आप विजयी हों, आपको विजयी होना ही होगा... आप मेरे जीवन की चिंता न करें, अगर मेरी जान भी चली जाए, तो मुझे दुःख न होगा। अगर मैं हार कर मर गया, तो सचमुच मुझे कभी मुक्ति नहीं मिल पाएगी और मुझे मुक्त करना आपका कर्तव्य है।

ये अकेले मेरे ही भावोद्गार नहीं, वरन् समस्त अनखिले पुष्पों के भावोद्गार हैं। ये मेरे अकेले की व्यथा नहीं, वरन् आपके अनगिनत अबोध, नवजात शिष्यों की व्यथा है, जो चाह कर भी खिल नहीं पा रहे। आप माली ही नहीं अपितु श्रीमाली हैं, आप गुरु ही नहीं, सद्गुरु हैं। आपको इन अबोध व्यथित शिष्यों के जीवन को, मुरझाये हुए पुष्पों को सुवास देनी ही होगी। मैं जानता हूं, जो पात्र होना चाहता है, उसे पात्र बनाने में आपको तनिक भी परेशानी नहीं होगी और जो पात्र नहीं बनना चाहते हैं, मैं उनके दुर्भाग्य को कभी माप नहीं सकता।

अत्यन्त ही दुर्भाग्यशाली हैं वे शिष्य, जो पात्रता की कस्टी से बचना चाहते हैं, जो अपने पूज्यवर के अनुकूल होने से कतराते हैं। आखिर इस जीवन का मूल्य ही क्या, जिसे आपने कई बार मृत्यु के मुख से बचाया है, अब यह जीवन है किसका? आपका ही तो है... निःसंदेह अब यह जीवन आपका ही है। मैं बनना चाहता हूं आपके मार्ग का दीपक... आप जलायें तो सही, बस एक बार जला दीजिए, मैं जीवन भर जलता ही रहूंगा... जलता ही रहूंगा।

अब तो अपनी कृपा की वर्षा कर ही दीजिए। अब न रोकिए अपनी करुणा के उस अजस्र प्रवाह को, नहीं तो शिष्यों का मरुस्थल हृदय बेजान होकर समाप्त हो जाएगा, एक खिलती कली मुरझा जाएगी... एक सुखद कहानी का दुखान्त हो जाएगा, इस कहानी को परवान चढ़ा दीजिए। अब कृपा कर दीजिए गुरुदेव... अब अपनी कृपा कर ही दीजिए...

अब प्रभु कृपा करहूं एहि भरांति।
सब तजि भजन करहूं दिन राति॥

आदि देव महादेव

ब्रह्मो नस्मः

जानिये समझिये

शिव तत्त्व

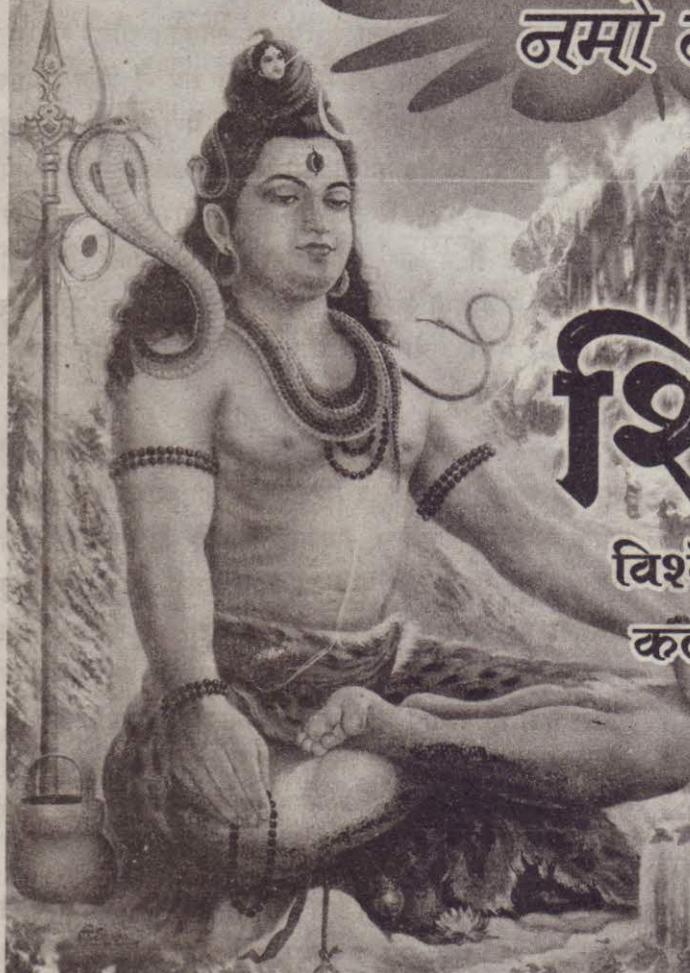
विश्वेश्वर महादेव शिव स्वरूप हैं,

कल्याण स्वरूप होने से शंकर ही

मंगलप्रद होने से अमंगलों के
विद्यंसक और प्रलयंकर हैं

जो सत्य ज्ञान आनन्द ब्रह्म

का ही स्वरूप तत्त्व है।



सृष्टि के तीन आयाम हैं - उद्भव, विकास और समाप्ति। ब्रह्मा को सृजन का अधिपति माना गया है। वह सृष्टिकर्ता है। संसार में जो कुछ भी उत्पन्न होता है, वह सब ब्रह्मा का ही कृतित्व है, जबकि पालन-पोषण की व्यवस्था विष्णु के अधीन होता है। उत्पत्ति और पालन के पश्चात् तीसरा पक्ष समापन का इश्वरीय शक्ति का नाम 'शिव' है। रोग, शोक और मृत्यु-तुल्य संकटों का निवारण करने वाले शिव हैं। समस्त देवताओं में अति शीघ्र प्रसन्न होने वाले देवता शिव हैं, इसलिए उनका एक नाम 'आशुतोष' भी है। अन्य देवताओं के चरित्र में कहीं-न-कहीं वैभव-विलास, सत्ता-लोभ और कूटनीति की झलक मिलती है, किन्तु शिव त्याग, सादगी, निःस्पृहता एवं सरलता के साक्षात् स्वरूप हैं।

अन्य देवताओं ने जिसे तुच्छ अथवा असुविधाजनक मानकर

अस्वीकार कर दिया, शिवजी ने उसी को परम प्रसन्न भाव से अपना लिया। जहां दूसरे देवता सम्य-पुरियों में, वैभव-विलास से युक्त भवनों एवं राजमहलों में निवास करते हैं, रक्ताम्बर धारण करते हैं, उनके आभूषण, पात्र, गृह-सज्जा, दास-दासियां सब सुसज्जित, वैभव-प्रदर्शक और भौतिक सुख-सुविधा के पूरक हैं, वहीं शिव को इन बातों में कोई रुचि नहीं। वे भोलेनाथ हैं, औघड़दानी हैं, अवधूत हैं। वे परम वैरागी, महान योगी और ईर्ष्या-द्रेष, रोग-शोक से सर्वदा असम्पृक्त रहते हुए, अपने भक्तों का कल्याण करते हैं। उन जैसा महादानी और कृपालु देवता कोई अन्य है? उदारता की सजीव प्रतिमा शिव त्रिकाल में, त्रिभुवन में, देवाधि-देव, सृष्टि के अंतिम आयाम (संहार) के नियामक और अखिल विश्व-ब्रह्माण्ड के प्रशासक हैं।

'गीता' में श्रीकृष्ण ने कहा है - स्फद्रणां शंकरश्चास्मि

अर्थात् परब्रह्म परमात्मा ही रूद्रों में शंकर हैं। शिव को ही शंकर कहते हैं। 'शिव' से तात्पर्य नित्य, विज्ञानानन्दघन परमात्मा से है। शंकर का 'शं' आनंद का बोधक है और 'कर' करने वाले के लिए प्रयुक्त होता है, अर्थात् जो प्राणी को आनंद देने वाला है अथवा उसका आनंदस्वरूप है, वही शंकर अथवा शिव है।

शास्त्रों में शिव की महिमा अनंत बताई गई है, निर्गुण रूप में वही जगत के कर्ता, संहारकर्ता एवं पालनकर्ता हैं। भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए वे संगुण होते हैं। वेद, पुराण, महाभारत, रामायण तथा स्मृति आदि धर्मशास्त्रों में ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर की एकता का जगह-जगह प्रतिपादन किया गया है। इतना ही नहीं, शास्त्रों में उनको पातकी माना गया है जो इन तीनों में भेद बुद्धि रखते हैं।

**शिवदोही मम दास कहाया,
सरे नर मरोहि सपन्नेहु नरहि भावा।**

'मानस-' की इन पंक्तियों में राम ने शिवनिंदक को निंदनीय बताया है। वस्तुतः एक ही तत्त्व ब्रह्मा, विष्णु एवं महादेव के रूप में परिलक्षित होता है।

**स ब्रह्मा स विष्णुः स
रुद्रः सरिश्वस्सोऽक्षरः सः यमः स्वराट् ।**

'कैवल्योपनिषद्' की इस पक्ति से यह प्रमाणित है कि शिव सच्चिदानन्दस्वरूप परब्रह्म हैं। वे सूक्ष्म-से-सूक्ष्म और स्थूल-से-स्थूल हैं। सारा जगत् उसी का रूप है। यह सृष्टि उसकी लीला है।

शंकर जन-जन के देवता हैं। उनकी भक्ति से ऋषि-मुनि, देव-दनुज, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, किन्नर, मनुष्य, पितर, भूत-प्रेत, देवी, अप्सरा तथा सिद्ध आदि सभी को अभीष्ट फल की

एक व्याख्यान में विवेकानन्द ने कहा था -
“प्रत्येक प्राणी के हृदय में शिव वास है, परंतु उस पर एक आवरण-सा पड़ा हुआ है। अभावग्रस्त लोगों की सेवा के द्वारा जब तुम्हारा चित्त शुद्ध हो जाएगा, तो शिवजी स्वयं ही प्रकट होंगे। जो व्यक्ति जितना ही निःस्वार्थ है, वह शिवजी के उतना ही समीप है।” ‘शिव भाव से जीव सेवा’ - यही स्वामी विवेकानन्द के संदेश केन्द्र बिन्दु है।

भगवान् शिव और स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द इस युग के परम ज्ञानी आचार्य थे और उनके जीवन चरित्र को देखने से स्पष्ट होता है कि उनके जीवन का प्रारम्भ ही शिवकृपा से हुआ, युवावस्था में उन्हें शिव द्वारा ही कर्म की प्रेरणा मिली और अन्त में शिव अनुभूति के साथ ही जीवन का पटाक्षेप हुआ। उनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त कलकत्ता के विख्यात वकील थे तथा माता भुवनेश्वरी देवी को कई संताने हुई, परंतु उनमें से कहीं का शैशवकाल में ही निधन हो गया, बच रही थीं तो केवल पुत्रियाँ। पुत्र-प्राप्ति के लिये उनकी माता प्रतिदिन अपने आराध्य देव महादेव की पूजा अर्चना में रत रहने लगी। काशी में निवास करने वाली अपने परिवार की एक वृद्धा को भी उन्होंने अपने लिये वहां के वीरेश्वर शिव के मन्दिर में इस निमित्त पूजा, दान आदि का अनुरोध किया। इसने अनुरोध पर वृद्धा ने काशी में शिव की अर्चना की।

भगवान् शिव की कृपा से एक दिन उन्हें पुत्र-प्राप्ति का पूर्वाभास मिला। उस दिन वे पूजा, प्रार्थना आदि से निवृत होकर रात में शयन कर रही थीं, सहसा उन्होंने देखा कि जटानूटमण्डित, ज्योतिर्मय, तुषारध्वल महादेव उनके सामने उपस्थित है और क्षण में ही देवाधिदेव महादेव ने एक नन्हे से शिशु का रूप धारण कर लिया। उस रजतगिरि के समान सुकुमार शिशुका दर्शन करते ही उनकी नींद खुल गयी। उनका मन एक अपूर्व आनन्द से भर गया। वे सोचने लगी कि यह मात्र एक स्वप्न था या फिर पुत्र प्राप्ति का पूर्वाभास।

इस आलौकिक स्वप्न के कुछ महीनों बाद ही 12 जनवरी 1863 ई., मकर-संक्रान्ति के दिन उन्हें पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। काशी के वीरेश्वर शिव की आराधना के फलस्वरूप ही जन्म होने के कारण उस पुत्र का नाम वीरेश्वर रख दिया। दुलार में बिले नाम से पुकारने लगे।

स्कूल में उनका नाम नरेन्द्रनाथ दत्त और बाद में स्वामी विवेकानन्द नाम से विख्यात हुए।

प्राप्ति हुई है। उनकी निष्काम पूजा से अंतःकरण शुद्ध होकर व्यक्ति को ब्रह्मज्ञान की अनुभूति ही नहीं, उसकी प्राप्ति भी होती है।

सकाम पूजा से भक्त को भोग-ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं। शिव आशुतोष हैं। वे थोड़ी-सी साधना से ही प्रसन्न होकर मुंहमांगा वरदान देते हैं। रोग निवारण तथा अकाल मृत्यु से मुक्ति दिला देते हैं। ऐसे भोलेबाबा 'शिव' की महिमा का वर्णन कौन कर सकता है?

'ऋग्वेद' के रुद्र, 'यजुर्वेद' के शिव (या शंकर), 'अथर्ववेद' के महादेव (या भव, शर्व), 'सामवेद' के रुद्र, 'वाल्मीकि' के महादेव, 'महाभारत' के महादेव और शंकर तथा 'शिवपुराण' के सदाशिव प्राचीनकाल से भक्तों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। भक्तों को अभीष्ट फल देना, उनके कष्ट दूर करना तथा उन्हें मुक्ति प्रदान करना भगवान शंकर के लिए सहज कार्य हैं। वे प्रसन्न होकर भक्त को सर्वस्व देने में भी संकोच नहीं करते।

भस्मासुर राक्षस की तपस्या से प्रसन्न होने पर शिवजी ने उसे यह वरदान दे दिया कि जिसके सिर पर तुम अपना हाथ रखोगे, वह भस्म हो जाएगा। कितनी उदारता तथा महानता का उदाहरण है, शिव भक्ति का! यह वरदान पाकर भस्मासुर शिव को ही भस्म करने के लिए दौड़ा तो उन्हें उससे छिपना पड़ा। असुर माँ जगदम्बा के रूप-लावण्य पर आसक्त होकर वह इस कुमार्ग पर चला था। अतः भगवान विष्णु की सूझबूझ से, उसकी भस्म करने की शक्ति ने, उसे ही भस्मीभूत कर दिया। इस कथा में भगवान महादेव की असीम करुणा झलकती है। भक्तों के लिए उनका सर्वस्व देय होता है।

भूमंडल पर जितना शिव-पूजा का प्रचार है, उतना किसी अन्य देवता की पूजा का नहीं है। नगर-नगर, ग्राम-ग्राम, डगर-डगर में स्थापित शिव मंदिरों का यही रहस्य है। ब्रह्मा-विष्णु-महेश-इन त्रिदेवों में शिव की महिमा 'देवी भागवत' में सबसे अधिक बताई गई है -

पत्रिका के जून 2010 अंक में पृष्ठ संख्या 37 में शिव साधना के सम्बन्ध में विस्तार से वर्णन है। इसी अंक में महामृत्युंजय साधना, रुद्र साधना, पाशुपतास्त्रेय साधना, रसेश्वर साधना एवं महाकाल को विधि-विधान सहित स्पष्ट किया गया है। साधक श्रावण मास में शिव साधना अभिषेक अवश्य सम्पन्न करें -

जो शिव जीवों के उपकारार्थ
तीनों लोकों की स्थिति पालन, नाश
संहार और उत्पत्ति कार्य सम्पन्न करते हुए
विष्णु, रुद्र और ब्रह्मरूप को धारण करते हैं
तथा जिस शिव की शक्ति समस्त प्राणियों
की वाणी और मन से अत्यन्त अगम्य है,
वह स्वयं प्रकाश शिव परमेश्वर सर्वदा
अक्षय कल्याण प्रदान करें।

स हि सर्वेश्वरो देवो विष्णोरपि च कारणम् ।

विश्व जब संकटग्रस्त हो जाता है, तो महादेव उसका निवारण करते हैं। सागर-मंथन के अवसर पर कालकूट विष को देखकर ब्रह्मा, विष्णु, देव, असुर तथा क्रष्ण-मुनि आदि सभी भयभीत हो गए। समस्त जगत् विष की गर्मी से संतप्त हो उठा। अंत में सब ने आशुतोष भगवान शिव की शरण ली तथा उनकी स्तुति की। प्रसन्न होने पर उस विष को भूतभावन विश्वनाथ (महादेव) ने अपने कंठ में रख लिया, जिससे उनका कंठ नीला पड़ गया। फलतः वेद में 'नील-ग्रीव' नाम से उनकी प्रसिद्धि हो गई।

समस्त देव एवं मानव-समाज के कष्ट निवारण की इससे बड़ी मिसाल और क्या हो सकती है? वह सदा सबके कल्याण में प्रवृत्त रहते हैं। वह अमंगल हास, सुख एवं मंगल का वर्धन करते हैं। इसीलिए उनका मंगलमय नाम 'शिव' लोक में कल्याण का वाचक बन गया है। अतः 'श्वेताश्वरोपनिषद्' में जन्म से मृत्यु के भय से मुक्ति पाने के लिए की गई प्रार्थना मानवीय है -

अजरात् इत्येवं कश्चिद् भीरुः प्रपद्यते ।

रुद्र यत्ते दक्षिण मुखं तेन पाहि नित्यम् ॥

अर्थात् हे रुद्र! आप अजन्मा हैं। जन्म-मरण के चक्र से मुक्त करना आपका स्वभाव है। यह समझकर जन्म-मृत्यु के भय से डरा हुआ साधक आपकी शरण लेता है। आपका जो कल्याणकारी स्वरूप है, उसके द्वारा जन्म-मृत्यु के भय से मेरी सर्वदा रक्षा करें।

रुद्र भगवान की महिमा का वर्णन 'रुद्रहृदयोपनिषद्' में इस प्रकार किया गया है -

सर्वदेवात्मको रुद्रः सर्वे देवा शिवात्मकाः ।

रुद्रात्प्रवर्त्तते बीजं बीजं योनिर्जनार्दनः ॥

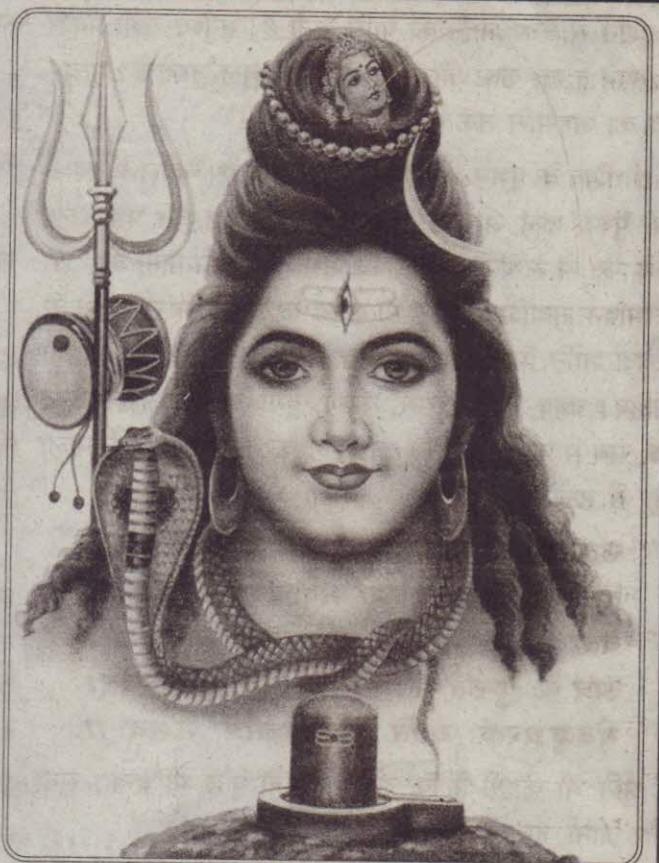
यो रुद्रः स स्वयं ब्रह्मा यो ब्रह्मा स हुताशनः ।
 ब्रह्मा विष्णुमयो रुद्र अर्जनीषोमात्कं जगत् ॥
 रुद्रः सूर्य उमा छाया तस्मै तस्यै नमो नमः ।
 रुद्रो बहिरुमा स्वाहा तस्मै तस्यै नमो नमः ॥
 रुद्रो वेदः स्मृतिश्चेमा तस्मै तस्यै नमो नमः ॥
 रुद्रो यज्ञ उमा वेदिस्तस्मै तस्यै नमो नमः ॥
 रुद्रो नर उमा नारी तस्मै तस्यै नमो नमः ।
 श्रीरुद्र-रुद्र-रुद्रति यस्तं ब्रूयाद् विचक्षणः ॥
 कीर्त्तनात्सर्वदेवस्य सर्वपापे: प्रमुच्यते ।
 ये रुद्रं नाभिजानन्ति ते न जानन्ति दैवतम् ॥
 सर्वदेवात्मकं रुद्रं नमस्कुर्यात्पृथक् पृथक् ।
 एभिर्मन्त्रपदैरेव नमस्यामीश्यार्वतीम् ॥

इन मंत्रों में भगवान शिव को ही मूल प्रकृति, पुरुषमय आदिदेव तथा साकार ब्रह्म बताया गया है। वेदविहित यज्ञपुरुष स्वयंभू महादेव हैं। वेद-स्मृति शिव-पार्वती का रूप है। यहां सर्वत्र उमाशंकर का ही दर्शन करने का उपदेश है। ऐसे दुष्टों को सब पापों से मुक्ति मिल जाती है। अतः मां भगवती, जगदम्बा, पार्वती सहित भोलेनाथ का पूजन करने से भक्त को भुक्ति-मुक्ति दोनों ही प्राप्त हो जाती है।

शिव-महिमा के विषय में ‘श्वेताश्वतरोपनिषद्’ कहता है -
 यदा तमस्त्र दिवा न रात्रिन्तर चासन्ति व एव केवतः ।
 तदक्षरं तत्सवितुर्वरेण्यं प्रज्ञा च तस्मात् प्रसूता पुराणी ।

अर्थात् सृष्टि के प्रारंभ में जब केवल अंधकर ही था - न दिन था, न रात थी, न सत् (कारण) था, न असत् (कार्य) था; उस समय केवल निर्विकार शिव ही विद्यमान थे। वे ही अक्षर हैं, वे ही सबके जनक परमेश्वर का प्रार्थनीय रूप हैं तथा उन्हीं से शास्त्र विद्या का प्रवर्तन हुआ है। इस श्रुति में भगवान शिव को आदितत्व के रूप में वर्णित कर ‘शिवपुराण’ में प्रतिपादित सदाशिव के स्वरूप का समर्थन किया गया है। कल्याणकारी शिव प्रलय एवं संहार के भी देवता माने जाते हैं। उनके प्रलयकारी स्वरूप का वर्णन भी शास्त्रों में मिलता है। उनका ताड़व नृत्य इसी महाविनाशलीला का अंग है। सृष्टि और प्रलय - दो अवश्यंभावी तत्त्व हैं। समस्त चराचर ब्रह्माण्ड को अपने में लीन कर वह नई सृष्टि का उपक्रम करते हैं।

वेद, पुराण, स्मृतियों तथा धर्मशास्त्रों में आशुतोष भगवान को ज्ञान, विज्ञान एवं भुक्ति-मुक्ति का देवता माना गया है। उनकी भक्ति से व्यक्ति को सब कुछ प्राप्त हो जाता है। ‘शिवपुराण’ के अनुसार भगवान के परिवार का अर्चन करने से भक्त को सुदुर्लभ वस्तु भी प्राप्त हो जाती है। असाध्य को उसी परम शिवतत्व की शरण में जाना चाहिए। शिवतत्व



रोगों, कष्टदायी क्रहणों तथा भय-बाधा को हटाने के लिए भगवान शंकर की भक्ति सहज साध्य है। थोड़े जल-पुष्प अर्पित करने से वे प्रसन्न हो जाते हैं।

भगवान गणेश विघ्न-विनाशक हैं। उनका ध्यान-कार्य सिद्धिदायक है। मां जगदम्बा भगवती पार्वती, कुमार कात्तिक्य तथा नंदीगण के भजन-पूजन से अमोघ सिद्धियां भक्तजनों को मिलती हैं। अतः ‘शुक्लयजुर्वेद’ की यह प्रार्थना ‘मनः शिवसंकल्पमस्तु’ सदैव ध्यान रखने योग्य है। आज चारों ओर फैली अशांति को दूर करने के लिए शिवशरणागति में जाने का हमें संकल्प करना चाहिए।

शिव की आराधना के लिए जहां उनके विग्रह और प्रतीक की सही समझ होनी जरूरी है, वहां यह भी आवश्यक है कि उस शिव के रहस्यमय निर्गुण स्वरूप को भी समझा जाए। इसी रहस्य से पर्दा उठाने के लिए हम यहां विचार कर रहे हैं कि शिवतत्व क्या है?

शेते प्राणिनो यत्र स शिवः

जीव अनंतानंत-पाप-ताप-संतापों से संत्रस्त होकर जहां ही शिव कहा गया है। इस संसार में कल्याण के लिए प्राणियों को उसी परम शिवतत्व की शरण में जाना चाहिए। शिवतत्व

प्राप्ति व्यनि असे परम शांति की प्राप्ति होती है। मनुष्य सभी प्रकार व्यनि अपने दुःख, कष्ट और रोग आदि को भूल जाता है। मृत्यु-होने का अहसास तक समाप्त हो जाता है।

श्री शिव के पूजन में कोई कठिनाई नहीं है। केवल विल्व-पत्र, पुष्प, फल और जल आदि जो भी कुछ बन पड़े, उन्हें सच्चे मन से समर्पित कर अपने सभी शुभाशुभ कर्मों को, उन भूतभावन सदाशिव शंकर भोलेनाथ के चरणों में सौंप देने से प्रत्यक्ष शांति मिलती है। शिव के उपासक को समदृष्टा होना चाहिए। ब्रह्मा, विष्णु, राम, कृष्ण, दुर्गा-सबका आदर करते हुए, सब में परम शिवतत्त्व का दर्शन करना चाहिए। 'मुंडमाला तंत्र' में उल्लेख है -

**रुद्रस्य चित्तनादुद्रो विष्णुः स्याद्विष्णुचित्तनात् ।
दुर्गायाश्चित्तनाददुर्गा भवत्येव न संशयः ॥
यथा शिवस्तथा दुर्गा या दुर्गा विष्णुरेव सः ।
अत्र यः कुरुते भेदं स नरो मूढं परिचित्येत् ।
भेदकृद्वरकं याति रौरवं नात्र संशयः ॥**

श्रुति भी कहती है कि संसार में जो कुछ भी देखा, सुना और जाना जाता है, सब परम शिवतत्त्व है।

**सर्वं देवात्मको रुद्रः सर्वं देवाः शिवात्मकाः ।
रुद्रस्य दक्षिणे पाश्वं रविर्ब्रह्मा पद्मोऽन्नयः ॥
वामपाश्वं उमादेवी विष्णुः सोमोऽपि ते त्रयः ।
या उमा सा स्वयं विष्णुर्यो विष्णुः स हि चंद्रमः ॥
ये नमस्यन्ति गणेन्द्रं ते नमस्यन्ति शंकरम् ।
येऽर्चर्यन्ति हरिं भक्त्या तेऽर्चर्यन्ति वृष्ट्यवजम् ॥**

वह परम शिवतत्त्व ही सर्वत्र समाया है। वही भजनीय तत्त्व है, वही माननीय शक्ति है, वही पूजनीय तत्त्व है, वही संगुण है, वही निर्गुण है, वही विश्वरूप है, वही पूर्ण चैतन्यस्वरूप और परम आत्मा है। भगवत्पाद भगवान आद्य शंकराचार्य जी महाराज कहते हैं -

**आत्म त्वं पिरिजा मर्ति: सहचरा प्राणः शरीरं गृहं ।
पूजा ते विश्वोपभोग रचना निद्रा समाधि स्थितिः ॥
संचारः पदयोः प्रदक्षिण विधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो ।
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदस्त्रिलं शम्भोः तवारथनम् ॥**

भगवान शिव का पूजन करते-करते जीव शिव हो जाता है। वह राग, द्वेष, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, पुण्य, पाप, सुख, दुःख, बंधु, मित्र आदि की तेरे-मेरे की भावना से ऊपर उठकर स्वयं इनका साक्षीभूत बन जाता है; इस दृश्यमान जगत् का स्रष्टा बन जाता है। उस समय वह

केवल सत्-चित्, आनंद रूप, स्वयं शिव रूप हो जाता है। ...किन्तु इस स्थिति के लिए बड़े धैर्य, अडिग विश्वास एवं दृढ़ श्रद्धा की आवश्यकता है। बिना श्रद्धा के उस परम शिवतत्त्व की प्राप्ति असंभव हैं 'गीता' में कहा गया है -

**श्रद्धावाल्लभतेज्ञानम् और अज्ञश्चाश्रद्धाधानश्च
संशयत्त्वा विनश्यति ।**

अर्थात् अज्ञ, श्रद्धाविहीन और संशययुक्त व्यक्ति निष्ठा एवं दृढ़ विश्वास के अभाव में नाश को प्राप्त होता है। अतः शास्त्र वचनों में अखंड विश्वास रखते हुए जरा भी इधर-उधर विचलित हुए बिना अपना पिता, माता, बंधु, गुरु-सब कुछ उन्हीं को मानकर, उन्हीं की शरण में जाना चाहिए।

भगवती श्रुति कहती है, तस्मै तस्यै नमो नमः अर्थात् जो हृदय में परम शिवतत्त्व का सर्वत्र दर्शन करते हुए 'नमो नमः' कर सकते हैं, वे धन्य हैं। नमः का अर्थ है - न मम। जो लोग 'मेरा कुछ नहीं है, सब तुम्हारा है' कहते रहते हैं, वे ही उस परमतत्त्व शिव पद की प्राप्ति कर सकते हैं।

ज्ञान के सृष्टिदाता

जगननी भगवती शिवा और शिव ही समस्त सृष्टि के स्रष्टा हैं। इनकी कृपा से ब्रह्मादि देव आविर्भूत होकर आदेशानुसार सृष्टि, स्थिति और संहृति में प्रवृत्त होते हैं। अखिल ब्रह्मांडनायिका भगवती एवं अखिल ब्रह्मांडनायक भगवान शिव एक रूप होते हुए भी लोकानुग्रह के लिए द्विधा रूप ग्रहण करते हैं और दिव्य-दंपति के रूप में शब्दार्थमयी सृष्टि को भी विकसित करते हैं, यही ब्रह्मस्वरूप हैं, अतः निगम और आगम की सृष्टि भी इनके द्वारा ही हुई है।

ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव में कोई भेद नहीं है। लोक-बोध के लिए इनका पृथक-पृथक निरूपण किया गया है, किन्तु तत्त्वः इनकी पृथकता नहीं है। वैसे यह भी स्पष्ट है कि इनके मूल में शक्ति ही आदितत्त्व है, जिसके द्वारा स्वेच्छा-विलास के लिए देवसृष्टि हुई है।

**ते जन्माभाजः खलु जीवलोके ये वै सदा
ध्यायन्ति विश्वनाथं ।**

**वाणी गुणान् स्तौति कथां श्रृणोति श्रोत्रद्वयं ते
भवमुत्तरन्ति ॥**

अर्थात् जो सदा भगवान शिव का ध्यान करते हैं, जिनकी वाणी शिव के गुणों की स्तुति करती है और जिसके दोनों कान उनकी कथा सुनते हैं, इस जीव-जगत् में उन्हीं का जन्म लेना सफल है। वे निश्चय ही संसार-सागर से पार हो जाते हैं।

ब्राह्मण खण्डली

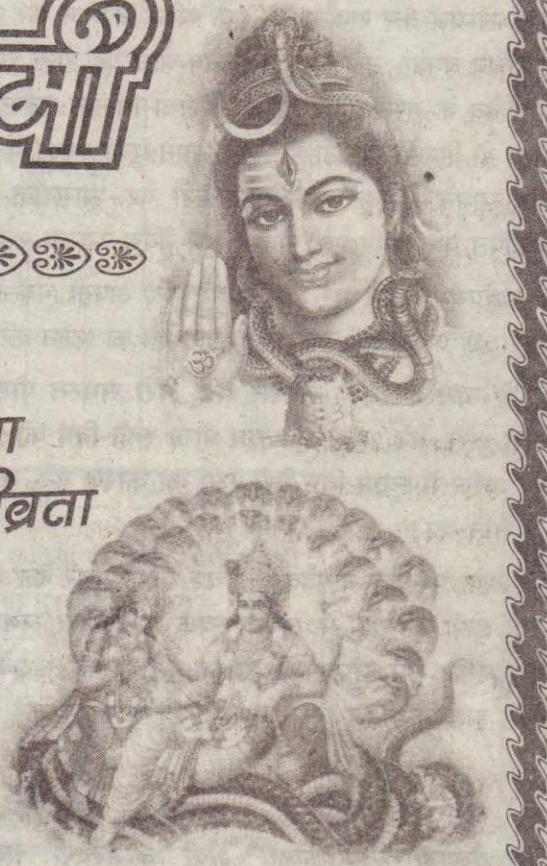
क्षाधना

भय बाधा निवारण

कंतान क्षिवाक्षित्य कैक्षी

कुण्डलिनी तीव्रता

विष्णु की शैया, शिव के गले का हार,
शूर्य के अश्व नागराजा तो कुण्डलिनी का
रूपरूप हैं। अपने साधक की हर भौमि बाधा
में रक्षा करते हैं और उसके व्यक्तित्व में
तीक्ष्णता लाते हैं।



नाग अथवा सर्प की पूजा का स्वरूप पूरे भारतवर्ष में है, कोई अपने शत्रुओं से भय खाता है, कोई अपने अधिकारी मिलता है, प्रत्येक गांव में ऐसा स्थान अवश्य होता है, जिसमें से भय खाता है, कोई भूत-प्रेतों से भयभीत रहता है। नाग देव की प्रतिमा बनी होती है और उसका पूजन किया भयभीत व्यक्ति उत्तिष्ठकी राह पर कदम नहीं बढ़ा सकता है, जाता है। नागपंचमी के दिन को तो एक उत्सव रूप में मनस्या भय का नाश, भय पर विजय प्राप्त करने से ही संभव है, और जाता है, इसके पीछे ठोस आधार है, कारण है। समय के नाग देवता, सर्प देवता भय के प्रतीक हैं, इसीलिए इनकी अनुसार मूल स्वरूप को अवश्य भुला दिया गया है।

पूजा का विधान हर जगह मिलता है।

क्या नाग देवता हैं?

जिस प्रकार मनुष्य योनि होती है, उसी प्रकार नाग योनि भी होती है। पहले नागों का स्वरूप मनुष्य की भाँति होता था, लेकिन नागों को विष्णु की अनन्य भक्ति के कारण वरदान प्राप्त होने से इनका स्वरूप बदल गया, और इनका स्थान विष्णु की शय्या के रूप में हो गया। नाग ही ऐसे देव हैं, जिन्हें विष्णु का साथ हर समय मिलता है, भगवान शंकर के गले में शोभा पाते हैं, सूर्य के रथ के अश्व नाग का ही स्वरूप है।

भय एक ऐसा भाव है, जो कि बली से बली व्यक्ति, पर दूध मिश्रित जल चढ़ाएं और एक माला 'ॐ नमः शिवाय' बुद्धिमान से बुद्धिमान व्यक्ति की शक्ति को भी नष्ट कर देता मंत्र जप अवश्य करें।

आज कल नागपंचमी को स्त्रियों का पर्व ही माना जाता है, जो कि बिल्कुल गलत है, नाग वास्तविक रूप में कुण्डलिनी जो कि शक्ति के स्वरूप हैं। इस विशेष पर्व पर छोटा सा प्रयोग कर इसका विधान भी अत्यन्त सरल है।

नागपंचमी के दिन प्रातः जल्दी उठ कर सूर्योदय के साथ सबसे पहले शिव पूजन सम्पन्न करनी चाहिए, शिव पूजा का विधान यदि मालूम न हो तो शिवजी का ध्यान कर शिवलिंग

प्र नाग पूजा में साधक अपने स्थान पर भी पूजा कर सकता है, और किसी देवालय अथवा अपने गांव के स्थान कर भी पूजा सम्पन्न कर सकता है। एक सफेद कागज कर नाग देव का चित्र बनाएं, उस चित्र में विशेष बात यह होनी चाहिए कि नाग देव के मस्तक पर दो आंखें तथा तिलक अवश्य बनाएं, जीभ दो हिस्सों में बंटी हो, इसे अपने पूजा स्थान में स्थापित कर सामने सिन्दूर से रंगे चावलों पर 'नागराज मुद्रिका' स्थापित करें, और एक पात्र में दूध नैवेद्य स्वरूप रखें।

सर्वप्रथम अपने गुरु का ध्यान कर, अपनी भय-पीड़ा की शांति हेतु प्रार्थना करें, तत्पश्चत् नाग देव का ध्यान करें, कि -

'हे नाग देव! मेरे समस्त भय, मेरी समस्त पीड़ाओं का नाश करो, मेरे शरीर में व्याप्त पीड़ा रूपी विष को दूर करो, मेरे शरीर में व्याप्त विष मेरी रक्षा का कारण बने, न कि मेरी ही क्षति का।'

इसके पश्चात् नागदेव के चित्र पर सिन्दूर का लेप करें, तथा इसी सिन्दूर से अपने स्वयं के तिलक लगायें, तथा सिन्दूर का लेप 'नागराज मुद्रिका' पर भी करें, इसके पश्चात् दोनों हाथ जोड़ कर निम्न मंत्र का 21 बार जप करें -

मंत्र

जस्तकारुर्जगदगौरी मनसा सिद्धयोगिनी।
दैष्णवी नागभगिनी शैवी नागेश्वरी तथा॥
जस्तकारुप्रिया स्त्रीकमता विषहरेति च।
महाङ्गान्तर्युता चैव सा देवी विश्वपूजिता॥

द्वादशैतानि नमानि पूजाकाले तु यः पठेत्।
तस्य नागभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्॥

जब यह मंत्र जप पूर्ण हो जाय तो नागराज मुद्रिका को अपने दायें हाथ में धारण कर लें, और थोड़ी देर शांत होकर बैठ जायं तथा गुरु मंत्र का जप करते रहें, इससे भय का नाश होता है, और बड़ी से बड़ी बाधा से लड़ने की शक्ति प्राप्त होती है।

पूजन के पश्चात् नाग देव के सम्मुख रखे दूध को प्रसाद स्वरूप स्वयं ग्रहण करें, यदि यह दूध किसी अस्वस्थ व्यक्ति को पिलाया जाय, तो उसके स्वास्थ्य में दिन-प्रतिदिन अनुकूलता प्राप्त होती है।

यदि स्वयं भी किसी पुरानी बीमारी को दूर करना है अथवा परिवार के किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उपाय करना है, तो यह प्रयोग 7 दिन तक करें, लेकिन पूजन से पहले अस्वस्थ व्यक्ति के नाम से संकल्प अवश्य लें।

नागराज मुद्रिका का प्रभाव इतना अधिक तीव्र रहता है, कि यदि आप प्रबल से प्रबल शत्रु के पास भी यह मुद्रिका धारण कर चले जाते हैं, तो वह शत्रु आपसे सत् व्यवहार ही करेगा, हानि देने की तो बात ही दूर रहती है, किसी विशेष कार्य पर जाते समय नाग देव का ध्यान कर, मुद्रिका अपने ललाट के मध्य भाग पर तीन बार स्पर्श कर धारण कर रखाना हों तो कार्य सिद्धि निश्चित रूप से प्राप्त होती है।

साधना सामग्री - 120/-

संतान प्राप्ति का नागार्जुन प्रयोग

स्त्रियों के लिए नाग पंचमी का विशेष महत्व है। जो स्त्रियां नाग पंचमी के दिन नागदेव का विधि-विधान सहित पूजन करती हैं, उनकी संतान प्राप्ति की कामना अवश्य पूर्ण होती है, स्त्रियों को अपनी संतान की रक्षा हेतु भी नागार्जुन प्रयोग करना चाहिए।

नागपंचमी के दिन सांयकाल श्रृंगार कर सुन्दर वस्त्र धारण कर सर्वप्रथम शिव का ध्यान कर नागदेव का पूजन करना चाहिए, इसमें पूजन तो ऊपर दी गई विधि के अनुसार ही है, अन्तर केवल इतना है, कि संतान प्राप्ति तथा संतान रक्षा हेतु नाग मुद्रिका के स्थान पर 'नागार्जुन गुटिका' स्थापित करनी चाहिए, तथा निम्न मंत्र का जप करें -

अनन्तं वासुकि शेषं यद्यनाभं च कम्बलम्। शंखपालं धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा॥
एतानि नव नमानि नागान्तं च महात्मनाम्। संतानं प्राप्यते संतानं रक्षा कर
सर्ववाधा नास्ति सर्वत्र सिद्धि भवेत्॥

यह प्रयोग सात बुधवार तक सम्पन्न करें और प्रत्येक दिन पूजा के पश्चात् इस नागार्जुन गुटिका को काले कपड़े में सिल कर अपनी बांह पर अथवा कमर पर धारण करें, तो उसकी कामना पूर्ण अवश्य होती है। संतान की स्वास्थ्य रक्षा और उस पर नजर दोष उतारने का भी यह श्रेष्ठ प्रयोग है।

साधना सामग्री - 150/-

यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो सम्बन्धित सामग्री कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं अथवा आप जोधपुर कार्यालय, फोन : 0291-2432209 या टेलीफ़ोन : 0291-2432010 पर अपना सामग्री आदेश लिखवा दें, हम आपको वी.पी.पी. से सामग्री भेज देंगे, धनराशि अग्रिम भेजने की जल्दत नहीं है।

1

दिनांक : जुलाई 2010
 कृपया मुझे साधना के लिए निम्न सामग्री भेजवा
 दें, वी.पी.पी. आने पर मैं उसे छुड़ा लूंगा।
 मेरा नाम :
 ग्राम : पोस्ट :
 जिला : राज्य :
 सामग्री का नाम :

विधि
 संकेत
 दद से
 केवल
 मेरी की

श्रेष्ठ
 कोई
 इकता
 स्वयं
 फिर
 सत्य
 गाधना
 किया
 में व
 स्थिति
 होती है
 तब में

ते ही
 जाग्रत
 के के
 र वह
 कुछ
 ठुकरा
 प्रकट

प्रिय सम्पादक जी,

दिनांक : जुलाई 2010

पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित निम्न अनमोल कृतियाँ वी.पी.पी. से भेजने की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर छुड़ा लूंगा पुस्तकों के नाम –

2

मेरा नाम / पता :

नोट : 500/- से अधिक मूल्य का साहित्य एक साथ मंगाने पर 20% छूट प्रदान की जायेगी।

प्रिय सम्पादक जी,

(पृष्ठ संख्या 79 पर प्रकाशित)

दिनांक : जुलाई 2010

मुझे उपहार स्वरूप 'हनुमान सिद्धि यंत्र' 492/- (402/- न्यौछावर तथा डाक व्यय 90/-) की वी.पी.पी. से भेजने की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर छुड़ा लूंगा। वी.पी.पी. छूटने पर मुझे 20 पत्रिकाएं निःशुल्क भेजी जायेंगी।

मेरा नाम :

पूरा पता :

3

भारत में डाक
टिकट लगाने
की आवश्यकता
नहीं है।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8

जोधपुर प्रधान डाकघर

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

सेवा में

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त
करने वाले द्वारा
दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8

जोधपुर प्रधान डाकघर

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक
टिकट लगाने
की आवश्यकता
नहीं है।

सेवा में

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त
करने वाले द्वारा
दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8

जोधपुर प्रधान डाकघर

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक
टिकट लगाने
की आवश्यकता
नहीं है।

सेवा में

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भूत

ਦਰਬਾਰ

भविष्य

ਕਾਲ ਜਾਨ ਕੇ ਵੀਕ ਵਕ

जिन्हें जानकार अपना जीवन श्रेष्ठ बना सकते हैं

भविष्य संकेत प्राप्ति का श्रेष्ठ साधना

छाया पुस्तक सिल्लू साधना

जीवन के दो छोर होते हैं, भूत और भविष्य। जीवन इन्हीं के समन्वय से ही गठित होता है। वर्तमान तो एक परिवर्तन का क्षण है जो इसकी संधि पर एक क्षण के लिए आता है और विलीन हो जाता है। वास्तव में वर्तमान को संवारने की कोई विद्या ही नहीं क्योंकि 'वर्तमान' तो संक्रमण का एक पल मात्र है और इसी से भारतीय साधना में भूत-भविष्य की साधनाओं को ही प्रमुखता दी गई, भूत-भविष्य जानने की अनेक विधियां प्राप्त की गईं। जहां भूतकाल में झाँककर व्यक्ति अपनी क्रमबद्धता को समझने का प्रयास करता है, वहीं भविष्य के क्षणों को पकड़कर अपना जीवन संवारने का 'पुरुषार्थ' करता है। 'पुरुषार्थ' कमर तोड़ मेहनत करने तक की ही संज्ञा नहीं है। जीवन को सम्पूर्ण रूप से समझ लेना भी 'पुरुषार्थ' की ही एक क्रिया है, 'पुरुषार्थ' का ही एक अंग है।

इस जीवन को आंख मूँद कर नहीं जिया जा सकता क्योंकि जीवन में यदि आंख मूँद कर चलते रहे तो निरन्तर इधर से उधर सिर टकराते-टकराते, लहूलुहान होते-होते जीवन का समापन आ जाएगा और आध्यात्मिक उपलब्धियां प्राप्त करना तो दूर, सामान्य भौतिक सुखों की भी प्राप्ति संभव नहीं हो पाएगी।

साधनात्मक दृष्टि से, ज्ञान की दृष्टि से जीवन का अंत वह नहीं है जिसे सामान्यतः मृत्यु के अर्थ में परिभाषित किया जाता है वरन् यथार्थतः जीवन का अंत तो वह है; जब यह शरीर 'अशक्त हो जाए, मन में उत्साह और आशा का कोई स्थान न रह जाए और बस शरीर घसीटने की क्रिया शेष रह जाए। जीवन में ऐसी स्थिति आने से पर्व साधनात्मक उपायों

द्वारा इसे संभाल लेना ही बुद्धिमत्ता है।

यही है कि वह अपने भविष्य के क्षणों को पकड़े, उसे वह विधि आती हो जिससे वह अपने भविष्य को अपने हाथ में ले सके और अपने जीवन को सुख-पूर्वक, उत्साह और आनंद से व्यतीत कर सके और यह क्रिया संभव हो सकती है तो केवल एक ही विधि से कि आपको भविष्य के संकेत प्राप्त करने की प्रामाणिक विधि ज्ञात हो।

यदि व्यक्ति के पास ऐसी श्रेष्ठ साधना नहीं है, ऐसा श्रेष्ठ बल नहीं है तो उस व्यक्ति एवं जमीन पर पड़े पत्थर में कोई अंतर ही नहीं, जो ठोकरों के माध्यम से इधर से उधर लुढ़कता रहता है। यदि मैं कहूँ कि व्यक्ति वास्तव में बाधाएं स्वयं आमंत्रित करता है, उनका निर्माण स्वयं करता है और फिर उसमें उलझ कर भटकता रहता है, तो यह एक कटु सत्य होगा, किन्तु वास्तविकता तो यही है। यदि व्यक्ति श्रेष्ठ साधना का बल प्राप्त कर अपने जीवन के छोरों को समझने की क्रिया नहीं करता, उसे सुधारने का प्रयास नहीं करता तो उसमें व एक मूढ़ व्यक्ति में अंतर ही क्या? दुर्भाग्य से आज यही स्थिति है जिसकी रही-सही कसर भक्ति की क्रिया से पूरी हो जाती है कि ‘ईश्वर जो कर रहा है वह ठीक ही है!’ यह वास्तव में पलायनवादी मानसिकता का एक प्रचलित रूप ही तो है।

प्रकृति की ओर से व्यक्ति को प्रतिक्षण संकेत मिलते ही रहते हैं, प्रकृति प्रतिक्षण उसकी सहायक बनकर उसे जाग्रत व चेतन करने का प्रयास करती ही है किन्तु या तो व्यक्ति के अंदर उन संकेतों को समझने की चेतना नहीं होती या फिर वह उनकी उपेक्षा कर जाता है और बाद में पछतावे के सिवा कुछ शेष नहीं रहता।

कई ऐसी लोकमान्यताएं हैं जिन्हें अंधविश्वास कहकर ठुकरा

होने वाले सूक्ष्म संकेत ही हैं, उदाहरण के लिए बिल्ली द्वारा रास्ता काट देने की घटना। यह मात्र अंधविश्वास नहीं, वरन् इसके पीछे पूर्ण प्रामाणिक आधार है। यह तो अब शोध से भी, वैज्ञानिक परीक्षणों से भी स्थापित हो चुका है कि कुत्ते एवं बिल्ली पराश्रव्य तरंगों को ग्रहण करने की सामर्थ्य रखते हैं और पारलौकिक जगत में घटित होने वाली प्रत्येक घटना पराश्रव्य तरंगों के माध्यम से ही जात हो सकती है। ये मूक पशु उनको स्पष्ट नहीं कर पाते किन्तु उससे विचलित होकर इधर से उधर भागने लगते हैं।

केवल पशु-पक्षी और प्रकृति के माध्यम से ही नहीं वरन् अन्य ग्रहों के भी संकेत पृथ्वी तल को प्राप्त होते रहते हैं। यह बात और है कि अभी पृथ्वी के व्यक्ति और वैज्ञानिक उन संकेतों को समझने में सक्षम नहीं हो पा रहे हैं, किन्तु इस बात को विश्व के सभी वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं कि अन्य ग्रहों से भी पृथ्वी ग्रह से सम्पर्क साधने की कोशिशें की जा रही हैं। उनकी सभ्यता और विज्ञान संभवतः पृथ्वी ग्रह से अधिक श्रेष्ठ हैं और वे संकेतों के माध्यम से अनेक उपायों द्वारा पृथ्वी ग्रह को विभिन्न विपदाओं और प्राकृतिक विनाश-लीलाओं से बचाने की चेष्टा करते ही रहते हैं।

भविष्य के गर्भ में झांकना कौतूहल से भी अधिक अपने आप में सम्पूर्ण ज्ञान और विज्ञान है जिसकी उपेक्षा भारतीय मनीषियों ने कदापि नहीं की और यही कारण था कि उनका जीवन सुखी, सन्तुष्ट व परिपूर्ण रहा। किसी भी प्राचीन ग्रंथ का अध्ययन करके देखें, यही स्पष्ट होता है कि वे अपना पूरा का पूरा जीवन भगवत् चिंतन और ब्रह्म-विषयक चिंतन में ही व्यतीत करते थे और ऐसा तभी संभव था जब वे अपने इस भौतिक जीवन के प्रति सुनिश्चित थे। न वे वनवासी थे, न वे कोपीन धारी। संयुक्त परिवार और सुसंगठित समाज में रहने वाले आर्य मनीषी केवल अपने भविष्य को समझते हुए अपने जीवन को प्रत्येक रूप से सुखी व संतोषजनक बनाते हुए अगे बढ़कर उन चिंतनों में संलग्न हो सके, जिनका आधार आज तक हमारे जीवन में तो है ही, तथाकथित विज्ञान भी ज्ञान के उन्हीं चिंतनों को अपना आधार बना रहा है।

पूर्वकाल में जहां भविष्य संकेत प्राप्त करने की विधि व्यक्ति की विकसित चेतना और प्रज्ञा होती थी वहीं कालान्तर में केवल प्रयोग के रूप में ऐसे उपाय ढूँढ़े गये जिनके द्वारा भविष्य को जानने की क्रियाएं सुलभ व सहज हो गईं।

व्यक्ति का मानसिक स्तर कुछ भी हो परन्तु यह प्रयत्न किया गया कि वह भी भविष्य के ज्ञान का लाभ प्राप्त कर-

सके। यह एक कठिन कार्य है कि प्रत्येक व्यक्ति तपस्या कर अपनी प्रज्ञा विकसित कर उस स्तर पर पहुंचे, जहां भूत, भविष्य, वर्तमान एक साथ देख सकें और तब विशेष प्रयोग, तांत्रोक्त साधना महत्वपूर्ण हो जाती है।

छाया पुरुष साधना एक ऐसी ही साधना है। छाया पुरुष साधना में सिद्धि प्राप्त कर व्यक्ति जब निश्चित रूप से ऐसी क्षमता प्राप्त कर लेता है कि उसे न केवल अपने भविष्य का वरन् किसी के भी भविष्य का ज्ञान प्रामाणिक रूप से जात हो जाता है। केवल जात हीं नहीं होता साथ ही साथ उसकी आंखों के सामने भविष्य का चित्र भी खिंच जाता है।

साधना विधान

यह साधना कर्ण पिशाचिनी साधना के समान ही है किन्तु कर्ण पिशाचिनी साधना जहां तामसिक साधना है, वहीं यह राजसी साधना है। शनिवार रात्रि को साधक लगभग दस बजे स्नान करं काली धोती पहन, काले आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठे और अपने सामने काले तिलों की ढेरी पर छाया पुरुष यंत्र को स्थापित कर दे, फिर सिन्दूर का तिलक करे और दीपक जलाने के बाद उसका तेल अपने तलवों में लगा कर हकीक माला से निम्न मंत्र की 3 माला मंत्र जप करे।

मंत्र

**ॐ जलौं हौं भविष्य छायापुरुषाय सिद्धये
कथय दर्शय हौं जलौं फट्**

दूसरे दिन प्रातः सूर्योदय के पूर्व ही साधक उस यंत्र और माला को लाल वस्त्र में बांधकर जहां तीन रास्ते मिलते हों, वहां रख दे और बिना पीछे देखे घर वापिस आ जाए, रास्ते में यदि ऐसा लगे कि कोई उसे आवाज दे रहा है तब भी पीछे मुड़ कर न देखे, घर आकर स्नान करने के उपरान्त संक्षिप्त गुरु पूजन कर, पांच माला गुरु मंत्र का जप कर इस साधना को पूर्णता दें।

भविष्य में जब कभी भी किसी का भविष्य जानना हो तब उपरोक्त मंत्र का 11 बार मन ही मन उच्चारण करें और तभी उसके सम्पूर्ण भविष्य का चित्र आंखों के सामने उपस्थित हो जाता है।

केवल एक रात्रि के प्रयोग से यदि अपने सम्पूर्ण जीवन को व्यवस्थित कर लेने के लिए, भावी अनिष्ट को पहले से जानकर बचने का मार्ग मिल रहा हो, तो उसमें कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए।

साधना सामग्री - 330/-

काल ज्ञान की दो श्रेष्ठ साधनाएं

कर्ण पिशाचिनी साधना

पूजा व्रत मंत्र साधना

प्रकृति की ओर से व्यक्ति को प्रतिक्षण संकेत मिलते ही रहते हैं, प्रकृति प्रतिक्षण उसकी सहायक बनकर उसे जाग्रत व चेतन करने का प्रयास करती ही है किन्तु या तो व्यक्ति के अंदर उन संकेतों को समझने की चेतना नहीं होती या फिर वह उनकी उपेक्षा कर जाता है और बाद में पछतावे के सिवा कुछ शेष नहीं रहता।

कर्ण पिशाचिनी

कल्पना कीजिए कि आप किसी महत्वपूर्ण व्यापारिक समझौते को करने जा रहे हैं किन्तु दूसरे व्यापारी का पूरा

पूछने पर उसे सही उत्तर दे देती है तथा उसे कोई अन्य नहीं देख पाता।

कर्ण पिशाचिनी साधना

ज्ञान नहीं है, या कहीं पर विवाह हेतु लड़के का चरित्र सही - यह प्रयोग 11 दिन का है। इसमें कांसे की थाली में सिन्दूर सही पता नहीं लग रहा है, या किसी व्यक्ति को आप बहुत से त्रिशूल बनाकर उस पर 'कर्ण पिशाचिनी यंत्र' स्थापित ईमानदार समझ कर अपने संस्थान में किसी महत्वपूर्ण पद पर करें, उसका पूजन करें और दिन में गाय के शुद्ध धी का दीपक रखने की सोच रहे हैं, लेकिन उसके मन में मौका मिलते ही जला कर, 'काली हकीक माला' से 11 माला मंत्र जप करें, कोई गड़बड़ी कर देने की योजना है - दैनिक जीवन में तो रात में भी इसी प्रकार त्रिशूल का पूजन कर धी का और तेल, सैकड़ों तरह के व्यक्तियों से मिलना जुलना पड़ता है लेकिन दोनों का दीपक जलाकर 11 माला मंत्र जप करें।

पग-पग पर धात मिलने की संभावना बनी ही रहती है।

व्यक्ति क्या करे कि वह निश्चिंत होकर जीवन जी सके?

इस प्रकार 11 दिन तक प्रयोग करने पर कर्ण पिशाचिनी व्यक्ति की जाती है और उसे कान में प्रश्न का उत्तर सही-सही भविष्य की जानकारी की आवश्यकता हो। कहीं-कहीं ऐसी चाहिए और यथा सम्भव काले वस्त्र धारण करने चाहिए। स्थिति भी बन जाती है, जहां किसी के भूतकाल को जानना साधना काल में व्यर्थ बातचीत न करें तथा ब्रह्मवर्य व्रत पालन आवश्यक हो जाता है और तभी या तब ही हम कोई सही आवश्यक हैं।

निर्णय लेने में समर्थ हो पाते हैं। पंचांगुली साधना के द्वारा जहां भविष्य जानने की एक अपूर्व साधना सम्पन्न की जा सकती है, वहीं किसी व्यक्ति का भूतकाल अथवा उसके मन में क्या चल रहा है, यह जानने की सर्वश्रेष्ठ साधना कर्ण पिशाचिनी मानी गई है। पिशाचिनी शब्द से अत्यधिक भ्रम होता है,

लेकिन जहां इस साधना के तामसिक रूप हैं वहीं सौम्य रूप भी हैं। साधकों का ऐसा अनुभव रहा है कि सौम्य रूप में साधना में थोड़ी सी त्रुटि साधक के लिए नुकसानदायक हो साधना करने पर कर्ण पिशाचिनी किसी विकृत स्वरूप में न सकती है। साधना को सम्पन्न करने के पश्चात् यंत्र तथा

प्रकट होकर अत्यन्त सौम्य और उत्तेजक सौन्दर्य की स्वामिनी माला नदी में प्रवाहित कर दें।

बनकर प्रकट होती है तथा साधक के द्वारा मन ही मन प्रश्न

दर्शय मम भविष्यं कथय कथय हीं कर्णपिशाचिनी स्वद्वर //

मंत्र

॥ उ३० नमः कर्ण पिशाचिनी अमोद्य सत्यवादिनि
मम कर्णे अवतरावतर अतीतानागतवर्तमानि दर्शय
दर्शय मम भविष्यं कथय कथय हीं कर्णपिशाचिनी
स्वद्वर //

कर्ण पिशाचिनी साधना आसान दिखाई देती है, परंतु इस साधना में थोड़ी सी त्रुटि साधक के लिए नुकसानदायक हो सकती है। साधना को सम्पन्न करने के पश्चात् यंत्र तथा प्रकट होकर अत्यन्त सौम्य और उत्तेजक सौन्दर्य की स्वामिनी माला नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 360/-

भविष्य संकेत के लिए पंचांगुली साधना

सभी की उत्सुकता का केन्द्र 'भविष्य' का ज्ञान अर्जित करने के लिए 'पंचांगुली साधना' सर्वश्रेष्ठ मानी गई है, जिसके माध्यम से अपने या किसी भी व्यक्ति के भूत, भविष्य और वर्तमान को आसानी से जाना जा सकता है।

पंचांगुली देवी कालज्ञान की देवी हैं, जिनकी साधना कर साधक को होने वाली घटनाओं व दुर्घटनाओं का पूर्वानुमान हो जाता है तथा इसी साधना के द्वारा हस्त विज्ञान में पारंगत हुआ जा सकता है और भविष्यवक्ता बना जा सकता है।

पंचांगुली साधना के माध्यम से सामने वाले को देखकर उसका भविष्य पूर्णरूप से ज्ञात हो जाता है, वह स्वयं भी अपने आपात्कालीन संकटों का पूर्वाभास कर अपने जीवन की रक्षा अपने आप कर सकता है, किसी भी व्यक्ति के भविष्य के प्रत्येक क्षण को अक्षरशः जान सकता है, और घटित होने वाली दुर्घटनाओं की पूर्व जानकारी देकर उन्हें सावधान कर सकता है।

साधना विधि

- इस साधना को करने के लिए 'पंचांगुली यंत्र व चित्र', जो प्राण प्रतिष्ठायुक्त एवं मंत्र-सिद्ध हो, प्रयोग करना आवश्यक होता है।
- यह साधना शुक्ल पक्ष की किसी भी द्वितीया, पंचमी, सप्तमी या पूर्णमासी को की जा सकती है।
- यह साधना प्रातः कालीन है, इसे ब्रह्म मुहूर्त में ही करना चाहिए।
- इस साधना को किसी एकांत स्थल या पूजा स्थल में ही, जहां शोर न हो, सम्पन्न करना चाहिए। यह सात दिन की साधना है।
- पीले आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुँख करके, पीले वस्त्र धारण कर तथा गुरु चादर ओढ़ कर बैठ जायें।
- फिर एक बाजोट पर 'पंचांगुली देवी का चित्र व यंत्र' स्थापित कर दें। यंत्र को किसी ताम्र प्लेट में रखें।
- यंत्र पर कुंकुम से 'स्वस्तिक' का चिह्न बनायें।
- सबसे पहले गणपति का ध्यान करें, फिर संक्षिप्त गुरु-पूजन करें।
- हाथ में जल लेकर मंत्र-जप करने का संकल्प करें।
- निम्नलिखित पंचांगुली मंत्र का 7 दिन तक नित्य 21 बार इस मंत्र का जप करें।

मनुष्य स्वभावतः इसी बात के लिए उत्सुक रहता है, कि वह अपने भविष्य को जान सके। अनेकों रहस्यमय प्रश्न उसके मानस में उठते रहते हैं - वया ऐसी कोई शक्ति ब्रह्माण्ड में है, जिसका सम्बन्ध हमसे स्थापित हो? वया ऐसी कोई युक्ति है, जिसके माध्यम से हम अपना भूत, भविष्य और वर्तमान स्पष्ट रूप से देख सकें? ऐसे अनेकों प्रश्न उसके मानस पटल पर अंकुरित होते रहते हैं।

मंत्र और यंत्र ही ऐसी दो अक्षय निधियां हैं, जिनके माध्यम से अपने जीवन में परिवर्तन लाया जा सकता है और सुखी, सफल एवं सम्पन्नतायुक्त जीवनयापन किया जा सकता है।

मंत्र

ॐ नमो पंचांगुली पश्शरी माता मवंगल वशीकरणी लोहमय दंडमणिनी चौंसठ काम विहंडनी रणमध्ये रातलमध्ये शत्रुमध्ये दीपामध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये झोटिजमध्ये डाकिनीमध्ये शंखिनीमध्ये यक्षिणीमध्ये दोषणीमध्ये जणमध्ये गारुणीमध्ये दिनासिमध्ये दोषमध्ये दोषशरणमध्ये दुष्मध्ये घोर कष्ट जड़ावे चिन्ते चिन्तावे तस माथे माता पंचांगुली देवी तणे वज्र निर्धर एड़े ॐ ठं ठं ठं स्वाहा ॥

- मंत्र-जप करने का समय निर्धारित होना चाहिए।
- जप काल में ध्यान रखने योग्य बातें - ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें। नित्य साधना से पूर्व स्नान करें। भूमि शयन करें। शुद्धता एवं पवित्रता का ध्यान रखें। अधिक-से-अधिक मौन रहने का प्रयत्न करें। मांस-मदिरा का त्याग करें। सात्त्विक भोजन ही ग्रहण करें। मंत्र-जप पूरी निष्ठा के साथ करें। मंत्र-जप के समय ज्यादा हिलें-डुलें नहीं और न ही जप के बीच में उठें। ★ साधना काल में दीपक जलते रहना अनिवार्य है।
- साधना-समाप्ति के पश्चात् समस्त सामग्री को किसी नदी या कुंए में विसर्जित कर दें।

इस प्रकार पूर्ण विश्वास के साथ की गई साधना से मंत्र की सिद्ध होती ही है तथा उस साधक को भूत, भविष्य एवं वर्तमान की सिद्धि हो जाती है।

माया तो इस संसार का नियम है

→ भ्रम अविश्वास को तोड़कर जीवन शेष बनाना है

→ इसका एक मात्र मार्ग

गुरु से जुड़ना और गुरु सेवा ही है

व्यक्ति के जीवन मार्ग को रपट करता यह आलेख

इस विश्व में माया के प्रकाश और अंधकार से बचाव का रास्ता केवल गुरु सेवा है, गुरु का सामीप्य है; क्योंकि सेवा का निर्माण करता रहता है। द्वारा ही हम समीप हो सकते हैं।

सही रास्ता एवं उसके महत्व का दिग्दर्शन कराने वाले केवल वही हैं...

सारा संसार माया के विविध रूपों में घिरा हुआ है। हमारे चिन्तन का स्वरूप भी माया के जालों से बुना हुआ है। जब भी कोई लेखक सामान्य से सामान्य विषय पर भी कोई लेख लिखता है, तो रामायण और महाभारत जैसे विशेष धार्मिक दुर्भावनाओं के साथ-साथ धर्म-कर्म, अध्यात्म, दर्शन आदि अन्य विषयों का भी ज्ञान मिलता है।

इतना सब कुछ जानने के बाद भी हम अंधकार में फूंके ही रहते हैं। फलस्वरूप हम अपनी मनो-भावनाओं का परित्याग करने में असफल ही रहते हैं।

माया, जिसे रामायण में निशाचर कहा गया है, एक ऐसी दीवार है, जिसको गिराना सामान्य व्यक्तियों के लिए संभव नहीं है। हम अपने ही बनाये हुए जालों में उलझकर रह जाते हैं और हम चाहकर भी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाते हैं।

सामान्य मनुष्यों को माया ने किसी न किसी रूप में जकड़ रखा है, वह साकार रूप में भी तथा निराकार रूप में भी सबको अपने जाल में उलझाये हुए है, बड़े-बड़े संत-संब्यासी, सिद्ध, ऋषि-मुनि भी, यहां तक कि देवगण भी इस जाल में उलझ जाते हैं।

मनुष्य मकड़े की तरह भौतिक साधनों को जुटाने में ही जालों अन्तर्स् में निहित है। इसका विकास तथा इसकी पहचान ही मनुष्य का लक्ष्य है, उद्देश्य है।

यह माया ही हमारे विकास के मार्ग में एक बाधा है, माया का जाल जिन्दगी के हर दौर में अपनी करामात दिखाता ही रहता है। केवल साधु-संत ही इस निशाचरी माया की दीवार लगता है, किन्तु इसको तोड़ पाना अंधकार से प्रकाश में किन्तु इसको तोड़ पाना अंधकार से प्रकाश में जाना है। इसकी पकड़ बड़ी मजबूत है।

यदि राह चलते समय किसी गिरे पथिक को धायल अवस्था में देखें, तो संभवतः हमारे मन में एक दया-भाव उत्पन्न हो, ऐसा भी संभव है, कि हम उसकी कुछ सहायता भी कर दें, किन्तु दिल में उतनी तड़प पैदा नहीं हो सकती, जितनी कि उसी अवस्था में अपने किसी स्वजन को या परिवार के किसी सदस्य को या किसी आत्मीय को देखकर होगी। उस अपरिचित राही को हम प्रायः थोड़े ही समय में भूल जायेंगे, किन्तु अपने आत्मीय की भुलाना संभव नहीं होगा। बार-बार हमारा ध्यान उसी तरफ जायेगा, भले ही हम किसी अन्य स्थान में, उससे दूर हों, जहां से कुछ करना भी संभव न हो। इसे ही माया, महामाया का पर्दा कहा जा सकता है। यही वह बन्धन है, जिससे मनुष्य छुटकारा नहीं पाता है। ऐसे समय हम यह कहकर छुटकारा पा लेते हैं, कि वह अपना नहीं था। हम क्यों किसी के लिए अपना समय बर्बाद करें?

- लेकिन क्या आपने इस विषय में कभी गहराई से सोचा, कि अपना कौन है, कौन पराया...?

इन्सान की मृत्यु के समय उसकी पत्नी, पुत्र, भाई, माता-पिता या अन्य कौन परिजन उसका साथ देता है? कौन होता है उस समय अपना?

पूजा-पाठ हमारी मनोभावना का साकार रूप है। प्रार्थना भी हम अपनी निजी भावना से करते हैं। शांति के लिए यह एक पथ है, रास्ता है। यह हमारी एक साकार अभिव्यक्ति है, जो कि मानसिक एवं भावनात्मक है, अपने मन को, अपने अन्तर्मन को जाग्रत करने का एक मार्ग है, एक साधन है।

संसार के सभी जीवों की जीवन-शैली एक दूसरे से भिन्न है, मगर निशाचरों से अर्थात् माया से सभी घिरे हुए हैं, चाहे इंसान हो या पशु-पक्षी।

इन सभी विषयों पर प्रकाश डालने के लिए समय-समय पर साधु-संतों, गुरुओं तथा महापुरुषों का आगमन होता रहता है। ऐसे लोग माया के बन्धन को तोड़ सके तथा समाज एवं देश-काल के भाल पर ज्योति जगा सके। आज भी हम जिनका अनुसरण एवं स्मरण करते हैं। शंकराचार्य, रामकृष्ण परमहंस तुलसी, कबीर, सूर, विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, गोरखनाथ आदि ऐसे अनेकानेक महापुरुष हुए, जो कि इस मायाजाल को तोड़कर अपना नाम अमर कर सके।

महाभारत के युद्ध में अर्जुन माया से ही घिरा था। आस्था से अधिक दान भी कर्ण के लिए माया ही थी, जिसके कारण उसे भी हार का मुंह देखना पड़ा, अन्यथा कर्ण को मारने के लिए भगवान कृष्ण को भी सोचना पड़ जाता।

हमारे धर्म ग्रन्थों में माया के अनेक रूप बताये गये हैं - बिना समझे किसी को वचन देना या किसी प्रश्न का उत्तर देना, दुश्मनों पर विश्वास कर लेना, बिना सोचे समझे कुछ देना या लेना, इसी प्रकार अनजाने में कार्य का होना भी माया के रूप हैं।

माया के रूपों का वर्णन करना संभव ही नहीं है। विनाश के कार्य में लगे रहना, अंधकार या अज्ञान में रहना भी माया के रूप हैं और जब तक हम माया के जाल से बाहर नहीं आते, तब तक मानसिक चेतना का विकास संभव नहीं है। जब तक यह विकास नहीं होगा तब तक हम स्वयं को पहचान नहीं सकते। दोस्त-दुश्मन, अपना-पराया ये सभी रिश्ते माया के बन्धन ही हैं।

विनाश की जड़ 'क्रोध' है। क्रोध तो ज्ञानियों को भी भ्रमित अपने आप को पहचान सकें।

हमारे धर्म ग्रन्थों में माया के अनेक रूप बताये गये हैं - बिना समझे किसी को वचन देना या किसी प्रश्न का उत्तर देना, दुश्मनों पर विश्वास कर लेना, बिना सोचे समझे कुछ देना या लेना, इसी प्रकार अनजाने में कार्य का होना भी माया के रूप हैं।

करके मायाजाल में उलझा देता है।

महाराजा दशरथ को 'प्रेम' (राम के प्रति) ने मृत्यु का ग्रास बना लिया, कैकेयी तथा मन्थरा ने भी इस जाल को नहीं समझा। सामान्यतः इसे कोई समझ ही नहीं पाता है। दशरथ के हाथों अनजाने में श्रवण कुमार की मृत्यु तथा उसके माता-पिता का श्राप - ये सब माया के ही स्वरूप हैं।

महाभारत के युद्ध से पहले, अर्जुन को भी जब माया ने घेरा, तो उस माया जाल से श्री कृष्ण ने उसे उबारा। काफी समझाने पर भी अर्जुन का संशय नहीं गया, तो भगवान कृष्ण को अपना विराट स्वरूप दिखाना पड़ा।

सामान्य मनुष्यों को माया के किसी न किसी रूप ने जकड़ रखा है, वह साकार रूप में भी तथा निराकार रूप में भी सबको अपने जाल में उलझाये हुए हैं, बड़े-बड़े संत-संन्यासी, सिद्ध, ऋषि-मुनि भी, यहां तक कि देवगण भी इस जाल में उलझ जाते हैं।

इस बन्धन को तोड़ने का, इससे उबरने का केवल एक ही मार्ग है, एक ही विकल्प है - गुरु चरणों में अपने को पूर्णरूप से विसर्जित कर देना। गुरु के समीप जाते ही ये बन्धन ढीले पड़ जाते हैं, इसे तोड़ने के लिए गुरु सेवा ही एक साधन है, गुरु कृपा ही मार्ग है।

...क्योंकि सही रास्ते पर चलाना, रास्ते का महत्व एवं मार्ग प्रशस्त करने वाले केवल गुरु ही हैं और गुरु-शिष्य का सम्बन्ध तो युगों-युगों का है, क्योंकि यह सम्बन्ध शरीर का नहीं बल्कि आत्मा का सम्बन्ध है।

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध पिता-पुत्र की ही तरह है और शास्त्रों के अनुसार उससे भी ऊंचा है।

गुरु इस संसार में आते हैं तो केवल इसीलिए, कि वे अपने शिष्यों को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जा सकें उन्हें वह मार्ग बता सकें, उन्हें उनका लक्ष्य बता सकें।

उन्हें माया के बन्धनों से मुक्त करके उस प्रकाश के दर्शन करा सकें।

उस आनन्द रस से उन्हें सराबोर कर सकें और शिष्य अपने आप को पहचान सकें।

शिष्य धर्मी

क्या आप ऐसे शिष्य हैं?

शिष्य द्वारा अपने हृदय में गुरु को धारण करना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु यह तो प्रारम्भ मात्र है, जैसा कि एक बार पूज्य गुरुदेव ने कहा था-

“यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है, कि गुरु को कितने शिष्य याद करते हैं? यह श्री उतना महत्वपूर्ण नहीं है, कि ‘गुरु’ शब्द को कितने शिष्यों ने अपने हृदय पटल पर अंकित किया है? यह श्री उतना महत्वपूर्ण नहीं है, कि कितने शिष्य गुरु सेवा करने की कामना अपने दिल में रखते हैं? यह श्री उतना महत्वपूर्ण नहीं है, कि कितने शिष्य गुरु की प्रसन्नता हेतु सर्वेष्ट हैं?”

“-अपितु अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है, कि गुरु कितने शिष्यों को याद करता है?”

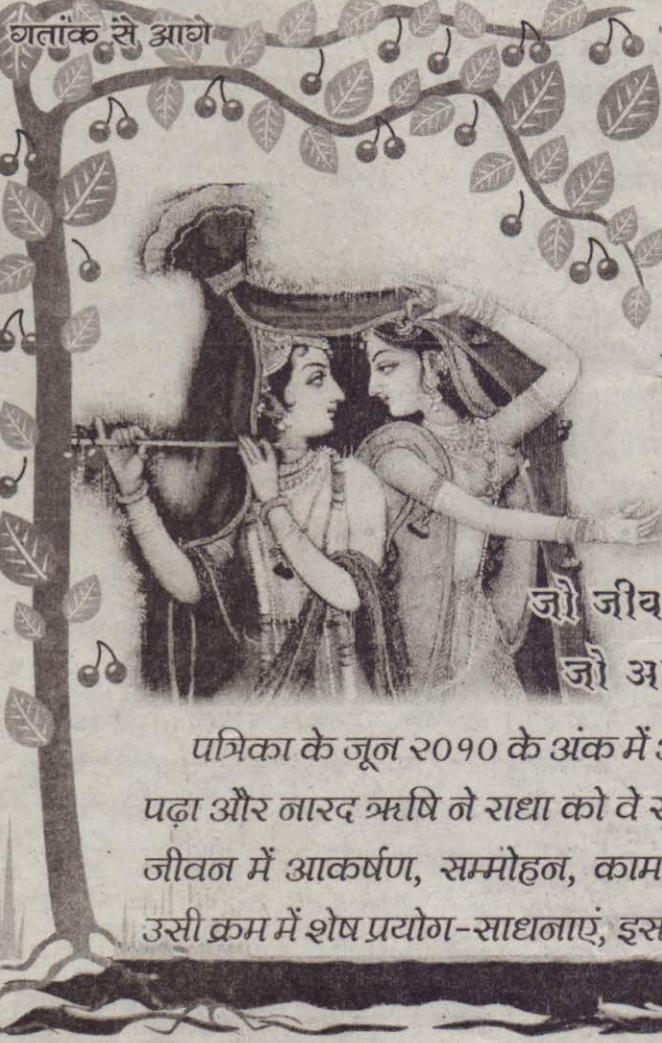
“-अपितु अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है, कि गुरु के होठों पर कितने शिष्यों का नाम आता है?”

“-अपितु अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है, कि कितने शिष्यों के नाम गुरु के हृदय पटल पर खुदे हुए हैं?”

“-अपितु अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है, कि गुरु ने किस शिष्य की सेवा स्वीकार की है?”

“-अपितु अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है, कि गुरु किस शिष्य पर प्रसन्न हुआ है।”

और गुरु के होठों पर शिष्य का नाम उच्चरित हो, गुरु के हृदय पटल पर शिष्य का नाम अंकित हो, गुरु सेवा का अवसर प्राप्त हो तथा शिष्य के कायों से गुरु प्रसन्न हों, यह शिष्य जीवन का परम सौभाग्य है तथा प्रत्येक शिष्य की यही प्राथमिक इच्छा होती है। जिस शिष्य को ऐसा दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त होता है, वह देव तुल्य हो जाता है, उसके जीवन से सभी पाप, दुःख, पीड़ा, समस्याएं आदि दूर हो जाती हैं, अणिमादि सिद्धियां उसके सामने नृत्य करती हैं, उसका व्यक्तित्व करोड़ों सूर्य से श्री ज्यादा तेजस्वी हो जाता है। गुरु सेवा कोई आवश्यक नहीं है, कि शारीरिक रूप से गुरु गृह में रह कर ही सम्पन्न की जाय, अपितु महत्वपूर्ण गुरु सेवा यह है, कि शिष्य कितना अधिक गुरु द्वारा प्राप्त ज्ञान के द्वारा लोगों को लाभान्वित करता है तथा कितने अधिक लोगों को गुरु से जोड़ने का कार्य करता है निःस्वार्थ, निष्कपट भाव से।



१६

अस्त्रिकृष्णीया प्रस्तुतिः

जो आपके लिए आवश्यक हैं

जो जीवन की षोडश कलाओं से सम्बन्धित है
जो आनन्दप्रद सांसारिक जीवन के तत्व है

पत्रिका के जून २०१० के अंक में आपने नारद-ऋषि और राधा का संवाद पढ़ा और नारद ऋषि ने राधा को वे सभी साधना तत्व प्रयोग स्पष्ट किये जो जीवन में आकर्षण, सम्मोहन, काम, तेज, सौन्दर्य यश से सम्बन्धित थे। उसी क्रम में शेष प्रयोग-साधनाएं, इस अंक में -

शुक्र तेजस प्रयोग

राधा ने जहां इस प्रयोग द्वारा कृष्ण को पूरी तरह से अपनी ओर आकर्षित करने में सफलता प्राप्त की, वहाँ इसकी मदद से वह अपने विरोधियों के ऊपर भी हावी हो सकी। उस समय राधा के विरोध में उसके सुसराल वाले एवं अन्य गांव के लोग थे, परन्तु इस प्रयोग के सम्पन्न होते ही वे सभी तेजहीन हो गए और उसके बाद कभी भी उसके समक्ष कुछ बोलने की हिम्मत न कर सके... यह वास्तव में ही अद्भुत प्रयोग है, और जीवन में कुछ कर गुजरने की इच्छा रखने वालों को यह प्रयोग करना ही चाहिए।

यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार को रात्रि दस बजे के उपरान्त आरम्भ करना चाहिए। साधक रात्रि को स्नान आदि से निवृत हो पूर्वाभिमुख होकर श्वेत आसन पर बैठें और अपने समक्ष श्वेत वस्त्र से ढंके बाजोट पर 'शुक्र तेजस यन्त्र' स्थापित करें, उसका पूजन करें। फिर 'सौन्दर्य माला' से निम्न मंत्र की 6 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥३५० शं शुक्राय कम्देव रत्नै फट॥

यह सात दिवसीय साधना है, जिसके उपरान्त साधक को सभी पूजन सामग्री की फेटली बनाकर किसी जलाशय में अर्पित कर देना चाहिए। ऐसा करने से साधना फलीभूत होता है एवं इच्छित फल प्राप्त होता ही है।

साधना सामग्री - 195/-

आठविं मद्वन प्रयोग

वास्तव में इस प्रयोग की कोई समानता नहीं, इस प्रयोग का कोई मुकाबला नहीं। इस प्रयोग को अगर सर्वश्रेष्ठ कहा जाय, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं...

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के उपरान्त ही राधा का सौन्दर्य हजारों गुण बढ़ा और उसका सारा व्यक्तित्व एक अग्निस्फुलिंग की भाँति चमक उठा। कृष्ण पूरी तरह से उसके प्रणय पाश में बंध गए... और इतिहास साक्षी है, कि

कृष्ण की हजारों पत्नियां एवं सुकिमणी, सत्याभामा, जामवंती आदि आठ पटरानियां होने के उपरान्त भी आज मन्दिरों में कृष्ण के साथ राधा की ही मूर्ति स्थापित होती है... यह निश्चित रूप में प्रेम और इस अद्वितीय प्रयोग की पराकाष्ठा है...

यह प्रयोग किसी भी रविवार से प्रारम्भ करना चाहिए। यह साधना चार दिवसीय है और नित्य साधक को उगते हुए सूरज को जल अर्पण करना चाहिए। यह प्रयोग रात्रि को करना चाहिए। साधक को चाहिए, कि वह स्नान आदि कर, पीले वस्त्र धारण कर, पीले आसन पर उत्तराभिमुख होकर बैठे और अपने सामने पीले वस्त्र से ढके बाजोट पर 'अग्नि मद्न यंत्र' स्थापित कर उसका संक्षिप्त पूजन करे। 'अग्निस्फुलिंग माला' से निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

//ॐ अग्निश्चेतनर्यै नमः //

इस अवधि में साधक को एक बार भोजन कर भूमि शयन करना चाहिए। साधना की समाप्ति के बाद यंत्र एवं माला को किसी जलाशय में अर्पित कर देना चाहिए। ऐसा करने से यह प्रयोग सिद्ध होता है, और साधक की संभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

साधना सामग्री - 240/-



इन्द्र प्रयोग

इस प्रयोग की यह विशेषता है, कि इसमें व्यक्ति को हर हालत में सफलता मिलती ही है। इसके प्रभाव से जहां उसका व्यक्तित्व सौन्दर्यवान्, सम्मोहन युक्त होता है वहीं उसका प्रिय भी उसके प्रति अत्यधिक आकृष्ट होता है... इस प्रयोग से धन, मान, यश, सम्पदा का भी व्यक्ति के जीवन में आगमन होता है।

इस प्रयोग से जहां राधा की तस्वीर पल-प्रतिपल कृष्ण की आंखों में समा गई, जहां कृष्ण हमेशा उसको स्मरण करते रहते, वहीं इसके प्रभाव से राधा पूर्ण वैभव एवं यश की भी भागीदार हो सकी... और आज तक उसका नाम जीवित है...

यह प्रयोग किसी भी सोमवार से आरम्भ करना चाहिए। यह रात्रिकालीन पांच दिवसीय साधना है। साधक रात्रि दस बजे के उपरान्त स्नान आदि कर, पूर्व की ओर मुख कर श्वेत आसन पर बैठे और अपने सामने 'इन्द्र सम्मोहन यंत्र' स्थापित करे, उसका पूजन करे और, फिर 'विद्युत मोहिनी माला' से निम्न मंत्र की 7 माला मंत्र जप करें -

प्रेम के बिना जीवन उक ऐसे वृक्ष के समान है जिस पर ना कोई फूल हो, ना कोई फल, प्रेम के बिना सौन्दर्य ऐसे पुष्प के समान है जिसमें सुगन्ध नहीं है, ऐसे फल के समान है जिसमें बीज नहीं है। क्योंकि प्रेम आत्मा से होता है शरीर से नहीं और जो दूसरों से प्रेम कर सकता है वहीं डापने आप से प्रेम कर सकता है और सच्चा प्रेम मन की आंखों से देखता है, प्रेम ही स्वर्ग का मार्ग है। प्रेम ही पूजा है। प्रेम उक ऐसी तपस्या है जो जैसे-जैसे तीव्र होती है वैसे-वैसे मनुष्य को कंचन के समान श्रेष्ठ बना देती है। जिसने डापने दिन की शर्कआत प्रेम से कर दी उसका जीवन का वह दिन श्रेष्ठ बन जाता है।

प्रेम देहगत नहीं अपितु मन ऊपी अश्व पर सवार होकर तीव्र शक्ति से चलता है और प्रेम प्रश्ट होता है, नेत्रों से, भ्राव भंगिमा से, प्रेम प्रकट होता है शरीर के रोम-रोम से और जब मनुष्य प्रेम मय हो जाता है।

मंत्र

//ॐ हर्म मोहय सम्मोहय ॐ //

यह मंत्र अत्यधिक तीव्र एवं शीघ्र प्रभाव देने वाला है, और आज तक यह कभी असफल नहीं हुआ। पांच दिनों तक नित्य 7 माला मंत्र जपें, और साधना समाप्ति के उपरान्त यंत्र और माला को किसी जलाशय में अर्पित कर दें। ऐसा करने से साधना सिद्ध होती है और साधक को सफलता प्राप्त होती है।

साधना सामग्री - 180/-



रति वश्य प्रयोग

यह प्रयोग बड़ा ही तीव्र है, और साधक को चाहिए, कि अनुचित कार्य के लिए इसका उपयोग न करे, अन्यथा विपरीत फल भोगना पड़ सकता है।

नारद ने भी राधा को यह प्रयोग देते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा था, कि अगर तुम अपने मन को मात्र कृष्ण से ही लगा सकती हो, तो इस प्रयोग को सम्पन्न करना, क्योंकि तुम्हारी छोटी सी भूल भी तुम्हारे लिए ही हानिकारक हो सकती है।

इस प्रयोग को सम्पन्न कर जहां राधा ने स्त्रीत्व के उच्च

आदर्शों एवं पवित्रता का स्थापन सम्भव किया, वर्हीं वह कृष्ण की भी प्रिय हो गई। वस्तुतः इसी प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद ही कृष्ण की चेतना उसकी देह में स्थापित हो सकी और वह स्वयं दिव्य बन सकी...

यह प्रयोग अति विशिष्ट है और किसी भी शुक्रवार को सम्पन्न करना चाहिए। रात्रि दस बजे के उपरान्त साधक श्वेत वस्त्र धारण कर पूर्वभिमुख होकर श्वेत आसन पर बैठे, और अपने सम्मुख श्वेत वस्त्र से ढके बाजोट पर 'रति वश्य यंत्र' स्थापित कर उसका विधिवत् पूजन सम्पन्न करे, फिर 'वशीकरण माल्य' से निम्न मंत्र की 11 मालाएं मंत्र जप करे-

मंत्र

॥३५०. अरक्षण सम्मोहय हीं कर्त्ती ॐ ॥

यह प्रयोग तीन दिवसीय है। साधक को तीन दिनों तक नित्य 11 माला मंत्र जप करना चाहिए और उसके बाद यंत्र और माला को किसी जलाशय में अर्पित कर देना चाहिए, ऐसा करने से प्रयोग फलीभूत होता है।

साधना सामग्री - 240/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

क्रोटि कन्दर्प लावण्य प्रयोग

कन्दर्प का संस्कृत में अर्थ होता है 'कामदेव', अतः इस प्रयोग का अर्थ निकलता है, वह साधना, जिसे सम्पन्न करने से व्यक्ति के अन्दर करोड़ों कामदेवों का लावण्य एवं सौन्दर्य स्थापित हो जाता है... यह प्रयोग अपने आप में ही बेजोड़ है और इसे सम्पन्न करने मात्र से व्यक्ति त्रिलोक पर प्रभुत्व स्थापित करने में सक्षम हो जाता है।

यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार से आरम्भ करना चाहिए। इसमें 'कन्दर्प लावण्य यंत्र', 'अनंगास्त' एवं 'सौन्दर्य हकीक' की माला को सम्मोहन मंत्रों से आपूरित करने की आवश्यकता पड़ती है।

शुक्रवार की रात्रि दस बजे के उपरान्त साधक पूर्वभिमुख होकर श्वेत आसन पर बैठे और अपने सामने श्वेत वस्त्र ढके बाजोट पर यंत्र स्थापित कर उसका पूजन सम्पन्न करे। इसके उपरान्त 'अनंगास्त' को यंत्र पर अर्पित कर अगर कोई इच्छा विशेष हो, तो उसका उच्चारण करे।

फिर सौन्दर्य हकीक माला से निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जप करे -

मंत्र

॥३५१ हीं हीं कन्दर्प अनंगास्त हीं हीं ॐ ॥

१५ 'जुलाई' 2010 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '48'

ऐसा पांच दिन तक करे। पांचवे दिन साधना समाप्ति के बाद यंत्र और माला को किसी जलाशय में प्रवाहित कर दें। ऐसा करने से प्रयोग सिद्ध होता है और व्यक्ति को कुछ ही दिनों के अन्दर अनुकूल परिणाम प्राप्त होने लगते हैं।

साधना सामग्री - 290/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

पुष्पदन्त प्रयोग

इस प्रयोग का वर्णन-विवरण उच्चकोटि के ग्रन्थों में प्राप्त होता है और इसके विषय में तो यह प्रचलित है, कि अगर इस प्रयोग को भली भांति सम्पन्न कर लिया जाय, तो जिस किसी पर यह वशीकरण प्रयोग करता है वह वशीभूत हो जाता है और साधक के अनुकूल हो जाता है।

इस प्रयोग की विशेषता यह है, कि जो भी इसको सम्पन्न करता है, उनके शरीर से स्वतः ही स्वच्छ पुष्पों की गन्ध प्रवाहित होने लगती है, और जो कोई भी उसके सम्पर्क में आता है, वह उसके सम्मोहन पाश में बंध जाता है...

राधा के बारे में प्रचलित है कि वह अनिन्द्य सौन्दर्यवर्ती थी और उसकी देह से निरन्तर कमल की गन्ध प्रवाहित होती रहती थी। वास्तव में यह इसी प्रयोग के प्रभाव से सम्भव हो सका।

साधक को चाहिए, कि शुक्रवार को स्नान आदि से निवृत होकर, स्वच्छ श्वेत धोती धारण कर श्वेत आसन पर पश्चिमाभिमुख होकर बैठे और अपने सामने श्वेत वस्त्र से ढके बाजोट पर 'पुष्पदन्त यंत्र' स्थापित कर उसका विधिवत् पंचोपचार पूजन सम्पन्न करे।

फिर 'पद्मा माला' से निम्न मंत्र की 8 माला मंत्र जाप करे -

मंत्र

॥३५२ कर्त्ती क्रम स्त्रियै नमः ॥

प्रयोग सम्पन्न होने के पश्चात् यंत्र और माला को जल में प्रवाहित करें।

साधना सामग्री - 230/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

नारायणी प्रयोग

कृष्ण स्वयं नारायण के अवतार थे और राधा भी लक्ष्मी का अंश लेकर उत्पन्न हुई थी। अतः नारद ने राधा के द्वारा नारायणी प्रयोग सम्पन्न कराकर इतिहास की ही पुनरावृत्ति की... यह प्रयोग अत्यधिक तीव्र और शीघ्र फल देने वाला है।

यह प्रयोग शुक्रवार के दिन से आरम्भ करना चाहिए।

साधक स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूर्व की ओर मुंह कर यह साधना करें। लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर हल्दी से चक्र बनाएं, चक्र के मध्य में अपना नाम लिखें, उस पर 'नारायणी यंत्र' स्थापित करें। इसके पश्चात् विधिवत् यंत्र का पूजन कुंकुम, पुष्प, अक्षत से करें। 'नारायण माला' से निम्न मंत्र की 5 माला नित्य करें -

मंत्र

॥३५ नरत्व हीं नारायणत्व श्रीं ॐ ॥

इसके उपरान्त समस्त पूजन सामग्री को किसी जलाशय में अर्पित कर दें। ऐसा करने से प्रयोग सिद्ध हो जाता है, और व्यक्ति की सभी अभिलाषाएं पूर्ण होती हैं।

साधना सामग्री - 280/-

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

विद्युत प्रभा प्रयोग

यह प्रयोग वस्तुतः कायाकल्प प्रयोग है और इसके सफलतापूर्वक सम्पन्न करने से व्यक्ति का सौन्दर्य करोड़ों गुण बढ़ जाता है। उसमें एक नवीन चेतना एवं स्फूर्ति व्याप हो जाती है एवं वह दीर्घायु होकर मान, सम्मान, यश, प्रतिष्ठा का अधिकारी होता है।

साधक को चाहिए कि, सोमवार के दिन स्नान आदि से निवृत्त होकर, स्वच्छ वस्त्र धारण कर, पूर्वाभिमुख होकर श्वेत आसन पर बैठे और अपने सामने श्वेत वस्त्र से ढके बाजोट पर 'विद्युतप्रभा यंत्र' स्थापित कर उसका पूजन सम्पन्न करे -

फिर 'कायाकल्प माला' से निम्न मंत्र की 15 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥३५ क्रौं क्रौं कायाकल्प श्रीं श्रीं ॐ ॥

यह प्रयोग चार दिन का है, जिसके उपरान्त यंत्र तथा माला किसी जलाशय में अर्पित कर दें। ऐसा करने से प्रयोग फलीभूत होता है।

साधना सामग्री - 210/-

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

वज्र वाराही प्रयोग

यह एक तीव्र तांत्रिक प्रयोग है और इसका प्रभाव अत्यधिक शीघ्र देखने को मिलता है। एक बात तो निश्चित है कि जो कोई भी इस अनिवर्चनीय प्रयोग का जानकार है उसने इसकी भूरी-भूरी प्रशंसा की है...

राधा को अपने समय में समाज की तरफ से न जाने कितने रूप से प्रयोग करना चाहती है, अगर वह स्थाई रूप से कृष्ण को प्रिय

एक और स्थान पर भगवान् ने कहा है :-

'रा' शब्द कुर्क्कलस्ती ददामि भतिष्मुत्तमम्।

'धा' शब्दं कुर्क्कल यज्ञाद् यामि श्रवणस्तेभतः ॥

"जब मैं किसी व्यक्ति से 'रा' शब्द का उच्चारण सुनता हूं तो मैं उस पर इतना प्रसन्न होता हूं कि मैं उसे 'अपनी उत्तम भक्ति' का वरदान दे देता हूं। जब कोई 'धा' बोलता है तो राधा का नाम निरन्तर सुनने के लोभ और आकर्षण से उसके पीछे-पीछे चल देता हूं ताकि वह पवित्र नाम मेरे कानों में गंजता रहे।"

षड्यन्त्र एवं धात-प्रतिधात सहन करने पड़े परन्तु इस प्रयोग को सम्पन्न करते ही सब उसके अनुकूल हो गए और वह अपने प्रिय कृष्ण को सम्पूर्ण रूप से प्राप्त कर सकी। इसी प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद राधा का शरीर मानो वज्र के गुणों से परिपूर्ण हो गया और फिर उसे आजीवन अस्त्र, शस्त्र, अग्नि, तंत्र प्रभाव आदि का भय नहीं रहा...

सोमवार के दिन स्नान आदि से निवृत्त होकर, स्वच्छ श्वेत धोती धारण कर पश्चिमाभिमुख होकर बैठना चाहिए और अपने सामने लाल वस्त्र से ढके बाजोट पर 'वज्र वाराही महायंत्र' स्थापित कर उसका विधिवत् पंचोपचार पूजन करना चाहिए।

फिर 'लाल हकीक माला' से निम्न मंत्र की 8 मालाएं मंत्र जप करें -

मंत्र

॥३५ कर्त्तीं वज्र दैरेचनीयै फट् ॥

ऐसा पांच दिन तक करें इसके बाद यंत्र और माला को किसी जलाशय में अर्पित कर दें। ऐसा करने से प्रयोग सफल होता है, और व्यक्ति किसी भी प्रकार के ज्ञात-अज्ञात भय, शत्रु बाधा, तंत्र बाधा से ग्रस्त नहीं होता है उसकी निरन्तर रक्षा होती रहती है।

साधना सामग्री - 180/-

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

मनोहरा प्रयोग

पन्द्रहवां प्रयोग, जो नारद ने राधा को गुप्त रूप से बताया था, वह था मनोहरा प्रयोग। ...और उन्होंने स्पष्ट शब्दों में राधा को आज्ञा दी थी, अगर वह स्थाई रूप से कृष्ण को प्रिय

४९९ राधा शब्द का अर्थ ही ‘कृष्ण भक्त’ है। राधा तो कृष्ण के लिये प्रेम का समुद्र है। इसीलिये पूरे

कृष्ण कानन कुंज में राधे-कृष्ण, राधे-कृष्ण की ध्वनि गूँजती है। कृष्ण भगवान है तो राधा उनकी आत्मा है। कृष्ण शक्ति के प्रदायक शक्तिमान है तो राधा उनकी शक्ति है। राधा कृष्ण का नारी स्वरूप है और यह स्वरूप सम्बन्ध शुद्ध उच्चतम एवं अविच्छिन्न सम्बन्ध है जिसे उन्होंने आपस में संगीत के माध्यम से, बांसुरी के माध्यम से, जान के माध्यम से प्रकट किया।

राधा और कृष्ण का प्रेम आत्मिक संबंध है, जब दो आत्माओं का मिलन होता है तो संसार की कोई भी दूरी क्षणिक लगती है। वह दूरी अनुभव ही नहीं होती है, होठों पर नाम आते ही नेत्रों में अश्रु और चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। वही प्रेम है और प्रेम का आधार निश्चित रूप से काम तत्व तो अवश्य है और कृष्ण ने तो काम तत्व को जीत कर राधा से प्रेम किया।

५०० लिए कृष्ण को अपने अनुकूल करना चाहती है तो फिर ‘मनोहरा प्रयोग’ आवश्यक ही नहीं, अति आवश्यक है...

राधा ने यह प्रयोग सम्पन्न किया, तो एकबारणी में ही उसका जीवन परिवर्तित हो गया। अब तक जो संशय-असंशय उसके मन में व्याप होता था, वह समाप्त हो गया। शरीर के सभी दोष एवं विकार विनष्ट हो गए और वह शुद्ध भाव से कृष्ण को अपने हृदय में उतार पाई, और स्वयं भी कृष्ण के हृदय में उतर सकी...

यह प्रयोग चार दिवसीय है और किसी भी शुक्रवार से इसको प्रारम्भ कर सकते हैं। इसमें निम्न उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है -

1. मनोहरा सिद्धि यंत्र, 2. मनोहरा माला।

किसी भी शुक्रवार के दिन स्नान आदि से निवृत्त होकर, स्वच्छ श्वेत धोती धारण कर उत्तराभिमुख होकर बैठें और अपने सामने श्वेत वस्त्र से ढके बाजोट पर ‘मनोहरा सिद्धि यंत्र’ स्थापित कर उसका पूजन सम्पन्न करें; फिर ‘मनोहरा माला’ से निम्न मंत्र की 15 मालाएं मंत्र जप करें -

मंत्र

॥३५ ॐ मनोहरारिण्यै सुर देव्यै ॐ ॐ ॥

४५ 'जुलाई' 2010 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '50'

चार दिनों उपरान्त जब प्रयोग समाप्त हो जाए, तो यंत्र तथा माला किसी जलाशय में अर्पित कर दें। ऐसा करने से प्रयोग सिद्ध होता है।

साधना सामग्री - 260/-



कामधेनु प्रयोग

इस प्रयोग की विशेषता यह भी है, कि व्यक्ति इच्छानुसार अपने व्यक्तित्व में बदलाव भी ला सकता है - उसके व्यक्तित्व में तेज वृद्धि हो जाती है और आकर्षण तत्व स्थापित हो जाता है, वाणी वचन से किसी को भी अनुकूल बना सकता है। जैसे कि राधा ने यह प्रयोग सम्पन्न किया, अपने प्रिय कृष्ण के लिए अपने मन में संकल्प लिया, तो उसी क्षण कृष्ण को वहां उपस्थित होना पड़ा...

चाहे जो कुछ भी हो, इतना तो अनुभूत सत्य है, कि इस प्रयोग को सम्पन्न करने के पन्द्रह दिन के भीतर-भीतर व्यक्ति को अनुकूल परिणाम मिलते ही हैं...

शुक्रवार को स्नान आदि से निवृत्त होकर, श्वेत धोती धारण कर, उत्तराभिमुख हो श्वेत आसन पर बैठें और अपने सामने बाजोट पर ‘कामधेनु यंत्र’ स्थापित कर उसका पूजन करें, इसके उपरान्त ‘विद्युत माला’ से निम्न मंत्र के 11 मालाएं मंत्र जप करें -

मंत्र

॥३५ ॐ क्री श्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ ॥

ऐसा 5 दिनों तक करें इसके उपरान्त यंत्र तथा माला किसी जलाशय में अर्पित कर दें। ऐसा करने से प्रयोग फलीभूत होता है और व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

साधना सामग्री - 280/-



उपरोक्त 16 प्रयोग वास्तव में ही उस वरमाला के 16 अद्वितीय पुष्प हैं, जिसे पहनाकर ही राधा कृष्ण को सम्पूर्ण रूप में प्राप्त कर सकी, वर सकी...

कृष्ण जैसे अद्वितीय व्यक्तित्व को अपने अनुकूल बनाना ही एक अद्भुत आश्चर्यजनक घटना है, और मात्र इसी तथ्य से इन प्रयोगों के प्रभाव और महत्व का आकलन कियां जा सकता है...

वस्तुतः ये मात्र 16 प्रयोग नहीं, अपितु हृदय की 16 दाढ़कनें हैं, जो आपके जीवन को प्रेम, खुशियां, उमंग एवं यौवन से सराबोर करने के लिए बैठैन हैं।

गतांक से आगे

कृपालिनी

शक्ति धारा

इबोपी

विशुद्ध चक्र चारणद्वय

यह पड़ाव है 'विशुद्ध चक्र' का... विशुद्ध अर्थात् पूर्णतः शुद्ध... यहां तक पहुंचते-पहुंचते अज्ञानता का समस्त अधंकार तिरोहित हो जाता है, आत्मा पर पढ़ी अशुद्धियों की धूल समाप्त हो जाती है और पूर्णतः शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति होने से आत्मा का निर्मल सत् चित् स्वरूप आभासित होने लगता है... और इसकी विलक्षण उपलब्धियां... प्राप्त कर लेने के बाद भी सहज ही विश्वास नहीं होता, सब कुछ स्वजिल लोक सा नजर आता है... परन्तु वास्तविकता तो वास्तविकता होती है... और इस वास्तविकता का अहसास कर गर्व से सिर ऊंचा हो जाता है... गर्व होता है हमारे पूर्वज ऋषियों पर... गर्व होता है भारत की प्राचीन विद्याओं पर... गर्व होता है इतना अद्वितीय ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपने आप... और फिर हम नमन करते हैं शुरूत्व की श्रेष्ठता के आगे, जिसकी करुणा, जिसकी कृपा से ऐसा अद्भुत अध्याय इस जीवन में प्रारम्भ हो पाया, जिसके चरणों में समर्पण करते ही श्रेष्ठता और अद्वितीयता की उपलब्धि इतने सहज रूप में संभव हो सकी...

आकाश तत्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि तत्वों से सूक्ष्म है, यह सर्वव्यापक भी है, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में इसका विस्तार है, अतः यह अन्य तत्वों को अपने अन्दर धारण करने की क्षमता रखता है। इस सूक्ष्मता के कारण ही यह सभी पदार्थों के अन्दर प्रविष्ट है।

यौगिक विज्ञानमय कोश की अवधारणा के अनुसार आकाश तत्व अन्य सभी तत्वों का सहचर है तथा शरीर में इसकी उपस्थिति के कारण ही शरीर के सभी अवयव गतिशील हो पाते हैं। इस प्रकार शरीर की समस्त जैविक क्रियाओं की उत्पत्ति का मूल कारण आकाश तत्व ही है।

मात्र शारीरिक अवयव ही नहीं, शब्द, वायु, मेघ, विद्युत ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र आदि भी इसी तत्व का अवलम्बन प्राप्त कर गतिशील हो पाते हैं। स्थूल शरीर के अलावा सूक्ष्म शरीर को भी सबसे अधिक इसी तत्व की आवश्यकता पड़ती है। इस अवस्था में पृथ्वी और जल तत्व का सर्वथा लोप हो जाता है और साधक इसी तत्व का आश्रय लेकर लोक-लोकान्तरों में गमन कर पाता है।

समस्त शारीरिक क्रियाओं का मुख्य कारण होने के कारण इबोपी में आकाश तत्व का अत्यधिक महत्व है। इस तत्व पर नियन्त्रण प्राप्त कर लेने पर व्यक्ति अपने शरीर की समस्त स्थूल क्रियाओं पर नियन्त्रण स्थापित करने में सक्षम हो जाता है और इसका लाभ यह होता है, कि वह अपने शरीर को नये रोगों से मुक्त रखने की क्रिया जानने लगता है। इस प्रकार व्यक्ति नये रोगों से अपना बचाव करने में सक्षम होता है।

यह सब आपको 'परी-कथाओं' की तरह अनुभव हो सकता है, क्योंकि व्यक्ति सामान्यतः अपनी अनन्त शक्तियों से अनभिज्ञ रहता है। इसका कारण यह है, कि हम न तो अपनी आत्मिक शक्तियों को अच्छी तरह पहचान पाये हैं और न ही अपनी मानसिक शक्तियों को ...तथा दुर्भाग्यवश हम व्यर्थ के तर्क-कुर्तक में समय व शक्ति को व्यय करते रहते हैं। जिस दिन हम अपनी पूर्ण मानसिक एवं आत्मिक शक्तियों को जान लेंगे, उस दिन हमारे लिये कुछ भी असम्भव नहीं रहेगा।

बिना जाने-बूझे, बिना कसौटियों पर कसे यह मत बनाना,

कि कोई तथ्य झूठ है, वह वास्तव में मिथ्या नहीं हो जायेगा? यह तो केवल हमारी मानसिकता का संकुचन है, कि हमारे त्वरित हो... और यह क्रिया संभव होती है 'गुरु' से प्राप्त विचार एक सीमित क्षेत्र के बाहर नहीं जा पाते तथा हम उन 'शक्तिपात' द्वारा, शक्तिपात के उपरान्त ही विशुद्ध चक्र का अखण्ड तथ्यों को नहीं समझ पाते, जिन्हें हजारों वर्ष पूर्व पूर्ण चैतन्यीकरण संभव है।

हमारे ऋषि, मुनियों तथा योगियों ने पहचाना था।

विशुद्ध चक्र की कई और भी अद्भुत उपलब्धियाँ हैं, जिनमें से एक है - 'लेखन की प्रतिभा'। इस उपलब्धि के प्राप्त होते ही गद्य, पद्य, काव्य, दर्शन आदि अपने आप ही उसकी कलम से निकलने लगते हैं, भाषा तथा उसके सटीक प्रयोग का उसे जान हो जाता है, अपनी लेखनी के द्वारा वह सुन्दर साहित्य की रचना कर पाता है तथा वह चाहे तो साहित्य जगत में नाम कमा सकता है।

महाकवि कालिदास प्रारम्भ में अत्यन्त ही मूढ़ व्यक्ति थे, जिनमें सामान्य व्यावहारिक ज्ञान का भी अभाव था। उनकी शिक्षा हुई नहीं थी, अतः साहित्य या किसी अन्य विषय में वे एकदम कोरे थे। विद्योत्तमा के द्वारा अपमानित होने के उपरान्त उन्हें गुरु साम्राज्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ था और गुरु ने उनकी सेवा और समर्पण से प्रसन्न होकर उनके चक्रों को पूर्ण चैतन्यता प्रदान की थी, जिसके फलस्वरूप वे अत्यन्त श्रेष्ठ विद्वान बन सके और 'महाकवि' की उपाधि से सम्मानित हो सके। उन्होंने 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' तथा 'मेघदूत' जैसी अमर रचनाएँ इस समाज को दीं। कहा जाता है, कि उनके जैसा श्रेष्ठ विद्वान इतिहास में कोई दूसरा नहीं हो सका।

इस चक्र के पूर्णतः चैतन्य होने पर अनाहत चक्र से प्रारम्भ हुआ आत्मा का ब्रह्माण्ड से संयोग और अधिक घनिष्ठता को प्राप्त होता है। इस प्रकार अनाहत चक्र से आत्मा और ब्रह्माण्ड में सर्वत्र स्थापित शक्ति का जो सामवज्स्य प्रारम्भ होता है, विशुद्ध चक्र पर पहुंचने पर उसमें धीरे-धीरे परिपक्वता आने से आध्यात्मिक उत्थान अपनी चरम सीमा की ओर अग्रसर होने लगता है।

विशुद्ध चक्र भारतीय वैदिक सिद्धान्त के पंच तत्त्वों में से 'आकाश तत्त्व' का प्रतिनिधित्व करता है। आकाश तत्त्व चूंकि इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्याप्त है, अतः इस तत्त्व पर नियन्त्रण प्राप्त होते ही व्यक्ति का सम्बन्ध सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड से हो जाता है और उसे इसके सूक्ष्मातिसूक्ष्म रहस्यों का भी सहज ही ज्ञान हो जाता है।

लेकिन आकाश तत्त्व अत्यन्त ही विरल है, अतः संहज ही इस पर नियन्त्रण प्राप्त करना संभव नहीं है। इसे नियन्त्रित

करने के लिए आवश्यक है, कि कोई दिव्य शक्ति शरीर में त्वरित हो... और यह क्रिया संभव होती है 'गुरु' से प्राप्त विचार एक सीमित क्षेत्र के बाहर नहीं जा पाते तथा हम उन 'शक्तिपात' द्वारा, शक्तिपात के उपरान्त ही विशुद्ध चक्र का अखण्ड तथ्यों को नहीं समझ पाते, जिन्हें हजारों वर्ष पूर्व पूर्ण चैतन्यीकरण संभव है।

यह चक्र कण्ठ प्रदेश में स्थित होता है। जब यह पूर्णतः चैतन्य होता है, तो व्यक्ति के कण्ठ में स्वतः ही सरस्वती का स्थापन हो जाता है, स्वतः ही वेदों का पूर्ण ज्ञान हो जाता है, आधुनिक और प्राचीन सभी विद्यायें उसके मस्तिष्क में अपने आप प्रविष्ट हो जाती हैं, उसकी वाणी अत्यन्त ओजयुक्त हो जाती है और वह किसी भी विषय पर घंटों धारा प्रवाह बोल सकता है।

इस चक्र का आकार षोडश दलों वाले कमल के समान होता है। यह चक्र दिव्य ज्ञान की प्राप्ति का प्रतीक है। इसका रंग पीला होता है, जो कि इसके चैतन्य होने के पश्चात् निःसृत होने वाली रश्मियों का रंग है। इसके देवता 'पंचवक्त्र' (सदाशिव) तथा उनकी शक्ति 'शाकिनी' है।

विशुद्ध चक्र को पूर्ण स्पन्दन एवं चैतन्यता प्रदान करनि म उपलब्धियों की प्राप्ति की जा सकती है -

1. इस चक्र के पूर्णतः चैतन्य होने पर आकाश तत्त्व पर नियंत्रण स्थापित होता है। जो व्यक्ति क्रमशः मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर तथा अनाहत चक्र को चैतन्य करते हुए इस मुकाम पर पहुंचते हैं, उनका अपने शरीर के सभी पंच तत्त्वों पर नियन्त्रण स्थापित हो जाता है।

इस चक्र के पूर्णतः चैतन्य और स्पन्दन युक्त होने पर व्यक्ति अपने शरीर का नये रोगों से बचाव करने की क्रिया जान लेता है।

3. इसके माध्यम से तनाव से पूर्णतः मुक्ति मिल जाती है।

4. इसके द्वारा तपेदिक रोग पर नियन्त्रण प्राप्त किया जा सकता है।

5. गले का दर्द, टॉन्सिल, गलगण्ड आदि रोगों को इस चक्र के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है।

6. थायरॉइड ग्रन्थि की विकृतियों को इस चक्र की शक्तियों का उपयोग कर दूर किया जा सकता है।

7. यदि सर्दी, जुकाम, खांसी, साइनस आदि बीमारियाँ सदैव बनी ही रहती हों, तो इस प्रयोग को अवश्य सम्पन्न करें।

अस्थमा को भी इस चक्र के माध्यम से दूर किया जा सकता है।

डाक व्यय पत्र प्राप्त
करने वाले द्वारा
दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक
टिकट लगाने
की आवश्यकता
नहीं है।

सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान**
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त
करने वाले द्वारा
दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक
टिकट लगाने
की आवश्यकता
नहीं है।

सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान**
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त
करने वाले द्वारा
दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक
टिकट लगाने
की आवश्यकता
नहीं है।

सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान**
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

यदि आप दीक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हों, तो समय एवं स्थान का निर्धारण सुनिश्चित कर सकते हैं या आप अपना फोटो सम्बन्धित न्यौछावर राशि के साथ जोधपुर का यात्रिय

यदि आप दीक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हों, तो समय एवं रकम के पते पर भेज कर भी कोटों हजार दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

प्रिय सम्पादक जी,

(पृष्ठ संख्या 22 पर प्रकाशित)

दिनांक : जुलाई 2010

मैं लोकप्रिय पत्रिका मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान का 'वार्षिक सदस्य' बनना चाहता हूं। कृपया आप मुझे सम्बन्धित उपहार 'गणपति ट्रॉफी' स्वरूप भेज दें। 303/- की वी.पी.पी. आने पर (258/- वार्षिक सदस्यता शुल्क + 45/- डाक व्यय) के रूप में जमा कर मुझे रसीद भेज दें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर वी.पी.पी. छुड़ा लूंगा एवं हर माह मुझे पत्रिका भेजते रहें अथवा आप मेरे मित्र को हर माह पत्रिका भेजते रहें।

मेरा नाम :
पूरा पता :

मेरे भित्र का नाम :
उसका पूरा पता :

प्रिय सम्पादक जी,

दिनांक : जुलाई 2010

'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' में प्रकाशित निम्न ऑडियो / वीडियो कैसेट्स - सी.डी. वी.पी.पी. से भेज दें, वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर छुड़ा लूंगा।

कैसेट्स के नाम

मेरा नाम / पता :

प्रिय सम्पादक जी

(पृष्ठ संख्या 66 पर प्रकाशित)

हिन्दू अंक : जलाई 2010

मुझे निःशुल्क उपहार स्वरूप पूर्ण मंत्रसिद्ध, चैतन्य, प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'मदगाढ़ी अप्सरा' सामग्री भिजवाएँ। मैं 570/- की वी.पी.पी. आने पर उसे छुड़ा लूँगा। मेरा पता निम्न है –

नाम व पता :

पता

और मेरे दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित पत्रिका भेजते रहें। मेरे दोनों मित्रों के नाम व उनके पुरे पते निम्न हैं

1.

2.

‘54’

9. निम्न या उच्च रक्तचाप की बीमारी को इस चक्र की सहायता से दूर किया जा सकता है।
10. विशुद्ध चक्र के चैतन्य होने पर आंखों से सम्बन्धित न्यूनताएं दूर होने लगती हैं और मोतियाबिन्द, रत्तोंधी आदि समस्यायें यदि प्राथमिक अवस्था में हैं, तो समाप्त हो जाती हैं।
11. इस प्रयोग के द्वारा व्यक्ति के कण्ठ में ज्ञान तथा बुद्धि की देवी सरस्वती का स्थापन हो जाता है, जिसके फलस्वरूप वह किसी भी विषय पर अधिकार पूर्वक घंटों बोल सकता है।
12. इसके द्वारा 'वाक् सिद्धि' प्राप्त कर सकता है। वाक् सिद्धि का अर्थ है - व्यक्ति जो भी बोले, वह सत्य हो। इस प्रकार श्राप तथा वरदान देने की शक्ति प्राप्त की जा सकती है।
13. इस चक्र के माध्यम से व्यक्ति अपने अन्दर लेखन या कवित्व की प्रतिभा को पूर्ण रूप से जाग्रत कर सकता है और साहित्य जगत की ऊँचाइयों को स्पर्श कर सकता है।
14. इस चक्र के माध्यम से व्यक्ति गायन और संगीत के क्षेत्र में पारंगत हो सकता है।
15. इस चक्र को पूर्णतः चैतन्यता प्रदान कर व्यक्ति नृत्य की भाव-भंगिमाओं को समझ कर उनमें निष्णात हो सकता है।
16. इस चक्र की सहायता से 'शून्य सिद्धि साधना' में आने वाली बाधाएं समाप्त होती हैं और सहज ही सफलता मिल जाती है।
17. अनाहत चक्र पर प्राप्त होने वाली समाधि की प्राथमिक अवस्था में विशुद्ध चक्र पर पहुंचने पर परिपक्वता आने लगती है।
18. इसके माध्यम से व्यक्ति 'पूर्ण योग सिद्धि' प्राप्त कर अपने शरीर एवं आत्मा पर पूर्ण नियन्त्रण स्थापित कर सकता है।
19. इस चक्र को पूर्णतः चैतन्यता प्रदान कर व्यक्ति इच्छा मृत्यु की क्षमता प्राप्त कर स्वेच्छा से प्राणों का त्याग करता है।
20. इस चक्र की एक अन्य उपलब्धि है - 'पूर्ण सांसारिक सफलता', अर्थात् भौतिक सुख, धन, दौलत, यश, सम्मान आदि सभी सांसारिक उपलब्धियां व्यक्ति प्राप्त कर सकता है, यदि उसकी ऐसी इच्छा हो।

21. विशुद्ध चक्र की एक अन्य अद्भुत उपलब्धि है - 'सम्मोहन'। अनाहत चक्र पर प्राप्त होने वाली सम्मोहन की प्रारम्भिक अवस्था इस चक्र पर पूर्णता को प्राप्त करती है।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए प्राण प्रतिष्ठित एवं मंत्र सिद्ध 'विशुद्ध चक्र जागरण यंत्र' की आवश्यकता होती है।

किसी भी गुरुवार को प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर, पीले रंग के स्वच्छ वस्त्र धारण कर, पीले रंग के आसन पर बैठ जायें, दिशा उत्तर या पूर्व की ओर हो। सामने बाजोट पर पीले रंग का वस्त्र बिछा कर उस पर केसर से स्वस्तिक का निर्माण कर उस पर विशुद्ध यंत्र की स्थापना करें।

ध्यान

त्वं विशुद्धं त्वं ब्रह्म त्वं विष्णु
त्वं रुद्रं त्वं तत्त्वमसि त्वं पूर्णं ॐ

गुरु पूजन के उपरान्त विशुद्ध यंत्र का कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य चढ़ा कर पूजन करने के पश्चात् उसे ध्यान पूर्वक देखते हुए (यदि संभव हो, तो त्राटक करते हुए) पूर्ण एकाग्र होकर निम्न मंत्र का 30 मिनट तक जप करें -

मंत्र

॥३५ हौं क्रीं विशुद्धात्य फट॥

ऐसा सात दिन तक नित्य करें। ऐसा करने पर यंत्र में संग्रहीत शक्तियों का स्थापन शरीर स्थित विशुद्ध चक्र में हो जाता है, फलस्वरूप विशुद्ध चक्र के स्पन्दन की तीव्रता में बृद्धि होने से वह चक्र चैतन्य हो जाता है। सात दिन के पश्चात् यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें।

अब उपरोक्त 21 बिन्दुओं में से आप जो भी उपलब्धि प्राप्त करना चाहते हैं या जिस रोग को समाप्त करना चाहते हैं, उसके लिए गुरुवार के दिन प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में दैनिक नित्य कर्म के पश्चात् पीले रंग के वस्त्र धारण कर पीले आसन पर बैठ जायें तथा गुरु पूजन सम्पन्न कर मनोवाञ्छित संकल्प ले कर, पंचवक्त्र और उनकी शक्ति शाकिनी से उस इच्छा की पूर्ति की प्रार्थना करते हुए विशुद्ध चक्र पर अपना ध्यान केन्द्रित कर उपरोक्त मंत्र का 10 मिनट तक जप करें। ऐसा करने पर विशुद्ध चक्र में निहित ऊर्जा स्पन्दित होकर आपको शक्ति प्रदान करेगी और इस प्रकार आपकी इच्छा पूर्ण हो सकेगी।

साधना सामग्री - 220/-

त्रिविध ताप

अधिदैविक

अधिआध्यात्मिक

अधिभौतिक

त्रिविध दोष कर्म

दैहिक

संबाधिक

वैचारिक

निवारण संभव है

त्रिपुर सुन्दरी साधना

इन त्रितापों पर विजय प्राप्त करने की, इन दोषों को समाप्त करने की एकमात्र सर्वश्रेष्ठ साधना 'त्रिपुर सुन्दरी साधना' है। यह महाविद्या साधना दस महाविद्याओं में से एक है। महादेवी त्रिपुर सुन्दरी अपने भक्तों के, अपने साधकों के दोषों को दूर करने के लिए प्रति क्षण तत्पर रहती ही हैं।

साधनाओं में सफलता प्राप्ति का मूल उत्स पुष्प देह, भी जनहित की भावनाओं को लेकर कर्मों का संक्षिप्त विवेचन सच्चरित्र तथा शांत मानस होता है। इस प्रकार ही देह, इस करना आज के युग में अत्यन्त ही आवश्यक हो गया है।

प्रकार का मानस तथा ऐसा ही जीवन प्राप्त करना आज के इस प्रायः सामान्य दृष्टि से देखा जाए, तो जीव जन्म लेते ही भौतिकवादी युग में अत्यन्त ही दुष्कर कार्य हो गया है। व्यक्ति कर्म-बन्धनों से जुड़ जाता है, और प्रतिपल नवीन कार्य करना चाहकर भी अपने-आप को पवित्र तथा निर्मल नहीं बना पाता, तथा पूर्वजन्मकृत संचित कर्मों के फलों को भोगना जीव की वह जाने-अनजाने में अनेक कर्म-दोषों से ग्रसित होता ही है। नियति है और यही नहीं, अपितु जीव जिस गर्भ से जन्म लेता

यह समस्त भूलोक पूरी तरह से कर्म प्रधान है, इस पृथ्वी पर जन्म लेने वाले प्रत्येक जीव को कोई न कोई कर्म करते ही रहना पड़ता है, और यह कर्म करना जीव की विवशता ही कहीं जा सकती है, उसकी यह विवशता मृत्यु के पश्चात् भी यहां सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि जीव कितने प्रकार के कर्म करता है अथवा वे कर्म, जिनका भोग जीव को भोगना पड़ता है, कितने प्रकार से सम्पन्न होते हैं?

वैसे तो कर्मों की विवेचना करना, पाप और पुण्य का सही निर्णय करना अनादिकाल से ही एक दुष्कर कार्य रहा है, फिर देह के माध्यम से सम्पन्न करता है, तथा भूलोक के समस्त

प्राणी, जिन्हें देखते हैं, और उनसे प्रभावित होते हैं, और जिसका परिणाम जीव को निश्चित तथा शीघ्र ही प्राप्त न होने वाला होता है, ऐसे कर्म 'दैहिक कर्म' कहलाते हैं।

दूसरे कर्म वे होते हैं, जिन्हें जीव दैहिक कर्मों के अलावा मानसिक रूप से सम्पन्न करता है। इस प्रकार के कर्म दैहिक कर्मों के साथ-साथ ही सम्पन्न किये जाते हैं। इन कर्मों को 'वैचारिक कर्म' कहते हैं। इनका परिणाम स्थूल देह के साथ-साथ आत्मा को भी भोगना पड़ता है, यदि इन वैचारिक कर्मों को दैहिक कर्मों से न भी जोड़ा जाए, तो भी जीवात्मा इनके परिणामों से प्रभावित होती ही है।

तीसरे प्रकार के कर्म सर्वथा विचित्र तथा अनोखे होते हैं। विचित्र इसलिए होते हैं, क्योंकि जीव इन कर्मों को न तो देह के माध्यम से सम्पन्न करता है, और न ही मानसिक रूप से। इस प्रकार के कर्मों को कोई दूसरा व्यक्ति ही सम्पन्न करता है, जिसका परिणाम भी पहले व्यक्ति अथवा जीव को भोगना ही पड़ता है।

इस प्रकार ये यह जीव-जगत, यह मनुष्य अनेक प्रकार के कर्म-दोषों से ग्रसित हो जाता है, और जब तक वह इन दोषों से, इन त्रितापों से मुक्ति नहीं पा लेता, इन पर नियन्त्रण स्थापित नहीं कर लेता, तब तक वह जीवन में पूर्ण उत्तमि, पूर्ण शांति, सुख, वैभव एवं जीवन की सर्वश्रेष्ठ निधि 'ब्रह्मानन्द' को नहीं प्राप्त कर सकता।

इन त्रितापों पर विजय प्राप्त करने की, इन दोषों को समाप्त करने की एकमात्र सर्वश्रेष्ठ साधना 'त्रिपुर सुन्दरी साधना' है। यह महाविद्या साधना दस महाविद्याओं में से एक है। महादेवी त्रिपुर सुन्दरी अपने भक्तों के, अपने साधकों के दोषों को दूर करने के लिए प्रति क्षण तत्पर रहती ही है।

त्रिपुर सुन्दरी व्यक्ति के पूर्व संचित कर्मदोष को तो समाप्त करती ही है, साथ ही व्यक्ति के जीवन में चल रहे वर्तमान समय के दुष्कर्म, जो कि व्यक्ति के लिए ज्ञात-अज्ञात हैं, अपनी सूक्ष्म उपस्थिति से उन कर्मों को न करने देने के लिए प्रायः व्यक्ति को विवश करती रहती है, और उसे जीवन में निर्मलता, पवित्रता, श्रेष्ठता तथा निष्पाप जीवन प्रदान करने के साथ ही वह सब कुछ प्रदान कर देती है, जिसका कि वह व्यक्ति आकंक्षी है।

महादेवी त्रिपुर सुन्दरी जिस स्वरूप में विद्यमान हैं, वह अत्यन्त ही गूढ़तम रहस्यों से ओत-प्रोत है। जिस महामुद्रा में वे भगवान शिव की नाभि से निकलते कमलदल पर विराजमान हैं, वे मुद्राएं उनकी कलाओं को प्रदर्शित करती हैं, उनके



कार्यों की तथा उनकी अपने भक्तों के प्रति जो भावनाएं हैं, उनका सूक्ष्म विवरण करती हैं।

सोलह पंखुड़ियों के कमल दल पर पद्मासन मुद्रा में बैठी देवी 'त्रिपुर सुन्दरी' पूर्ण मातृ स्वरूपा हैं, तथा सभी पापों एवं दोषों से मुक्त करती हुई अपने भक्तों तथा साधकों को सोलह कलाओं से पूर्ण करती हैं, और उन्हें पूर्ण शिवत्व प्रदान करती हैं।

देवी त्रिपुर सुन्दरी अपने चारों हाथों में क्रमशः माला, अंकुश, धनुष तथा बाण लिए हुए हैं। प्रथम दाएं हाथ में माला धारण कर ये साधकों को साधना पथ पर अग्रसर होने का संकेत देती है। जो व्यक्ति साधना के क्षेत्र में पूर्णता, सफलता तथा श्रेष्ठता प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें तो यह साधना अवश्य ही सिद्ध करनी चाहिए।

ये अपने दूसरे हाथ में अंकुश धारण कर इस बात को इंगित करती हैं, कि जो व्यक्ति अपने कर्म-दोषों से परेशान हैं, जिनका अपने कर्मों पर, अपने-आप पर नियन्त्रण नहीं रहा, ये उन सभी कर्मों पर अपने भक्तों का पूर्ण नियन्त्रण प्रदान कर, उन्हें उत्तमि के पथ पर गतिशील करती हैं, तथा उन्हें जीवन में हैं, वे मुद्राएं उनकी कलाओं को प्रदर्शित करती हैं, उनके श्रेष्ठता, भव्यता और आत्म-विश्वास प्रदान करती हैं।

क अलावा अपने दोनों बाएं हाथों में धनुष-बाण रखना सकेत को स्पष्ट करता है, कि उनके भक्तों की उन्नति के मार्ग में आने वाली प्रत्येक बाधा, प्रत्येक शत्रु; चाहे वह बीमारी हो, गरीबी हो या उसकी अशक्तता हो, ये सभी को दूर कर उसे स्वस्थ जीवन प्रदान करती हैं, उसके पंच-विकारों को दूर कर उसे 'पूर्ण पौरुष' प्रदान करती हैं।

एक प्रकार से देखा जाय तो, महादेवी त्रिपुर सुन्दरी की साधना पुरुष से पुरुषोत्तम बनने की साधना है, नर से नारायण बनने की साधना है, साधना के मार्ग में आने वाले अवरोधों को समाप्त करने की साधना है। साधक इस साधना को सिद्ध कर, अपने जीवन को उन्नति तथा सफलता के पथ पर गतिशील कर जीवन को श्रेष्ठता व दिव्यता प्रदान कर सकता है। इस साधना को सिद्ध करने के पश्चात दूसरी अन्य साधनाएं सिद्ध करना उसके लिए सहज और सामान्य बात हो जाती है।

साधना विधान

यह साधना एक दिवसीय साधना है, यदि साधक चाहे तो इस साधना को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाकर जीवन में विशेष सफलता व लाभ अर्जित कर सकते हैं। इस साधना को करने का विशेष मुहूर्त दिनांक 17 अगस्त 2010 दुर्गाष्टमी तथा 18 अगस्त 2010 सर्वार्थ सिद्धि अमृत सिद्धि सुयोग है या फिर साधक सप्ताह के किसी भी शुक्रवार की रात्रि को यह साधना सम्पन्न कर सकता है।

यह रात्रिकालीन साधना है, इसे रात्रि 9 बजकर 12 मिनट से मध्य रात्रि 11 बजकर 30 मिनट के बीच सम्पन्न करना चाहिए। इसमें जिस विशेष सामग्री की आवश्यकता है, वह है - सर्वार्थ सिद्धि माला, पापविघ्न नाशिनी गुटिका और इसके साथ ही लकड़ी के बाजोट पर बिछाने के लिए गुलाबी आसन तथा पहनने के लिए गुलाबी धोती।

साधक स्नान आदि से निवृत होकर पूर्व अथवा उत्तर दिशा में लकड़ी के बाजोट पर गुलाबी आसन बिछा कर, एक ताप्र प्लेट में त्रिकोण रूप से तीन बिन्दियां कुंकुम या केसर से बनाकर, उस त्रिकोण में पापविघ्न नाशिनी गुटिका स्थापित करें, तथा धूप, दीप, पुष्प आदि से उसका पूजन करें, इसके पश्चात चार माला गुरु मंत्र का जप करें और मानसिक रूप से उनसे साधना में पूर्ण सफलता प्राप्ति का आशीर्वाद मांगें।

महादेवी त्रिपुर सुन्दरी का मूल मंत्र प्रारम्भ करने से पूर्व सामग्री को अपने पूजा स्थान में रखें तथा 11 दिन के पश्चात हाथ में जल लेकर संकल्प करें, आप जिस उद्देश्य को लेकर उक्त सभी सामग्री को किसी नदी अथवा तालाब या कुंए में यह साधना सम्पन्न करने जा रहे हैं, उस उद्देश्य का उच्चारण विसर्जित कर, शांत चित्त भाव से घर आ जाएं। करें तत्पश्चात् ही 'सर्वार्थ सिद्धि माला' से महादेवी त्रिपुर-

कामदेव से विश्वामित्र, शंकराचार्य से गुरु गोरखनाथ सबने अपने जीवन में त्रिपुर सुन्दरी की साधना सम्पन्न की और जीवन में महान् बनें।

देवी के सम्बन्ध में भगवान शिव कहते हैं -

कंकाव के क्षम्भी पदार्थ जड़ या चेतन, क्षजीरा या निर्जीव - मात्र तीन गुणों के कंयोजन के ही गतिशील होते हैं। मनुष्य की क्षमक्षत गतिविधियां जीवन श्रौती, जीवन में डताव-चढ़ाव, वृण-दोष, क्षवभाव मात्र इन तीन गुणों अर्थात् - 'क्षत्व', 'क्षज' एवं 'तम' के ही अनते हैं। इन तीनों गुणों एवं जिक्ष पवा शक्ति के प्रादृश्य होता है, डक्षी की अधिष्ठात्री देवी महात्रिपुर भुजव्वी हैं। देवी त्रिपुर भुजव्वी की ही पवा शक्ति के ज्ञावा चक्रावत कंकाव उत्पन्न होता है, डठ्ठी के कंकाव दत्तात्रे एवं क्षमय पव नाश भी होता है। वही कोर्गों और छुःखों को हवने वाली हैं।

सुन्दरी के मूल मंत्र की 5 माला मंत्र जप सम्पन्न करें।

मंत्र

हीं क ए ई ल हीं ह स क ल ह हीं स क ल हीं

साधना काल में साधक को अपना शरीर पूर्णस्तुप से हल्का होता प्रतीत होगा, तथा उसे ऐसा लगेगा कि उसके मस्तिष्क का कोई बहुत बड़ा दबाव उत्तर गया है, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी। जैसे-जैसे साधक के पाप-दोष-समाप्त होते हैं, उसका समस्त शरीर तथा मस्तिष्क किसी अनजाने दबाव से मुक्त होता जाता है, इससे किसी भी प्रकार से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, यह स्थिति अपने-आप में पूर्णनिन्द की स्थिति है।

साधना समाप्ति के पश्चात साधक 11 दिनों तक साधना सामग्री को अपने पूजा स्थान में रखें तथा 11 दिन के पश्चात उक्त सभी सामग्री को किसी नदी अथवा तालाब या कुंए में विसर्जित कर, शांत चित्त भाव से घर आ जाएं।

यह हमने नहीं ब्राह्मिष्ठि कै कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्ण प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधा एं तो उपरिथित नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दद्युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पूर्ण करने पर आपका प्रा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

अगस्त

1. आज तेल का दीपक जलाकर प्रातः काल घर के बाहर रख दें, बाधा समाप्त होगी।
2. आज श्रावण के द्वितीय सोमवार के अवसर पर रुद्र साधना सम्पन्न करें, शिवलिंग पर बिल्व पत्र एवं दुध अर्पित करें।
3. आज हनुमान कंकण (न्यौछावर 150/-) को धारण करें।
4. आज भगवान गणपति को मिष्ठान का भोग लगाकर कार्य पर जाएं।
5. आज घोड़श गुरु पूजन ऑडियो सी.डी. (न्यौछावर 30/-) का श्रवण कर, पूजन करें।
6. आज एक मुट्ठी काले तिल घर के बाहर रख दें, आने वाली बाधा समाप्त होगी।
- आज किसी द्विधन को काले उड्ड, काले वस्त्र दान करें, आने वाली बाधा समाप्त होगी।
- भगवती लक्ष्मी को लाल पुष्प अर्पित करें।
- आज श्रावण तृतीय सोमवार के अवसर पर पांशुपतास्त्रेय साधना सम्पन्न करें तथा इसके अतिरिक्त अन्य शिव साधनाएं भी सम्पन्न करें।
- आज मन्दिर में हनुमान विग्रह पर तेल और सिन्दूर चढ़ाएं।
- आज हुं जं ज्लौं हरिद्वा गणपत्तये वरवरद सर्वजन हृदयं स्तंभय स्तंभय स्वाहा मंत्र का दस मिनट जाप कर कार्य पर जाएं।
- आज पारद गुटिका (न्यौछावर 150/-) को धारण करें।
- आज कामदा (न्यौछावर 90/-) को जेब में रखकर बाहर जाएं, दिन सफलता दायक रहेगा।
- आज प्रातः गुरु स्मरण कर घर से निकलें।
15. आज भगवान सूर्य को अर्घ्य दें।
16. आज श्रावण चतुर्थ सोमवार पर रसेश्वर शिव साधना सम्पन्न करें।
17. आज बजरंग बाण का पाठ करें।
18. आज दही खाकर ही घर से निकलें।
19. आज गुरु रहस्य गुटिका (न्यौछावर 60/-) का पूजन कर उसे धारण कर लें।
20. आज लक्ष्मी गुटिका (न्यौछावर 160/-) को चावल की ढेरी पर रखकर ॐ श्री हौं श्री मंत्र का जप करें, अगले दिन इसे किसी जलसरोवर में विसर्जित कर दें।
21. गुरु जन्म दिवस पर गुरु पूजन कर गुरु गीता का पाठ करें तथा गुरु कार्य करने का संकल्प करें।
22. आज लौंग का जोड़ा पीपल के वृक्ष की जड़ में रख दें।
23. श्रावण के पांचवे सोमवार पर महाकाल शिव साधना सम्पन्न करें तथा शिव का रुद्राभिषेक सम्पन्न करें।
24. आज रक्षा बन्धन के शुभ अवसर पर गुरु पूजन सम्पन्न करें तथा गुरु चित्र/विग्रह को राखी बांध कर उन्हें अपने जीवन से बांधने का संकल्प करें।
25. आज शिव पार्वती का पूजन कर ही कार्य पर जाएं।
26. आज कृत्तीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा मंत्र का आधा घण्टा जप करें।
27. ऐं हौं कृत्तीं चामुण्डाय विच्चे मंत्र का जप एक घंटे तक धी का दीपक जलाकर करें।
28. आज चीटियों को शक्कर मिश्रित आटा डालें, शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।
29. आज गुरु चित्र के समक्ष पांच दीपक धी के जलाएं।
30. आज सफेद वस्तुओं का दान करें।
31. आज किसी कन्या को भोजन कराएं, बाधा समाप्त होगी।

ब्रह्मकृति वाणी

मेष -

आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने की आवश्यकता है। मौसमी बीमारियां, सर्दी, जुकाम, खांसी आदि से आप पीड़ित हो सकते हैं। मन में निराशा तथा बैचेनी के कारण आप कार्यक्षेत्र में भी ध्यान केन्द्रित नहीं कर पायेंगे। आप अपनी भाषा एवं वाणी पर भी संयम रखें अन्यथा आपको अपमानित होना पड़ सकता है। घर परिवार में कोई मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकता है। संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होने के योग बन रहे हैं। आप 'रुद्र साधना' (जून 2010) करें। शुभ तिथियां - 1, 6, 7, 11, 29 हैं।

वृष -

इस माह आपके मान, सम्मान, यश, कीर्ति एवं अधिकारों में बढ़ोतरी की संभावनाएं बन रही हैं, परन्तु आपके द्वारा इन परिस्थितियों का भरपूर लाभ उठाने की संभावनाएं कम ही रही हैं। आपको इस माह विभिन्न कारणों से रखें। कार्य-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आपके लिए ठीक मानसिक तनाव उठाना पड़ सकता है। माह के अंत तक आपके किसी यात्रा पर जाने ही करें तो ठीक रहेगा। आपके किसी यात्रा पर जाने की स्थितियां सामान्य हो जायेंगी। आपके बेरोजगारों को रोजगार प्राप्ति के समाचार प्राप्त हो सकते हैं। धन-सम्बन्धी लेने-देने में योग बहुत प्रबल हैं। महिलाओं का परिवार में आदर-सम्मान सावधानी बरतें। विद्यार्थियों एवं बेरोजगारों को प्रयास करने बढ़ेगा। आप 'विजया साधना' (मई 2010) करें। शुभ तिथियां - 4, 9, 13, 30, 31 हैं।

भित्तुन -

अपने आत्ममंथन के द्वारा आप अपने शत्रु एवं मित्रों को पहचानने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इस क्रिया का प्रभाव आपके कार्यक्षेत्र में भी व्यापक रूप से प्राप्त होने की संभावना है। उच्चअधिकारियों एवं विशिष्ट व्यक्तियों के समक्ष आपका व्यक्तित्व उभर कर सामने आयेगा। धन सम्बन्धी चली आ रही समस्याएं भी धीरे-धीरे कर समाप्त होने प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी होंगी। साझेदारी के कार्यों एवं अदालती कार्यों से स्वयं को दूर ही रखना आपके लिए उचित होगा। प्रेम-प्रसंगों में सोच लगेंगी। साझेदारी के कार्यों एवं अदालती कार्यों से स्वयं को दूर ही आगे बढ़ें। आप 'महामृत्युंजय साधना' (जून 2010) करें। शुभ तिथियां - 6, 10, 14, 15, 28 हैं।

कर्क -

पिछले माह की मौज-मस्ती की अपेक्षा इस बार आपका कार्य के प्रति समर्पण अधिक रहेगा। कार्य के प्रति समर्पण के कारण परिवार से दूरी भी हो सकती है। इस माह तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने की दृष्टि से भी यह माह आपके लिए श्रेष्ठ होगा। माह के अंत में आकस्मिक लाभ के भी योग बनेंगे। परिवार में किसी मांगलिक कार्य के सम्पन्न होने से उत्साह एवं प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। महिलाओं के लिये यह माह अच्छा रहेगा। आप 'मधुश्रवा साधना' (जून 2010) करें। शुभ तिथियां - 8, 12, 17, 26 हैं।

झिंड -

माह के प्रारम्भ में चन्द्रमा की स्थिति आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकती है। आपके लिए अच्छा रहेगा, कि आप दूसरों के वाद-विवाद एवं झगड़ों से स्वयं को ही दूर नजर आ रही हैं। आपको इस माह विभिन्न कारणों से रखें। कार्य-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आपके लिए ठीक स्थितियां सामान्य हो जायेंगी। आपके किसी यात्रा पर जाने ही करें तो ठीक रहेगा। अविवाहितों को विवाह सम्बन्धी शुभ के भी प्रबल योग बन रहे हैं। बेरोजगारों को रोजगार प्राप्ति के समाचार प्राप्त हो सकते हैं। धन-सम्बन्धी लेने-देने में योग बहुत प्रबल हैं। महिलाओं का परिवार में आदर-सम्मान सावधानी बरतें। विद्यार्थियों एवं बेरोजगारों को प्रयास करने बढ़ेगा। आप 'धूमावती साधना' (मई 2010) करें। शुभ होंगे। आप 'धूमावती साधना' (मई 2010) करें। शुभ तिथियां - 10, 11, 15, 19 हैं।

कन्या -

आपके लिये माह के मध्य में विशेष परिस्थितियां पैदा हो सकती हैं, जो लाभकारी ही सिद्ध होंगी। आपको कठिन परिश्रम एवं मेहनत करने की आवश्यकता होगी, इसके साथ संभावना है। उच्चअधिकारियों एवं विशिष्ट व्यक्तियों के समक्ष ही साथ धैर्य एवं संयम द्वारा ही आप अपेक्षित परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। अधिकारियों एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी होगी। गृहस्थ जीवन में आ रही बाधाओं के समाप्त होने से आप प्रसन्नता अनुभव करेंगे। महिलाओं के लिए भी स्थिति संतोष पूर्ण रहेगी। धार्मिक एवं आध्यात्मिक समझकर ही आगे बढ़ें। आप 'तारा साधना' (अप्रैल 2010) करें। शुभ तिथियां - 12, 13, 16, 21 हैं।

तुला -

यह माह आपके लिये व्यस्तता लिये हुए होगा, आप घर-परिवार, रिश्तेदारों, मित्रों के साथ व्यस्त रह सकते हैं। जमीन-जायदाद एवं कानूनी कार्यों में भी आपको समय देना पड़ सकता है। आर्थिक दृष्टि से यह माह आपके ऊपर भारी पड़ सकता है। आय से अधिक खर्च होने से आप चिन्तित हो सकते हैं। आर्थिक मामलों में अपने विश्वसनीय व्यक्तियों की सलाह से ही कार्य करें। गृहस्थ जीवन ठीक-ठाक ही रहेगा। विद्यार्थियों को प्रयास करने पर उच्च शिक्षा हेतु आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त होंगे। आप 'बटुक भैरव साधना' (अप्रैल 2010) करें। शुभ तिथियां - 6, 14, 19, 25, 31 हैं।

वृष्टिवक्त -

समय आपके प्रतिकूल चल रहा है, आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि आप अपनी वाणी पर संयम रखें। परिवार में भी किसी बात को लेकर बड़ी अनबन हो सकती है। कानूनी कार्यों में भी आपको पराजय का मुँह देखना पड़ सकता है। चारों तरफ की असफलताओं का असर आपके गृहस्थ जीवन पर भी स्पष्ट दिखाई देगा, गृहस्थ जीवन में भी अनावश्यक कलह हो सकती है। अपने इष्ट एवं गुरु के प्रति श्रद्धा एवं समर्पण द्वारा आप परिस्थितियों पर नियन्त्रण प्राप्त कर सकते हैं। आप 'शैश्वरी साधना' (मई 2010) करें। तिथियां - 5, 17, 25, 27 हैं।

धनु -

व्यापार में लाभ तथा नौकरीपेशा की पदोन्नति के योग बहुत प्रबल हैं। लक्ष्मी का आगमन सुलभ होने के कारण आप की क्रय शक्ति में वृद्धि हो सकती है। इस माह नये मकान, वाहन, भौतिक सुख-सुविधाओं को बढ़ाने वाली वस्तुओं के क्रय का योग बन रहा है। आपको माह के मध्य किसी आकस्मिक यात्रा पर भी जाना पड़ सकता है, जो कि आपके लिये लाभकारी सिद्ध होगी। घर परिवार में किसी कारण से विवाद हो सकता है। प्रेम-प्रसंगों में भी सावधानी बरतें अन्यथा बदनामी हो सकती है। आप 'पाशुपतास्त्रेय साधना' (जून 2010) करें। शुभ तिथियां - 1, 2, 9, 15, 19, 25 हैं।

अक्षर -

नये व्यापारिक अनुबंधों एवं कार्यक्षेत्र में विस्तार आपके लिये प्रसन्नतादायक होंगे, उन्नति के अवसर भी आपको निरन्तर प्राप्त होते जायेंगे। इस माह आप अपने स्वयं एवं परिवार के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें अन्यथा आपको अस्पताल जाना पड़ सकता है। माह के अंत में किसी कारण

योग: सिद्ध योग 1, 2, 10, 24, 28 जुलाई/3, 5, 6, 17, 19, 20, 28

अगस्त ५ सर्वार्थ सिद्ध योग - 1, 6, 9, 18, 21 जुलाई/10, 18, 23

अगस्त ५ अमृत सिद्ध योग - 6, 18, 21 जुलाई/18 अगस्त ५

आपका विवाद, झगड़ा हो सकता है। आपके लिये उचित होगा कि आप अपने विवेक एवं बुद्धि चातुर्य से उसका उचित हल करें। बेरोजगारों को प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त होने के योग बन रहे हैं। आप 'मेधा साधना' (जून 2010) करें। तिथियां - 3, 4, 12, 19, 22, 31 हैं।

कुम्भ -

अवसरों की तलाश आपके लिये समाप्त होगी। आपको जीवन में एक से बढ़कर एक अवसर प्राप्त होंगे, सफलता आपके कदम चूमेगी। आपके जीवन में नवीनता का संचार होगा, पूरे परिवार में एक बार पुनः प्रसन्नता एवं उत्साह का बातावरण बनेगा। व्यावसायिक एवं व्यापारिक क्षेत्र के साथ ही साथ आध्यात्मिक एवं धार्मिक स्तर पर भी आपकी उन्नति होगी। स्थान परिवर्तन आपके लिये भविष्य निर्माणकारी सिद्ध होगा। धन के लेन-देन में सावधानी रखें, किसी को उधार न दें। आप 'भाग्य उत्थान साधना' (जून 2010) करें। शुभ तिथियां - 1, 2, 6, 7, 23, 28 हैं।

मीन -

माह के प्रारम्भ में चन्द्रमा की स्थिति जीवन में उथल-पुथल कर देगी परन्तु स्थिति जल्दी ही नियन्त्रण में होगी तथा आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलताएं प्राप्त करेंगे। आपके कार्य के प्रति समर्पण के कारण आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आर्थिक दृष्टि से भी आप लाभ प्राप्ति की स्थिति में होंगे। इन स्थितियों के मध्य आपको अपने मित्रों एवं परिचितों से सावधान रहने की अवश्यकता है, उनके द्वारा आपको नुकसान पहुंचाया जा सकता है। प्रेम-प्रसंगों में भी सावधान रहें, बाधा आ सकती है। आप 'बगलामुखी साधना' (अप्रैल 2010) करें। तिथियां - 3, 5, 6, 27, 31 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्योहार

23 जुलाई	आषाढ शु.	- 13	शुक्रवार	प्रदोष व्रत
25 जुलाई	आषाढ शु.	- 15	रविवार	गुरु पूर्णिमा
03 अगस्त	श्रावण कृ.	- 08	मंगलवार	मंगल गौरी व्रत
06 अगस्त	श्रावण कृ.	- 11	शुक्रवार	कामिका एकादशी
07 अगस्त	श्रावण कृ.	- 12	शनिवार	शनि प्रदोष
10 अगस्त	श्रावण कृ.	- 30	मंगलवार	हरियाली अमावस्या
12 अगस्त	श्रावण शु.	- 03	गुरुवार	मधुश्रवा तीज
14 अगस्त	श्रावण शु.	- 05	शनिवार	नाग पञ्चमी

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम् समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाव्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (अगस्त 1, 8, 15)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (जुलाई 26) (अगस्त 2, 9)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (जुलाई 27) (अगस्त 3, 10)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (जुलाई 28) (अगस्त 4, 11)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरुवार (जुलाई 29) (अगस्त 5, 12)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (जुलाई 30) (अगस्त 6, 13)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (जुलाई 31) (अगस्त 7, 14)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

जब जीवन में निरन्तर बाधाएं आएं
 शुत्र बाधा तीव्रतम हो जाए
 रोग-व्याधि घर में स्थान बनाले
 धन की निरन्तर हानि होने लगे

तो सम्पन्न करें

स्वप्नाकृष्ण मैरव साधना॥

मैरव के विभिन्न स्वरूपों की साधना अलग-अलग प्रकार से सम्पन्न की जाती है, प्रत्येक विशेष साधना का विशेष उद्देश्य, विशेष विधान और विशेष फल होता है, इस लेख में यह सब संभव नहीं है, इसमें मैरव का एक ऐसा साधना प्रयोग दिया जा रहा है, जो कि साधक के जीवन में अक्षय सौभाग्य प्राप्ति हेतु दरिद्रता पूर्ण रूप से दूर कर, अक्षय निधि प्राप्त करने का प्रयोग है।

जीवन में कई बार ऐसी स्थिति आ जाती है, कि मनुष्य अपना कार्य करते-करते निराश हो जाता है, उसे जीवन को संचालित करने हेतु जिस चेतना की, ऊर्जा की, तप की आवश्यकता होती है, वह चैतन्य ज्वाला ही मन्द होने लगती है, निराशा में व्यक्ति कुछ भी कर सकता है। यह सही है, कि पुरुषार्थी व्यक्ति को कार्य करते रहना चाहिए, बाधाओं का हंस कर सामना करना चाहिए, किन्तु केवल शास्त्रों में लिखी ये बातें, उपदेशों में दिया गया इस प्रकार का ज्ञान, वास्तविक जीवन में खरा नहीं उतरता।

अरे भाई! जब कुछ विशेष समस्याएं आ जाएँगी तो उसके लिए कुछ विशेष उपाय ही करना पड़ेगा, आखिर समस्याओं से लड़ते-लड़ते तो जीवन नहीं काटा जा सकता। ऊपरी तौर पर कोई कितना ही कहे, लेकिन फल-प्राप्ति की भावना तो उसके मन में रहती ही है, प्रयत्न करने पर सफलता मिलती है - तो उत्साह बढ़ता ही है, और यह उत्साह श्रेष्ठ व्यक्ति को और अधिक कार्य करने की प्रेरणा देता है, निराशा असफलता

के कारण ही उत्पन्न होती है, और असफलता, निराशा व्यक्ति के विकास को रोक देती है, उसकी इन्द्रियां स्वाभाविक रूप से कार्य नहीं कर पाती हैं।

साधनाओं के विवेचन

साधनाएं भी मुख्य रूप से दो प्रकार की होती हैं - सात्त्विक और तामसिक। सात्त्विक साधनाओं में शांत देवताओं के प्रति पूजा अर्चना, जप, निवेदन तथा अर्पण किया जाता है, इन साधनाओं में प्रार्थना-भाव, दीन-भाव विशेष रूप से रहता है, इन साधनाओं से अनुकूलता तो प्राप्त होती ही है और साथ ही मानसिक दृष्टि से भी ये साधनाएं शांति प्रदान करती हैं, व्यक्ति के जीवन में ब्रह्म-तत्त्व का विकास करती हैं।

तामसिक साधनाएं वे साधनाएं हैं, जिनमें साधक अपना अधिकार मांगता है, कुछ वश में करने की इच्छा रखता है, उसमें साधक अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए साधना-तत्त्व को प्रबल बनाता है, जो उसे प्राप्त नहीं है, वह मिलना ही

चाहिए, और इसके लिए चाहे कुछ भी करना पड़े। तामसिक साधनाएं 'अति' की स्थिति में ही सम्पन्न की जाती हैं।

जब दरिद्रता जीवन में स्थायी रूप से आकर बैठ ही जाय, जब शत्रु इतने अधिक प्रबल हो जाएं कि जीवन दूभर हो जाय, जब रोग और बीमारी इस प्रकार बढ़ने लगे कि या तो व्यक्ति उसकी कार्य क्षमता पर, उसके व्यक्तित्व पर प्रभाव डालने लगे अथवा परिवार में बीमारी किसी न किसी रूप में लगती ही रहे, अथवा आकस्मिक दुर्घटनाएं घटित होती रहें, तब इस प्रकार की प्रबल साधनाओं को करने के अलावा कोई अन्य उपाय ही नहीं है। जिस प्रकार आग लगने पर एक-दो बाल्टी पानी डालने से ज्वाला शांत नहीं होती - और उस समय फायर ब्रिगेड को बुलाना ही पड़ता है, इसी प्रकार जीवन में कष्टों की अग्नि प्रज्ज्वलित होने पर तीव्र तामसिक साधनाएं सम्पन्न करना ही एकमात्र उपाय है।

दुःख की अंधियारी काली रात इतनी अधिक लम्बी भी न हो, कि सुख के सूर्योदय की आशा ही खत्म हो जाय, दुःख जीवन के अंग हो सकते हैं, - लेकिन सुखों का सूर्य भी जीवन में जगमगाना ही चाहिए।

प्रबल देव-भैरव

भैरव देव के सम्बन्ध में इतना अधिक साधना साहित्य लिखा है, कि सामान्य साधक यह निश्चित नहीं कर सकता कि उसे किस प्रकार साधना करनी चाहिए? भैरव देव का मूल स्वरूप क्या है, और उनकी शक्तियां कितनी प्रबल हैं, और भैरव की साधना कर किस प्रकार शक्ति प्राप्त करनी चाहिए?

किसी भी शुभ कार्य में, चाहे वह यज्ञ हो, विवाह हो, वास्तु-स्थापना साधना हो, गृह प्रवेश हो अथवा अन्य कोई मांगलिक कार्य हो, भैरव की स्थापना एवं पूजा अवश्य ही की जाती है, क्योंकि भैरव ऐसे समर्थ रक्षक देव हैं, जो कि सब प्रकार के विघ्नों को, बाधाओं को रोक सकते हैं, और कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हो जाता है। छोटे-छोटे गांवों में भैरव का स्थान, जिसे 'भैरव चबूतरा' कहा जाता है, देखा जा सकता है। अशिक्षित व्यक्ति भी अपने पूर्वजों से प्राप्त मान्यता-धारणा के आधार पर भैरव-पूजा अवश्य करता है, इसके पीछे सिद्ध ठोस आधार है, तभी यह भैरव पूजा परम्परा चली आ रही है, हिन्दू विवाह में विवाह के पश्चात् 'जात्रा' का विधान है, और सर्वप्रथम 'भैरव यात्रा' ही सम्पन्न की जाती है। भैरव के विभिन्न स्वरूप हैं, और अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग स्वरूपों की पूजा सम्पन्न की जाती है।

भैरव व्यारव्या

भैरव, शिव के अंश हैं और उनका स्वरूप चार भुजा, खड़ग, नरमुण्ड, खृप्पर और त्रिशूल धारण किये हुए गले में शिव के समान मुण्ड माला, रुद्राक्ष माला, सर्पों की माला, शरीर पर भस्म, व्याघ्रचर्म धारण किये हुए, मस्तक पर सिन्दूर का त्रिपुण्ड, ऐसा ही प्रबल स्वरूप है, जो कि दुष्ट व्यक्तियों को पीड़ा देने वाला, और अपने भक्तों साधकों के हर प्रकार के संकट दूर कर, उन्हें अपने आश्रय में अभय प्रदान कर, बल, ही रहे, अथवा आकस्मिक दुर्घटनाएं घटित होती रहें, तब इस तेज, यश, सौभाग्य, प्रदान करने में पूर्ण समर्थ देव हैं। भैरव प्रकार की प्रबल साधनाओं को करने के अलावा कोई अन्य शिव समान ऐसे देव हैं, कि जो साधक किसी भी रीति से उनकी पूजा-साधना करे - प्रसन्न होकर अपने भक्त को पूर्णता प्रदान करते हैं। भैरव सभी प्रकार की योगिनियों, भूत-प्रेत, पिशाच के अधिपति हैं, भैरव के विभिन्न चरित्रों, विभिन्न पूजा विधानों, स्वरूपों के सम्बन्ध में वर्णन शिवपुराण, लिंग पुराण इत्यादि में विस्तृत रूप से दिया गया है। भैरव का सुप्रसिद्ध मन्दिर एवं सिद्ध पीठ महातीर्थ काशी में स्थित महाकाल भैरव मन्दिर है।

भैरव के विभिन्न स्वरूपों की साधना अलग-अलग प्रकार से सम्पन्न की जाती है, प्रत्येक विशेष साधना का विशेष उद्देश्य, विशेष विधान और विशेष फल होता है, इस लेख में यह सब संभव नहीं है, इसमें भैरव का एक ऐसा साधना प्रयोग दिया जा रहा है, जो कि साधक के जीवन में अक्षय सौभाग्य प्राप्ति हेतु दरिद्रता पूर्ण रूप से दूर कर, अक्षय निधि प्राप्त करने का प्रयोग है।

स्वर्णकिर्षण भैरव साधना

यह साधना किसी भी रविवार अथवा मंगलवार को सम्पन्न की जाती है, तथा साधना एकान्त स्थान में चाहे वह घर हो, अथवा कोई देव स्थान या उद्यान अथवा शमशान, मूल रूप से यह साधना प्रातः सूर्योदय से पहले ही प्रारम्भ कर देनी चाहिए, जिससे समय पर सम्पन्न हो सके, भैरव साधना में सिन्दूर, लोबान, धूप, काजल का विशेष स्थान है, इसके अलावा कांसी की थाली, 'स्वर्णकिर्षण भैरव गुटिका', 'भैरव शक्ति बीज' तथा लाल पुष्प आवश्यक है, इसके साथ ही विशेष बात यह है कि साधक, साधना में आवश्यक छोटी से छोटी सामग्री की व्यवस्था साधना अर्थात् पूजा प्रारम्भ करने से पहले ही कर लें, यह साधना प्रारम्भ करने के पश्चात् जब तक उस दिन का मंत्र जप समाप्त न हो जाय, तब तक आसन से न उठें।

स्नान कर, शुद्ध लाल वस्त्र धारण कर, अपने सामने कांसी

की थाली में हल्दी डालकर बीचोबीच तिलों की ढेरी बनाकर उस पर स्वर्णाकर्षण भैरव गुटिका स्थापित करें, दोनों ओर एक-एक खड़ी सुपारी रखें, पूजा स्थान में ही तेल का दीपक, धूप और अगरबत्ती जलाएं, भैरव गुटिका के सामने काजल से एक त्रिशूल बना कर उस पर दीपक जलाएं, और अपने बांहें हाथ में जल लेकर सर्व प्रथम शरीर शुद्धि हेतु दाएं हाथ से थोड़ा जल अपने शरीर पर, थोड़ा पूजा स्थान में चारों ओर, और थोड़ा अपने आसन की ओर छिड़कें, तत्पश्चात् दोनों हाथ जोड़ कर स्वर्णाकर्षण भैरव का ध्यान करें -

भैरव ध्यान मंत्र

**पारिज्ञातदुकान्तरे स्थिते मणिक्षयमण्डये ।
सिहासनगतं द्यावेद्भैरवं स्वर्णदायिनम् ॥
जग्नेयपत्रं डमर्लं त्रिशूलं वरकरैः सदधतं विनेत्रम् ॥
देव्यायुतं तस्मस्तुवर्णवर्णस्वर्णकृष्णं भैरवमाश्रयामः ॥**

अर्थात् 'माणिक्य निर्मित रत्न सिंहासन पर विराजमान, चार हाथों में क्रमशः स्वर्ण पात्र, डमर्ल, त्रिशूल और अभय मुद्रा धारण किये हुए, तीन नेत्रों वाले, स्वर्ण जैसी कान्तियुक्त आशा वाले, स्वर्णाकर्षण भैरव को - जो साधक को स्वर्ण, धन, सौभाग्य प्रदान करने में समर्थ हैं, इस साधक का प्रणाम ।'

सर्वप्रथम भैरव का आह्वान करें -

आह्वान मंत्र

**आयाहि भगवन् रुद्रो भैरवः भैरवीपते ।
प्रसङ्गोभव देवेश नमस्तुभ्यं कृपानिधि ॥**

सर्वप्रथम भैरव ध्यान मंत्र का उच्चारण कर अपने दोनों हाथों में एक लाल पुष्प लेकर भैरव को पुष्पांजलि अर्पित करें, इस प्रकार यह पुष्पांजलि पांच बार सम्पन्न करनी है, अर्थात् पांच पुष्प भैरव को समर्पित करने हैं।

पुष्पांजलि समर्पण के पश्चात् भैरव को तेल से बनी कोई भी वस्तु का नैवेद्य अर्पित करना चाहिए, और फिर स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्र का प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, भैरव, रुद्राक्ष माला धारण करने वाले देव हैं, इस कारण 'रुद्राक्ष माला' से ही भैरव मंत्र का जप सम्पन्न करना आवश्यक है।

स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्र

**॥उ३५ ऐं कर्त्ता कर्त्तीं कर्त्तूं हाँ हीं हं सः वं अग्नद्वारस्त्रणाय
अजामलबद्धाय लरकेश्वराय स्वर्णाकर्षण भैरवाय मम
दारिद्र्य विद्वेषणाय उ३५ श्रीं महाभैरवाय नमः ॥**

इस प्रयोग में मंत्र जप के साथ विशेष बात यह है कि प्रत्येक

प्रतिभा का मूल्यांकन

एक बार राजा विक्रमादित्य ने साथ में धूमते हुए महाकवि कालिदास से कहा 'कविवर! आप कितने प्रतिभा सम्पन्न एवं मेघावी हैं, पर भगवान् ने आपको आपके गुणों के अनुरूप सुन्दर क्यों नहीं बनाया?' कालिदास ने इस व्यंग्य का जवाब नहीं दिया। वापस महल लौटे। राजा से कहकर कालिदास ने दो पात्र मंगाए एक मिठ्ठी का तथा दूसरा सोने का। दोनों में जल भरकर रख दिया। थोड़ी देर बाद राजा को दोनों घड़ों में से पानी पिलाकर कालिदास ने पूछा - 'महाराज! किस पात्र का जल अधिक शीतल है?' महाराज ने कहा 'मित्र! मिठ्ठी के पात्र का।' कालिदास बोल पड़े 'महाराज! जिस प्रकार शीतलता पात्र के बाद्य आधार पर निर्भर नहीं करती उसी प्रकार प्रतिभा भी शरीर की सुन्दरता या कुरुपता से निर्धारित नहीं होती।'

बार मंत्र जप के साथ ही एक भैरव शक्ति बीज, सिन्दूर में डुबो कर सामने भैरव गुटिका स्थित भैरव को अर्पित करें, इस प्रकार एक माला मंत्र जप भैरव शक्ति बीजों के साथ सम्पन्न करना है।

जब यह साधना पूर्ण हो जाय तो अपने संकल्प, मनोरथ, कामना की प्राप्ति के लिए पूरे आत्मविश्वास के साथ प्रार्थना करनी चाहिए।

कई साधकों को इस प्रयोग में विचित्र अनुभव होते हैं, कई बार साधना के बीच में पूजा-स्थान पर ऐसा अनुभव होता है, कि कोई आकर बैठ गया है, अथवा थोड़ी विचित्र आवाजें आती हैं, लेकिन साधक को इससे विचलित नहीं होना चाहिए। ये सब साधना के श्रेष्ठ रूप से पूर्ण होने के संकेत हैं, कई बार तो साधक को मंत्र जप पूर्ण होते-होते भैरव के दर्शन भी हुए हैं।

साधना की पूर्णता के पश्चात् साधक को उसी स्थान पर बैठ कर, भैरव को अर्पित किया हुआ नैवेद्य ग्रहण करना चाहिए, भैरव का प्रसाद उस स्थान से बाहर ले जाना वर्जित है।

अगले मंगलवार को यह प्रयोग केवल मंत्र जप के रूप में सम्पन्न करना चाहिए, इस प्रकार तीन बार यह प्रयोग सम्पन्न करने पर अनुकूलता की स्थिति प्राप्त होती है, और कई समर्पित साधकों को तो साधना में पूर्णता के मध्य में ही अनायास धन-प्राप्ति होती है, आय के और धन-प्राप्ति के नये साधन प्राप्त होते हैं।

साक्षात् यौवनांगी

मंदबाली अप्सरा

को उतारा जा सकता है इस धरा पर
और साधक जिसे वश में कर सकता है
पूरे जीवन भर के लिए

सहायता किसी सहयोगी से ही मांगी जा सकती है, और सच्चा सहयोगी ही संकट, पीड़ा, बाधा के समय अपना पूर्ण सहयोग देकर मित्रता को मजबूत बनाता है, इसी में मित्रता की सार्थकता है और अप्सरा ही साधक की श्रेष्ठ सहयोगी है।



सामान्य तौर पर व्यक्ति दोहरी जिन्दगी जीता है, उसके बाहरी हाव-भाव, व्यवहार, वेषभूषा को देख कर उसके आन्तरिक विचारों के बारे में अनुमान लगाना अत्यन्त कठिन है। व्यक्ति चाहे पुरुष हो अथवा स्त्री, सामाजिक नियमों के अन्तर्गत चलते हुए, समाज में रहते हुए उसे अपनी भावनाओं को दबाना पड़ता है, इच्छाओं को बार-बार मारना पड़ता है, बेमेल जोड़े बनते हैं, कहीं न तो पति को पत्नी से वास्तविक वृष्टि से प्रेम है, और न ही पत्नी को पति से, पर निभाये चले जा रहे हैं एक दूसरे के साथ एक दिखावा करते हुए, इससे बड़ी विडम्बना क्या होगी, कि इस समाज में व्यक्ति अपने प्रेम भाव को, अपनी इच्छाओं को, अपने आकर्षण को, अपनी कामनाओं को, अपने विचारों को स्पष्ट रूप से बता ही नहीं सकता, मन ही मन ताने बाने बुनता है, और तिनकों की नगरी

प्रेम तो वह दिव्य भाव है, जो स्वतः ही उत्पन्न होता है। यह प्रेम किसी के प्रति भी हो सकता है, और प्रेम का पहला अध्याय है आकर्षण, यदि प्रेम है तो आकर्षण बल के द्वारा है। वह अपने आपको खींच लेगा, यह प्रेम स्वयं की पत्नी के प्रति हो सकता है, किसी अन्य स्त्री के प्रति हो सकता है, किसी मित्र के प्रति हो सकता है, अपने गुरु के प्रति हो सकता है, जहां मन को प्यास का अनुभव हो, जहां मन की सभी सुम शक्तियां जागृत हो उठें, वहां समझो प्रेम प्रकट हो गया।

प्रेम में बड़ी शक्ति होती है, और यह शक्ति साधारण व्यक्ति को महामानव बना सकती है। ... और प्रेम कामवासना से जुड़ा हुआ नहीं है, वह क्रिया तो एक शारीरिक क्रिया है, जब कि प्रेम तो पूरे कुण्डलिनी चक्र को जागृत कर देने की क्रिया है, भाव है। जो साधनाएं प्रेम भाव से करने के लिए होती हैं, उन्हें इसी श्रेष्ठ भाव के साथ सम्पन्न करना चाहिए। जब प्रेम प्रकट हो जायेगा, तो वह दूसरे को आपकी ओर अवश्य ही खींच लेगा।

आखिर प्रेम क्या है?

प्रेम बाजार में मिलने वाली वस्तु तो है नहीं। प्रेम, धन कमा कर, धन को खर्च कर, सुन्दर घर बना कर, प्राप्त नहीं किया जा सकता, ये सब तो सुविधाएं हैं, जिन्हें प्राप्त किया जा सकता है।

प्रेम-साधना में एक शक्ति भाव, अधिकार भाव जुड़ा रहता है, जिसमें इच्छा शक्ति का प्रधान स्थान है, रो-रो कर दीनता

से कोई भी साधना नहीं की जा सकती, प्रेम आपका अधिकार है, और इसे इसी रूप में प्राप्त करना आवश्यक है।

सौन्दर्य साधना - अप्सरा साधना

सामान्य रूप से इस साधना के प्रति बड़ी ही भान्ति फैली हुई है, कई साधक छिप कर यह साधना सम्पन्न करते हैं, कई साधिकाएं पूछती हैं कि क्या हम साधना कर सकती हैं? कई साधक आशंका करते हैं कि क्या इससे हमारे वैवाहिक जीवन पर कोई असर पड़ेगा? इत्यादि-इत्यादि।

सौन्दर्य की साकार प्रतिमा, जिन में देवताओं की शक्ति का अंश-आकर्षण भरा है, वे भोग की वस्तुएं नहीं हैं, प्रेम से उन्हें अपना कर अपना सहयोगी बनाने की साधना है। ...और जो कार्य आपका सच्चा मित्र कर सकता है, जिस प्रकार आप खुल कर अपने मित्र से व्यवहार करते हैं, उसी प्रकार अप्सरा साधना में भी एक प्रिय भाव, मित्र भाव रहता है, और यह प्रियता-मित्रता ही आपको अपना पूर्ण सहयोग देती है, इस सहयोग के पीछे न तो कोई वासना है, न ही अपने से अलग समझने की स्थिति, यह तो भीतर ही भीतर शक्ति जागृत कर, अप्सरा की शक्ति प्राप्त कर एक श्रेष्ठता प्राप्त करने की सुन्दर, आनन्द युक्त प्रक्रिया है।

सहायता किसी सहयोगी से ही मांगी जा सकती है, और सच्चा सहयोगी ही संकट, पीड़ा, बाधा के समय अपना पूर्ण सहयोग देकर मित्रता को मजबूत बनाता है, इसी में मित्रता की सार्थकता है और अप्सरा ही साधक की श्रेष्ठ सहयोगी है।

मदनाक्षी अप्सरा

रम्भा, ऊर्वशी, मेनका, तिलोत्तमा, सुकेशी, इत्यादि अप्सराओं के सम्बन्ध में उल्लेख बहुत सारे ग्रंथों में तोड़-मरोड़ कर आया हुआ है, लेकिन 'मदनाक्षी' के सम्बन्ध में बहुत कम वर्णन है, क्योंकि इस साधना की विशेष प्रक्रिया है, इसके कुछ विशेष गुण हैं, और इसकी साधना पूरे वर्ष नहीं की जा सकती।

अन्य देव योनि अप्सराओं से मदनाक्षी के लक्षण, गुण, अलग हैं, जिनमें मुख्य इस प्रकार से हैं -

1. मदनाक्षी की उत्पत्ति चौदह रत्नों से पहले मानी जाती है, और यह लक्ष्मी तत्व युक्त अप्सरा है।
2. रूप-सौन्दर्य में अन्य अप्सराओं से पूर्णतः अलग है, इसीलिए इसे सर्वांग सुन्दरी माना जाता है।
3. मदनाक्षी में इच्छानुसार रूप परिवर्तन की विशेष शक्ति है, अतः यह किसी भी रूप में प्रकट हो सकती है।
4. मदनाक्षी में त्रैलोक्य आवागमन की अबाध शक्ति है, इस करते हुए, साधना सम्पन्न करता हूँ।

कारण यह अपने सहयोगी साधक के आह्वान पर कभी भी, कहीं भी, 'किसी भी समय आ सकती है।

5. लक्ष्मी तत्व प्रधान होने के कारण यह साधक को धन प्राप्ति के नये उपाय प्रकट करती है, आकस्मिक धन प्राप्ति, गड़े हुए धन के ज्ञान हेतु इसकी साधना विशेष रूप से की जाती है।
6. मदनाक्षी काम स्वरूपा अप्सरा है, और इसकी सिद्धि साधक के व्यक्तित्व में काम भाव पूर्ण रूप से भर देती है, जिससे उसका सौन्दर्य, सहस्र गुना हो जाता है।
7. दूर श्रवण और परिचयानुसंधान अर्थात् दूसरों के मन की बात जानने की सिद्धि केवल मदनाक्षी साधना से ही प्राप्त हो सकती है।
8. संन्यासी साधकों के लिए यह साधना पूर्णतया वर्जित है।

यह साधना साधक अकेले बैठ कर ही सम्पन्न करें, और जहां तक संभव हो, एकान्त स्थान में सम्पन्न करनी चाहिए, और साधना के सम्बन्ध में किसी से चर्चा नहीं करनी चाहिए। सिद्धि प्राप्त होने से पूर्व ही साधना के सम्बन्ध में रहस्य प्रकट करने से फल प्राप्ति नहीं होती है।

यह रहस्य साधना पांच दिन तक सायंकाल, सूर्यास्त के पश्चात् सम्पन्न करनी होती है। एक बार साधना प्रारम्भ करने के पश्चात् बीच में छोड़ना नहीं चाहिए, प्रत्येक दिन का अलग मंत्र व तंत्र विधान है, उसी के अनुसार कार्य करते रहने की आवश्यकता है।

इस साधना हेतु कुल चार सामग्री आवश्यक है -

1. मदनाक्षी चैतन्य गुटिका, 2. 21 वाञ्छव बीज, 3. आठ अष्ट अप्सरा सिद्धि रत्न, 4. नव चेतना प्राकाश्य। इसके अतिरिक्त साधना में प्रतिदिन पुष्प, चावल (अक्षत), सुपारी, सिन्दूर, काजल, इत्र, लाल वस्त्र, पुष्प माला आवश्यक है।

साधना विधान

साधक स्नान कर, सुन्दर वस्त्र पहनें, अपने कपड़ों पर इत्र इत्यादि सुगन्धित द्रव्य अवश्य लगाएं, अपने सामने एक पात्र में लाल वस्त्र बिछा कर उसके मध्य में 'मदनाक्षी चैतन्य गुटिका' स्थापित करें, सुगन्धित धूप, दीप जलायें और पूजा स्थान का द्वार बन्द कर साधना प्रारम्भ करें, स्वयं के सिन्दूर का तिलक लगायें, अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि, 'मैं (अपना नाम) अपनी समस्त मनोकामनाओं की सिद्धि हेतु, लाल वस्त्र धारण किये हुए, रत्न आभूषणों से अलंकृत, प्रसन्न वदना, अरुण आभा-युक्त, सुन्दरतम त्रिपुर मदनाक्षी का ध्यान करते हुए, साधना सम्पन्न करता हूँ।'

अब साधक इत्र से मदनाक्षी गुटिका को स्नान कराएं, फिर उसे पुनः स्थापित करते हुए, उस पर सिन्दूर का लेपन करें, तापन, मोहन तथा उन्मादन तत्व आ जाता है, एक सुगन्धि तत्पश्चात् सुगन्धित पुष्प चढ़ायें, स्वयं सुगन्धित पुष्पों की माला पहनें।

अब नव चेतना प्राकाम्य स्थापित करें और उसके चारों ओर अष्ट अप्सरा सिद्धि रत्न रखें, ये रत्न त्रिपुर मदनाक्षी की आठ सहयोगी अप्सराओं के प्रतीक हैं, ये आठ सहयोगी अप्सराएं हैं -

1. उर्वशी, 2. मेनका, 3. रम्भा, 4. धृताची, 5. पुंजकस्थला, 6. सुकेशी, 7. मंजुघोषा, 8. महारंगवती। प्रत्येक के आगे एक-एक पुष्प रखते हुए इनका आह्वान करें -

कर्त्तीं उर्वशी आवाहामि

कर्त्तीं रम्भा आवाहामि

कर्त्तीं पुंजकस्थला आवाहामि

कर्त्तीं मंजुघोषा आवाहामि

कर्त्तीं मेनका आवाहामि

कर्त्तीं धृताची आवाहामि

कर्त्तीं सुकेशी आवाहामि

कर्त्तीं महारंगवती आवाहामि

अब साधक वीर मुद्रा में बैठकर 21 वामभव बीजों से त्रिपुर मदनाक्षी की शक्ति सोलह योगिनियों और पांच बाणों का आह्वान करें, यह आह्वान साधना में प्रमुख है, इन शक्तियों की स्थापना होने पर जरा, पीड़ा, अपमृत्यु, भय, भूत-प्रेत की बाधा का पूर्ण नाश हो जाता है, और साधना में किसी प्रकार का विघ्न नहीं होता है, तत्पश्चात् पांच बाणों का आह्वान समय वर मांग लेना चाहिए, जिससे साधक शक्ति सम्पन्न होने की क्रिया प्रारम्भ कर देता है, इन सोलह योगिनियों का पूजन निम्न प्रकार से करते हुए, अपने सामने एक-एक वामभव बीज स्थापित करना है -

ऐं गजाननर नमः

ऐं वाराही नमः

ऐं विकटाननर नमः

ऐं शुष्कोदरी नमः

ऐं रक्तक्षी नमः

ऐं प्रचण्डा नमः

ऐं पापहन्त्री नमः

ऐं विद्युत्प्रभा नमः

ऐं सिंहमुखी नमः

ऐं मधूरी नमः

ऐं विकटलोचना नमः

ऐं सुराप्रिया नमः

ऐं पाशाहस्त्रा नमः

ऐं चण्डविक्रमा नमः

ऐं तापनी नमः

ऐं कामाक्षी नमः

अब मदनाक्षी के पांच बाणों का आह्वान किया जाता है, इन बाणों की शक्ति ही मदनाक्षी की शक्ति है -

द्रां द्रावण बाणाय नमः ब्लूं मोहन बाणाय नमः

द्रीं शेषण बाणाय नमः सः उन्मादन बाणाय नमः

कर्त्तीं तापन बाणाय नमः

इन बाणों का मंत्र जप होने से साधक में द्रावण, शोषण, तापन, मोहन तथा उन्मादन तत्व आ जाता है, एक सुगन्धि वातावरण में छा सी जाती है, अपना ध्यान केन्द्रित करते हुए प्रत्येक बाण मंत्र का ज्यारह-ज्यारह बार जप करना चाहिए।

यह पूजन क्रम पूरा हो जाने के पश्चात् मदनाक्षी का मन्त्रानुष्ठान सम्पन्न किया जाना चाहिए, शास्त्रों के अनुसार किसी विशेष इच्छा पूर्ति हेतु भी यह साधना सम्पन्न की जा सकती है और जीवन में पूर्ण रूप से मदन मुख, माया सुख, ऐश्वर्य सुख, सहयोग हेतु भी यह साधना सम्पन्न की जाती है।

मदनाक्षी अप्सरा मंत्र

॥कर्त्तीं कर्त्तीं श्रीं श्रीं हीं हीं त्रिपुर मदनाक्षी
मदीप्सितां योषितं देहि वांछित कुरु स्वाहा॥

इस मंत्र का 108 बार जप वीर मुद्रा में ही करना है, और फिर जब मंत्र जप अनुष्ठान पूरा हो जाय तो नेत्र बन्द कर अपने हाथ ऊंचे कर चुपचाप ध्यान मुद्रा में बैठे रहें, कुछ विशेष चेतनी क्रियाओं का अनुभव होता है, और यह सब साधना में सफलता के प्रतीक हैं।

यह पूजा विधान पांच दिन इसी रूप में करना है, पुष्प प्रतिदिन नये लायें, जब पांच दिन पूर्ण हो जायें तो आपको मदनाक्षी अप्सरा साक्षात् रूप से दिखाई देती हैं, और उस का निर्भर करता है। एक बार मदनाक्षी सिद्ध होने पर साधक जब भी इस पूजा विधान को दोहराता है, मदनाक्षी अपनी समस्त सहयोगिनी अप्सराओं, योगिनी शक्ति तथा बाणों के साथ उपस्थित होती हैं, और साधक के जीवन को रस से सराबोर कर देती है।

जीवन में भौतिक सुखों की इच्छा रखने वाले, पूर्ण आनन्द से जीवन जीने की इच्छा रखने वाले साधक को यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

यह साधना पैकेट तो उपहार स्वरूप ही है, साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर भेजें। कार्ड मिलने पर 570/- की बी.पी.पी. ढास आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

यदि आपके लिये यह संभव नहीं है तो आप 570/- न्यौछावर राशि भेज कर साधना पैकेट प्राप्त कर सकते हैं।



गुरुपूजाकृष्ण निष्ठिपत्र

का

* शार्दूल-आहवान →

चलो मेरे साथ
चलना ही है

मैं किसी परिभाषा में बद्ध गुरु नहीं हूं। मैं पाप-पुण्य और साधना के मंत्र जप का लेखा-जोखा रखने वाला गुरु हूं ही नहीं, और इसी से बार-बार कहने को विवश हो जाता हूं - कि तुम मुझे एक बार, मेरी दृष्टि से तो देखो, अपनी दृष्टि को यदि समाप्त नहीं कर सकते हो तो उसे मेरी दृष्टि में मिलाने की चेष्टा तो करो। तुम्हारे लिए इतना ही पर्याप्त हो जाएगा।

चलो मेरे मन के पथिक! आज हम एक नई यात्रा पर चलें। कहीं किसी छोर पर नहीं छुपा है आनंद का वह कुण्ड जिसकी अतृप्ति तुम्हारे मन में समाई है। व्यर्थ है तुम्हारी सारी युक्तियां क्योंकि तुम जिस आनंद का आभास कर रहे हो, अंत में वह बस 'आभास' ही रह जाएगा, यदि आज मेरी बात सुनी नहीं, गुनी नहीं और अपने रोम-रोम में उतार न ली।

भूल भी जाओ उन शास्त्रों को जिन्होंने तुम्हें गुरु शब्द की बोझिल परिभाषाएं सुना-सुना कर पागल बना दिया है। क्यों भटक रहे हो पोथियों के उस मरुस्थल में जिन्होंने बरसों-बरस से 'गुरु' को 'गु' और 'रु' में तोड़ कर वही एक बात बार-बार दोहरा कर जीवन के संगीत को ही खत्म कर दिया है जीवन के संगीत को सुनो प्रिय, जीवन के संगीत को! गुरु शेष रह सकेगा?

भी एक संगीत ही है लेकिन जब तुमने जीवन का ही संगीत नहीं सुना तो गुरु के प्राणों में इंकृत वीणा के अनहृद को कैसे सुन पाओगे? एक रहस्य की बात बताऊं? मान सकोगे भला? तुम्हारे अंह पर चोट तो नहीं लगेगी? तुम जीवन में कभी संगीत ढूँढ पाओगे भी नहीं क्योंकि तुम जहां और जैसे संगीत ढूँढ रहे हो वह वहां और वैसे है ही नहीं।

यदि यह सोच रहे हो कि पहले जीवन के संगीत को ढूँढ लूं फिर मेरे संगीत को सुन लूं तो बड़ी भूल कर रहे हो तुम। एक अंधे पथ पर पैर क्यों रखने जा रहे हो?

प्रिय! जीवन का संगीत भी सुनना है तो पहले मेरे पास ही आना होगा तुम्हें; उस जीवन के संगीत को सुनने की कला भी मुझसे ही सीखनी होगी तुम्हें क्योंकि स्वर लहरी तो मेरी ही है सर्वत्र! पहचान का मूल तो मैं ही हूं। यह और बात है, कि मेरे प्राणों का संगीत सुनने के बाद तुम्हें और कोई संगीत सुनने की इच्छा रह ही नहीं जाएगी।

सच-सच कहना, एक बार अपने हृदय पर हाथ रख खुद से ही पूछना और खुद को ही बता भी देना कि तब क्या कुछ हैं जीवन के संगीत को सुनो प्रिय, जीवन के संगीत को! गुरु शेष रह सकेगा?

मुझे तो ऐसा नहीं लगता। मुझे विश्वास न होता तो मैं तुम्हें अमंत्रण ही क्यों देता, अपने अन्तर्मन की यात्रा करने का? तुम्हें पथिक की संज्ञा क्यों देता? कि पथिक कह कर तुम्हें मैंने अपनी समीपता दी है? क्या तुम समझ नहीं रहे हो इस नेह-निमंत्रण में मैं भी तुम्हारे साथ चलने का वादा कर रहा हूं?

पथिक बने रहने में ही मेरी समीपता तुम्हें उपलब्ध है। ज्यों ही तुम पथिक नहीं रहे, त्यों ही मैं खुद-ब-खुद तुमसे बिछुड़ जाऊंगा। यह बार-बार नहीं हो सकेगा क्योंकि मैं तो नदी का बहता प्रवाह हूं जो जलधार निकल गई सो निकल गई। फिर कोई नई जलधार आ गई तो तुम्हारा सौभाग्य। लेकिन वह जलधार भी, हो सकता है तुम्हारी परिचित हो या न हो।

टुकरा मत देना मेरे इस आमंत्रण को। खो मत जाना फिर से उन्हीं प्रवंचनाओं में, उसी मद में, मदान्धता में। और फिर जब मद में ही दूबना है तो क्यों नहीं मेरे प्रेम की मंदिरा पी लेते? छक जाओगे तुम, आकंठ तृप्त कर दूंगा तुम्हें, यह मेरा प्यास फिर बच ही नहीं पाई थी -

प्रेम प्याला यूं पिया बाकी रही न वाकि,
प्राका घड़ा कुम्हार कर बहुरि न अरे चाकि।

यह स्वप्न नहीं है वत्स! पलायन भी नहीं है। स्वप्न तो वह है जो तुम दिन-रात देखने में पहले से ही मदमस्त हो। एक स्वप्न हकीकत की जमीन पर आकर छन्न की आवाज के साथ टूटता है फिर भी उसे टूटता हुआ मान नहीं पाते हो। स्वप्न तो तुम दिन रात देख ही रहे हो, पर मैं तो तुम्हें स्वप्नों से मुक्त करने के लिए आया हूं। किसे पलायन कहते हो तुम? इस जगत से तो तुम्हें एक दिन, चाहो या न चाहो जाना ही है। मैं तो जिस पलायन की बात कर रहा हूं वह इसी मृत्यु से पलायन की बात है, किन्तु यह बात तुम तर्क से न समझ सकोगे, किसी युक्ति से भी न समझ सकोगे, और शास्त्रों की परिभाषाएं तो न कभी समझ पाई हैं न कभी समझा पाएंगे। उसे तो तुम मेरे अन्तर्मन में उतर कर ही समझ सकोगे और मेरे अन्तर्मन में उतरने की कोई युक्ति निर्मित की ही नहीं जा सकती। तुम्हें निर्मित करने की आवश्यकता भी नहीं है क्योंकि मैं तो स्वयं एक आमंत्रण लेकर तुम्हारे मध्य आ खड़ा हुआ हूं।

यदि तुम्हें कोई युक्ति करनी ही है तो ऐसी करो कि इस निमंत्रण को सुनने में कोई चूक न हो जाए। ज्ञान का प्रयोग करना चाहते हो तो उसका भी स्वागत है किन्तु वह ज्ञान ऐसा हो जो मेरे आमंत्रण का मर्म तुम्हें समझा जाए। बुद्धि लगाना समझने की एक भी युक्ति की नहीं कि वहीं वे सब कुछ छिन्न-

तो ऐसी लगाना जिससे पथिक बनने की कला सीखी जा सके। मैं तुम्हें श्रद्धा, भक्ति, समर्पण के सूखे उपदेश सुनाने नहीं आया हूं। उसकी मुझे आवश्यकता भी नहीं है। मुझे यदि तुमसे कुछ स्पृहा है भी तो केवल तुम्हारे उन्मुक्त हृदय की, तुम्हारे फैलते हुए पंखों को देखने की, तुम्हारे अन्तर्मन की उस उछाह की, जो सैद्व स्मित बन आओं पर थिरकती रहती हो।

मेरे अन्तर्मन का सम्बन्ध तो तुम्हारे अन्तर्मन के साथ ही तो हो सकेगा न। देह के सम्बन्धों का क्या लेखा-जोखा रखना? वह मेरी साक्षी मैं तुमने अनेक बार बदली है और अभी भी न चेते तो फिर बदल दोगे। फिर से एक बार मेरे समक्ष आओगे-अभाव, दुःख, दारिद्र्य और पीड़ा के पंक में लिपटे हुए। मैं फिर से तुम्हें प्रारम्भ से समझना आरम्भ करूंगा और निश्चित जान लो कि फिर यही बात कहूंगा जो आप तुमसे कह रहा हूं, क्योंकि मैं किसी परिभाषा में बद्ध गुरु नहीं हूं। मैं पाप-पुण्य और साधना के मंत्र जप का लेखा-जोखा रखने वाला गुरु हूं ही नहीं, और इसी से बार-बार कहने को विवश हो जाता हूं - कि तुम मुझे एक बार, मेरी दृष्टि से तो देखो, अपनी दृष्टि को यदि समाप्त नहीं कर सकते हो तो' उसे मेरी दृष्टि में मिलाने की चेष्टा तो करो। तुम्हारे लिए इतना ही पर्याप्त हो जाएगा।

...मैं तो तुम पर सौ-सौ जान से न्यौछावर हो जाने को बैठा हूं लेकिन मुझे तुम्हारी दृष्टि में कोई आमंत्रण मिलता ही नहीं। यदि कुछ मिलता है वहां, तो बस होती है भक्ति की एक खोखली भाव व्यंजना... क्यों करने को इतने व्याकुल रहते हो मेरी भक्ति? भक्ति मैं द्वैत का बोध है, जबकि मैं विभाजन की महीन सीमा रेखा को भी मिटा कर तुम्हें अपने आप मैं निमग्न कर लेने के लिए व्याकुल हो रहा हूं। मैं प्रेम की बात कहूं तो तुम्हारे चित्त पटल पर वासना के वही बिम्ब उभर आएंगे लेकिन गुरु और शिष्य के प्रेम को किसी अन्य रूपक से समझा ही नहीं जा सकता।

कभी किसी स्त्री को एक स्त्री की नजर से देखो। देखा कि कैसे वह विलीन होने से एक पल पहले गुरुर से, नाज से भर उठती है... और जो कोई नाज से भर उठता है वही समाहित करने की क्रिया का रहस्य भी जान जाता है।

यह एक पक्षीय क्रिया है ही नहीं यह तो बस कोई मूक आदान-प्रदान है। कौन खोता है? किसमें खोता है? कुछ साफ-साफ समझ में आता ही नहीं। यह समझ में आ सकता भी नहीं। इसको समझने की चेष्टा करना ही मूर्खता है। हो जो मेरे आमंत्रण का मर्म तुम्हें समझा जाए। बुद्धि लगाना समझने की एक भी युक्ति की नहीं कि वहीं वे सब कुछ छिन्न-

भिन्न हो जाता है, द्वैत पनप उठता है। अपने ज्ञान की चेष्टाओं से तुम यहीं करते आ रहे हो और करते ही जा रहे हो। इसी से मन में कोई अव्यक्त सी छटपटाहट रहती है जिसकी पूर्ति तुम भक्ति की भाव व्यंजनाओं से भौंडे रूप में करना चाहते हो।

-किस अभाव में ग्रस्त हो तुम?

-किस अपराध बोध में उलझ-सुलझ रहे हो तुम?

-किस स्वरूप को तुम देखना चाहते हो मेरे अंदर?

-सोचो! इन बातों को। सोचो तो सही वत्स आज एक बार, बहुत खर्च कर दी तुमने अपनी बुद्धि पैसे जोड़ने में, पत्नी की मनुहारे करने में, बच्चों को सुधारने में। अब थोड़ी सी बुद्धि इन प्रयासों पर भी व्यय करो। उत्तर की चिन्ता न करो क्योंकि ज्यों ही तुम इन प्रश्नों को सोचोगे त्यों ही मैं तुम्हारे अन्दर से सबका समाधान करने को प्रस्तुत हो जाऊंगा ...लेकिन ध्यान रहे कि चित्त पट पर मेरा बोध करके तुम फिर भक्ति न शुरू कर देना। तुम कब सोचोगे इन प्रश्नों को, यह तो मैं नहीं कह सकता। इस जन्म में सोचोगे या अगले किन्हीं जन्मों में?

लेकिन मैं अपना उत्तर आज ही तुम्हें बता दूँ, कि वह सदा इसी आमंत्रण के रूप में मिलेगा। जन्म और मृत्यु के छोर में तुम्हारा जीवन झूल रहा है, जिसे तुम पींगे दे - दे कर बढ़ा रहे हो, जीत भजन गा रहे हो किन्तु मेरा जीवन इस जन्म-मरण के दुःस्वप्न से मुक्त है। मैं खेद, जरा, व्याधि, पीड़ा सभी से मुक्त हूँ। जो कुछ खेद मेरे साथ चल रहा है जिसे मैं बस वहन कर रहा हूँ।

मैं ही जानता हूँ मेरी जिम्मेदारियां क्या है? मैं ही जानता हूँ मेरा इस संसार में आना किस कारण से हुआ है? कभी वेदना होती है कि तुम केवल चर्म चक्षुओं से मुझे देखने का प्रयास करते हो, अपने मन के आत्म चक्षुओं से देखो, मैं तो सदैव तुम्हारा हाथ पकड़ने के लिए तैयार खड़ा हूँ। अपनी बांहों में भरकर चलने के लिए तैयार हूँ। घर-बार, परिवार छोड़ने को भी नहीं कह रहा हूँ। कहीं हिमालय या कन्दरा में ले जाने का आमंत्रण भी नहीं दे रहा हूँ। बस सचेत हो जाने और मेरे सम्मुख व्यक्त हो जाने के लिए कह रहा हूँ। अब कुछ और मत सोचो पथिक!

यों ही अनेक सोच विचार में व्यर्थ ही गंवा चुके हो तुम। बार-बार नहीं आएंगे ऐसे अवसर। बार-बार कहने शायद मैं भी न आ सकूंगा तुम्हारे बीच, पर एक बार मैंने जो हाथ थाम लिया तो बीच में नहीं छोड़ूंगा तुम्हें, इतना तो विश्वास करो मुझ पर...

आज मेरा तुमसे बस इतना ही कहना है।

मंत्र माहात्म्य

एक बार भगवान शिव कैलाश पर्वत पर बैठे थे। तभी उनके पास एक ज्ञानयोगी आया। शिवजी ने उससे वहां आने का प्रयोजन पूछा। वह बोला - मैंने मन में एक जिज्ञासा है। कृपया उसका निवारण कीजिए। आपके भक्त 'ॐ नमः शिवाय' का जाप करते हैं। इससे क्या लाभ होता है? मुझे इस मंत्र का माहात्म्य जानना है। शिवजी ने उससे कहा - तुम स्वयं मंत्रोच्चार करके देख लो। उस ज्ञानयोगी ने शिवजी की बात मान ली। तभी उसे सामने एक कीड़ा दिखाई दिया उसने कहा - 'ॐ नमः शिवाय'। कीड़ा तत्काल मर गया। ज्ञानयोगी ने शिवजी से कहा - यह कैसा मंत्र है? जिस पर प्रयोग किया, वही मर गया। शिवजी बोले - एक बार और करो। इस बार ज्ञानी को एक तितली दिखाई दी। उसने मंत्र का प्रयोग तितली पर किया, तो वह भी मर गई। ज्ञानयोगी बहुत दुःखी हो गया। उसने शिवजी से उलाहने के स्वर में कहा - आपका मंत्र तो माहात्म्य रहित है। यह तो मारक मंत्र है। ऐसे मंत्र से क्या लाभ, जिसके जाप से जीवन के स्थान पर मृत्यु मिले।

वह चलने को हुआ, तो शिवजी ने उसे एक बार फिर मंत्रजाप करने को कहा। भगवान की बात कैसे तालें? मन मारकर उसने एक सुंदर मृग पर मंत्र का प्रयोग किया। वह भी मृत्यु को प्राप्त हुआ। अब ज्ञानी ने निश्चय कर लिया कि वह शिव की बातों में नहीं आएगा, मगर शिव कहां मानने वाले थे? इस बार एक मां अपने दुधमुहे बच्चे को लेकर निकली। शिवजी के अत्यधिक आग्रह पर ज्ञानी ने अंतिम बार मंत्र का प्रयोग करने का निश्चय करके उस बच्चे पर मंत्र लक्षित किया, तो वह बालक युवा बन गया और बोला - हे ज्ञानी, तुझे कोटिः धन्यवाद। आपके मंत्रोच्चार ने मुझे विविध योनियों से मुक्ति दिलाकर यहां तक पहुंचाया है। कीर रो तितली, मृग और मानव जो सर्वश्रेष्ठ योनि है। अब ज्ञानी की आंखें खुल गईं और उसे 'शिव' होने का मतलब समझ में आया। संहार से सृजन तक की इस परम्परा का नाम ही 'शिव' है। यही संसार का सार है, जो इसे समझ लेता है, विचलित नहीं होता।

जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर

क्षद्रुष्ट व्रा ववदान आशीर्वाद

कृष्ण शक्ति तत्त्व युक्त

आकर्षण समोहन प्रदायक

ब्रह्मी दीक्षा



जब जीवन में आकर्षण और समोहन का बीज प्रस्फुटित होता है तो व्यक्ति का रोम-रोम खिल उठता है, चेहरे पर निखार आता है और एक ऐसी अपूर्व कांति तथा शांति दोनों का प्रभाव देखने को मिलता है जो व्यक्तित्व को बदल देता है। इसमें समर्थ गुरु और योग्य शिष्य दो की ही आवश्यकता है। तीसरा बीच में कोई नहीं है।

यही विशिष्ट शक्तिपात दीक्षा वायवीय तरंगों द्वारा शिष्यों-साधकों को जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर प्राप्तः प्रदान की जायेगी, यह अवसर जीवन में सम्पूर्ण परिवर्तन लाने का समय-काल है। जब व्यक्तित्व गुरुमय बन जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में तीन स्थितियां सृष्टि, विधाता हुआ है। उसके बारे में ही बार-बार विचार कर चिंता करना की ओर से दी हुई है। ये तीन स्थितियां हैं - जन्म, भाग्य व्यर्थ है। अपने जीवन में इन तीन स्थितियों को भूल जाइये। और मृत्यु। इन तीनों पर मनुष्य का नियन्त्रण नहीं है। हमारा अब विचार करते हैं कि मनुष्य के हाथ में क्या है? मुनुष्य जन्म किस स्थान पर, किस माता-पिता के गर्भ से क्यों हुआ के हाथ में कर्म है, जीवन जीने का तरीका है, व्यक्तित्व को इसका हमें कोई ज्ञान नहीं रहता। इसके अलावा हमारे भाग्य श्रेष्ठ बनाने की क्रिया है, दुःख को सुख में बदलने की क्रिया में क्या लिखा है, इसका भी मनुष्य को ज्ञान नहीं है। भाग्य को है, इच्छाओं को पूरा करने के साधन और प्रयास हैं। इसके कालज्ञान भी कह सकते हैं अर्थात् भविष्य काल में आने वाली अलावा भी हजारों ऐसी चांड़े हैं, स्थितियां हैं जो मनुष्य के घटनाएं। कोई भी ज्योतिर्षी चाहे कितने ही दावे करे वह स्वयं हाथ में हैं जिनके बारे में वह स्वयं निर्णय लेकर अपने आपके आने वाले प्रत्येक दिवस का लेखा - जोखा नहीं दे जीवन को बदल सकता है।

सकता है। हर व्यक्ति के जीवन में प्रत्येक दिन नवीन होता है।

हर दिन नई घटनाएं होती हैं, नई क्रियाएं होती हैं। इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को जीवन के समाप्त अर्थात् मृत्यु की स्थिति, मृत्यु का स्थान और मृत्यु का दिवस ज्ञात नहीं होता है।

तो क्यों नहीं उन बातों और स्थितियों की ओर ही ध्यान लिया जाए जो आपके स्वयं के हाथ में है। भक्ति, प्रेम, शांति, आनन्द, विचार, ज्ञान, चिन्तन, मनन आदि के साथ पांच कर्मन्दियों का और पांच ज्ञानेन्द्रियों का नियन्त्रण आपके हाथ उपरोक्त तीन स्थितियों के बारे में यदि विधाता ने हमें मैं है। जीवन में प्रतिकूलता तभी आती है जब, व्यक्ति का जानकारी नहीं दी है तो उसमें विधाता की इच्छा, रहस्य छिपा कर्मन्दियों और ज्ञानेन्द्रियों पर नियन्त्रण समाप्त हो जाता है।

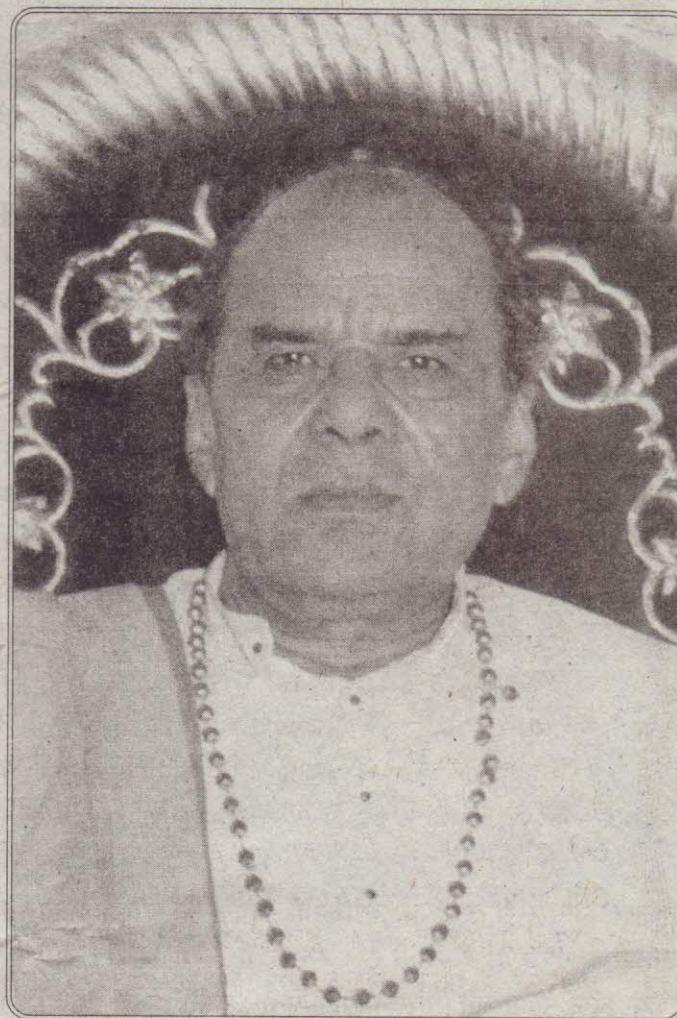
व्यक्ति के जीवन में तभी प्रतिकूलता आती है जब उसमें विचार, चिन्तन, मनन करने की शक्ति, आनन्द, सुख, ज्ञान, प्रेम करने की क्षमता समाप्त हो जाती है।

इसका सीधा तात्पर्य यह हुआ कि जीवन में 98 प्रतिशत स्थितियां हमारे स्वयं के हाथ में हैं। जन्म, मरण और भाग्य को छोड़ दीजिए उनके बारे में कभी भी विचार ही मत कीजिए। जो आपके हाथ में है उसे कैसे श्रेष्ठ बनाया जा सकता है, उस पर विचार करना ज्यादा श्रेयस्कर है।

मनुष्य जीवन क्या है?

मनुष्य जीवन केवल हाइ-मांस के पुतले में सांस चलने की क्रिया ही नहीं है। यह क्रिया तो सभी में विद्यमान है। यह क्रिया तो अपने आप ही चलती रहेगी। जो अपने आप चलती रहती है, उसे चलने दीजिए। विचार यह करना है कि इस हाइ-मांस के पुतले को जिसमें सांस चल रही है जिसे मनुष्य देह, शरीर, प्राण, आत्मा कहा गया है इसे उन्नत कैसे बनाया जाए? शरीर में बल भरा जाए, शक्ति भरी जाए, क्रिया भरी जाए, इच्छाएं-कामनाएं भरी जाएं, वासनाएं भरी जाएं, भोग और लिप्स्साएं भरी जाएं या इसमें और भी कई प्रकार के तत्व भरे जाएं। यह निर्णय तो मनुष्य को ही लेना है। इसीलिए परमात्मा ने उसे बुद्धि प्रदान की है, आत्म ज्ञान प्रदान किया है कि वह अपने जीवन में ऊपर लिखी तीन स्थितियों को छोड़ कर बाकी सारे निर्णय अपने आप ले ले। सत्य कहा जाए तो ज्यादातर मनुष्यों में निर्णय लेने की क्षमता होती ही नहीं है, या तो वे दूसरों को देखकर कार्य करते हैं या दूसरों की सलाह से कार्य करते हैं अथवा पारिवारिक, सामाजिक बन्धनों के अधीन निर्णय लेते हुए कार्य करते हैं। ऐसे सभी व्यक्तियों का जीवन बहुत साधारण जीवन चलता है। ज्यादातर लोगों को साधारण जीवन जीने में ही उचित लगता है तो यह उनकी इच्छा है। इसमें परमात्मा का कोई हस्तक्षेप नहीं है।

लेकिन सब मनुष्य एक जैसे नहीं होते, हर मनुष्य में जो हजारों गुण हैं, उनमें से कुछ अपने गुणों का विकास करते हैं और विकास करने के लिए निश्चित तौर पर एक सहारे की आवश्यकता पड़ती है। सृष्टि से प्रारम्भ से आज तक मनुष्य को जो शुद्धतम्, श्रेष्ठतम्, दृश्यमान सहारा प्राप्त हुआ है, वह व्यक्तित्व है 'सद्गुरु'। परमात्मा तो कण-कण में विद्यमान है, शास्त्रों में साधु-संन्यासियों को अलमस्त, मस्तमौला, सारी सृष्टि का स्वरूप ही परमात्मा की लीला का विस्तृत मनमौजी बताया गया है। अब यात्रा इतनी ही करनी है कि स्वरूप है। परमात्मा अव्यक्त है, अदृश्य है इस कारण जो पूर्ण चिन्ताओं के भार से मुक्त होना। इसके लिये क्या उपाय है? सहारा चाहिए वो हमें प्राप्त नहीं हो पाता।



जब खोज करते-करते मनुष्य के जीवन में गुरु मिल जाते हैं तो उसके ऊपर से सबसे बड़ी बाधा, भार चिन्ता तो हट ही जाती है। चिन्ता का भार संसार में सबसे बड़ा भार है। एक मनुष्य सौ किलो वजन उठा सकता है लेकिन चार चिन्ताओं का वजन उठा नहीं पाता है। जब वह चिन्ता रूपी वजन नहीं उठा पाता है तो उसके जीवन में भय आता है, निराशा आती है, पराजय का भाव आता है, अशांति आती है और इन सब स्थितियों के कारण पीड़ा होती है, बीमारी आती है और वह मनुष्य जल्दी से जल्दी मृत्यु की ओर कदम बढ़ाता है। संसार में सुख और दुःख की परिभाषा में कोई लम्बा-चौड़ा अन्तर नहीं है। सुखी व्यक्ति वह है जिस पर चिन्ता का भार न हो (ये चिन्ताएं कई कारणों से आ सकती हैं) और संसार में दुःखी व्यक्ति वही है जिस पर चिन्ताओं का भार है। इसीलिए हमारे सभी स्थितियों को साधु-संन्यासियों को अलमस्त, मस्तमौला, मनमौजी बताया गया है। अब यात्रा इतनी ही करनी है कि चिन्ताओं के भार से मुक्त होना। इसके लिये क्या उपाय है? ... और जब वह उपाय प्राप्त हो जाता है तो मनुष्य को यह भी

ज्ञान हो जाता है कि उसके मन देह में कितने चिन्ता रूपी काटे हैं, काटे गड़े हुए हैं और उन काटों को एक-एक कर कैसे निकालना है? जिस दिन एक कांटा निकाल दोगे जीवन में एक सुख आ जायेगा और एक-एक करके ही चिन्ता रूपी काटे निकाले जा सकते हैं। ऐसी कोई मशीन नहीं बनी है कि एक बार उस मशीन को स्पर्श किया अथवा उसका करंट आप में प्रवाहित किया और सारे चिन्ता रूपी काटे एक साथ दूर हो गए हों, जैसे जीवन की यात्रा में हम एक-एक क्षण जीते हैं उसी प्रकार एक-एक कर चिन्ताओं, बाधाओं को समाप्त करना पड़ता है।

आनन्द युक्त जीवन क्या है?

मनुष्य जीवन की यह सादी परिभाषा तो हर एक के समझ में आ जाती है लेकिन अब आगे मुख्य प्रश्न यह है कि जीवन में आनन्द और सुख क्या है?

क्या वस्त्र में आनन्द है? क्या खान-पान में आनन्द है?, क्या स्वर्णभूषण में आनन्द है?, क्या वाहन में आनन्द है?, क्या काम में आनन्द है? या ये सब स्थितियां आनन्द को देने का एक छोटा सा साधन है। वास्तविक आनन्द तो कुछ और ही है। इसके लिये हम किसे देखें, किसका उदाहरण लें, किसका अनुसरण करें? हर व्यक्ति के सामने उन व्यक्तियों का उदाहरण रहता है, जिन्होंने इस संसार में जन्म लिया, कार्य किया और महान् बने। हर व्यक्ति अपनी-अपनी इच्छा, बुद्धि, ज्ञान और विवेक के आधार पर अपने आदर्श को चुनता है।

चाहे वह राजनीति का क्षेत्र हो, विद्या का क्षेत्र हो, विज्ञान का क्षेत्र हो, कला का क्षेत्र हो। यदि हम राजनीति में किसी को अपना आदर्श बनायेंगे तो निश्चित रूप से ऐसे व्यक्ति को ही ऐसा नहीं समझेंगे कि हम कृष्ण को भगवान नहीं मानते हुए आदर्श बनायेंगे जिसने अपने जीवन में राजनीतिक उच्चतम सफलता प्राप्त की हो। विद्या के क्षेत्र में भी आदर्श बनायेंगे तो, ऐसे ही खिलाड़ी को आदर्श बनायेंगे जिसने वर्ल्ड रिकॉर्ड स्थापित किया हो न कि ऐसे को आदर्श बनायेंगे जो फिसड़ी को आदर्श बनायेंगे न कि गर्नी-मौहल्ले में गाने वाले गायक को आदर्श बनायेंगे। ... और इस स्थिति को स्वीकार कर उच्चतम आदर्श बनाना ही सही निर्णय है। भीड़ को आदर्श नहीं बनाया जा सकता है। भीड़ से अलग एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व को आदर्श बनायेंगे।

गुरु भी बनायेंगे तो मंदिर के पुजारी को या किसी महन्त को, कथा वाचक को गुरु नहीं बनायेंगे, चाहे वे अपने स्वयं के नाम के आगे कितने ही गुरु शब्द लिख दें। उसे हम पण्डा, पुजारी, महन्त, ज्योतिषी मान सकते हैं लेकिन अपना गुरु नहीं मान सकते। गुरु उसे ही मानेंगे जिसके साथ मन का सम्बन्ध बन रहा हो। यह मन का सम्बन्ध कब बनता, कैसे बनता है इसकी आगे चर्चा करेंगे।

क्या देवता आदर्श हो सकते हैं?

हाँ! अवश्य हो सकते हैं, इसमें कोई सदेह नहीं है। देव चाहे दुर्गा हो, गणेश हो, सूर्य हो, जगदम्बा हो, हमारे आदर्श अवश्य हो सकते हैं। जिनके जीवन चरित्र को जानकर-समझ कर मन के भीतर ज्ञान, विवेक और आनन्द की हिलोर उठती है और चिन्ताओं का भार कम लगने लगता है वे ही आदर्श गुरु हैं। प्रस्तुत लेख में इन सब देवी-देवताओं का ध्यान करते हुए उनके श्री चरणों में वंदन करते हुए श्री कृष्ण के जीवन चरित्र के सम्बन्ध में अपने मन की कुछ बात अवश्य कहना चाहूँगा कि किस प्रकार कृष्ण का जीवन था? किस प्रकार उन्होंने जीवन जिया? किस प्रकार की क्रियाएं सम्पन्न कीं? किस प्रकार का ज्ञान प्रदान किया? किस प्रकार का आदर्श स्थापित किया? और किस प्रकार एक सामान्य कुल में जन्म लेकर 'जगदगुरु' तक पहुंचे। यह केवल लीला मात्र नहीं है? इनमें से प्रत्येक का स्पष्ट उदाहरण हमारे सामने कृष्ण-जीवन की विशेष बातें हैं।

यहाँ हम कृष्ण के जीवन को एक निष्पक्ष भाव से अन्वेषण की दृष्टि से अवलोकन कर रहे हैं, इससे कुछ व्यक्ति कदापि जिस विद्यार्थी ने शिक्षा में उच्चतम अंक प्राप्त किये हैं उसे ही ऐसा नहीं समझेंगे कि हम कृष्ण को भगवान नहीं मानते हुए साधारण व्यक्ति मान रहे हैं। हम तो स्पष्ट कह रहे हैं कि कृष्ण - 'जगदगुरु' हैं, इसीलिये 'कृष्णम् वन्दे जगदगुरु' कहा गया है। लेकिन वे जगदगुरु कैसे बने इस पर भी तो विचार आवश्यक है। ऐसा तो नहीं हुआ कि उस समय की भारत भूमि के सभी व्यक्तियों ने आज की तरह मत देकर कह दिया कि कृष्ण जगदगुरु हैं। वोट डालने की क्रिया तो उस समय थी नहीं। लोगों ने देखा, समझा, परखा और फिर हाथ जोड़ कर उन्हें 'जगदगुरु' कहा। अब कृष्ण-जीवन की कुछ घटनाओं का विश्लेषण करते हैं -

☆ कृष्ण का जन्म अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में कारागृह में हुआ। जिनके सभी बड़े भाईयों-बहनों को, जो उनसे पहले उनकी माता के गर्भ से उत्पन्न हुए थे उन्हें मार दिया गया था।

- ☆ नवजात शिशु कृष्ण को भी मारने की पूरी क्रिया/योजना थी और उनके माता-पिता की बुद्धि से वे बच गये और जन्मते ही उन्हें यशोदा और नन्द के घर जाना पड़ा।
- ☆ कृष्ण के माता-पिता वसुदेव राजा थे लेकिन कृष्ण को अपने बाल्यकाल में एक दिन भी राजकुमारों जैसा राजशाही सुख प्राप्त नहीं हुआ।
- ☆ गोकुल में सामान्य ज्वाल बालों के संग बचपन बिताना पड़ा और एक ग्रामीण की भाँति जंगलों में जाना, गाय चराना यह कार्य था। अर्थात् कोई शिक्षा का प्रावधान भी नहीं था।
- ☆ गोकुल में भी इतना अत्याचार कि मथुरा का राजा कंस चुन-चुन कर इनके मित्रों-ज्वाल बालों को मार देता था और गोकुल पर पूर्ण अत्याचार करता था।
- ☆ कष्ट पूर्ण जीवन इतना कि - एक ग्रामीण बालक को जो क्रियाएं और कार्य करने पड़ते हैं वह सब उन्हें करने पड़े।
- ☆ 12 वर्ष की आयु में मथुरा आकर स्वयं अपने मामा कंस का वध करना पड़ा। जिससे मथुरा के लोग और गोकुल के लोग अत्याचार से मुक्त हो सके तथा अपने पिता को कारागृह से मुक्त कराया और राजा अग्नेसन को राज्य गद्दी पर बिठाया न कि विजयी होकर खुद सम्राट बनें।
- ☆ जरासंध जैसे महारथियों से युद्ध करना पड़ा।
- ☆ उसके बाद मथुरा से बहुत दूर अकेले उज्जैन जाकर गुरु को ढूँढ़ा तथा सांदीपन को गुरु धारण किया और उनसे प्रारम्भिक शिक्षा, ज्ञान शिक्षा, दीक्षा, संस्कार सारे ग्रहण किये। उस पूरे काल में वे पूर्णतः एक शिष्य की भाँति गुरु आश्रम में रहे। कहीं कोई अभिमान नहीं कि मैं वीर हूँ, योद्धा हूँ और मैंने कंस जैसे महारथी का वध किया है।
- ☆ वैसे तो शिक्षा, दीक्षा का और गुरु का ऋण चुकाया नहीं जा सकता है लेकिन गुरु की सेवा करते हुए जब एक बार सांदीपन ऋषि के पुत्र का देहांत हो गया तो अमृत संजीवनी क्रिया द्वारा पुनः उसे जीवित किया। यदि कोई सामान्य शिष्य होता तो अपने गुरु को अवश्य पूछता कि आप हमें इतना ज्ञान दे रहे हो और स्वयं अपने पुत्र के सम्बन्ध में कुछ क्यों नहीं कर पा रहे हो? वास्तव में कृष्ण ने ही श्रेष्ठतम शिष्य धर्म का पालन किया और यह सिद्ध किया कि गुरु आज्ञा ही सर्वोपरि और गुरु के



लिये कितना भी बड़ा कार्य किया जाए तो भी गुरु ऋण से मुक्त नहीं हुआ जा सकता।

आश्रम में मित्र बनाया तो सामान्य ब्राह्मण बालक सुदामा को और यह मित्रता जीवन भर रही। वैसे तो कथा कहानियों में कृष्ण के हजारों सखा-सखियों का उल्लेख आता है परन्तु वास्तविक मित्र के रूप में सुदामा का ही उल्लेख है। अर्थात् महान् व्यक्ति अपनी मित्रता जीवन भर निभाते हैं।

शिक्षा, दीक्षा के बाद पुनः मथुरा आकर भारत वर्ष में फैली अराजकता और अर्धम् को समाप्त करने के लिये पांडवों को उत्साह एवं शक्ति प्रदान की। जब-जब जीवन में पांडवों को आवश्यकता पड़ी, चाहे वह द्रौपदी स्वयंवर हो, पांडवों का वनवास हो, खाण्डव वन का अग्निकाण्ड हो अथवा विराट नरेश के यहां पांडवों का अज्ञात निवास हो। हर स्थिति में कृष्ण ने पांडवों का सहयोग दिया क्योंकि पांडव सत्य के साथ थे। कृष्ण कभी धृतराष्ट्र, भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य के प्रलोभन-आवधारण आदि से प्रभावित नहीं हुए और हर स्थिति में पांडवों को ही नहीं, कुन्ती और द्रौपदी का भी

साथ दिया और पूरा महाभारत युद्ध जिसे केवल पाण्डवों और कौरवों का युद्ध कहना असत्य होगा। यह तो धर्म और अर्थम के बीच का युद्ध था और इस युद्ध में पूरे भारत वर्ष के राजाओं ने अपनी-अपनी सेनाओं के साथ भाग लिया। प्रमुख राजाओं ने अपनी बुद्धि के अनुसार बलशाली कौरवों का साथ दिया और विवेकशील राजाओं ने पाण्डवों का साथ दिया।

- ☆ इससे भी बड़ी विशेष बात यह कि कृष्ण ने ही पाण्डवों के साथ अर्जुन के सारथी बनकर पूरे युद्ध का संचालन किया। जिससे यह स्पष्ट होता है कि संसार में कोई भी युद्ध बल के आधार पर नहीं अपितु बुद्धि के आधार पर ही जीता जाता है। जीवन में भी यही बात लागू होती है। बल हो, लेकिन बल बुद्धि के अधीन है।
- ☆ युद्ध के उपरान्त निःस्पृह भाव से सब कुछ छोड़ कर एक अद्वितीय नगरी, समुद्र के किनारे अनजान लोगों के बीच बसाना भी कृष्ण जैसे व्यक्ति के लिये ही संभव है।
- ☆ युद्ध के ठीक पहले जो ज्ञान उन्होंने गीता के रूप में दिया वह सारे शास्त्रों का निचोड़ है, जिसमें ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग, सांख्य योग इत्यादि सारे विषयों का विस्तार से विवेचन है। केवल गीता पढ़ने, और गीता को समझने मात्र से मनुष्य के जीवन के सारे सन्देह दूर हो जाते हैं और जो सन्देह रहित है वही तो जीवन में ज्ञानी और गुणी बन सकता है। वही आत्मलीनता और पूर्ण आनन्द को प्राप्त कर सकता है।

जब भी आपके जीवन में कोई सदेह रहता है तो आप सफलता प्राप्त कर ही नहीं सकते क्योंकि सदेह आपकी शक्ति को आधा कर देता है, आपकी बुद्धि, विवेक को मंद कर देता है; इसीलिए सदगुरुदेव निखिल भी यही कहते हैं कि - यदि तुम्हें मुझे पूर्ण रूप से पाना है तो सन्देह से मुक्त होकर मेरे पास आओ तभी तुम मुझे समझ सकोगे, अपने जीवन को समझ सकोगे।

ऐसा क्या था कृष्ण में?

जीवन में दो गुण ऐसे हैं जिनका व्यक्ति विकास कर सकता है और जब ये दो गुण होते हैं तो व्यक्ति सदेह से मुक्त हो जाता है, व्यक्ति के जीवन में सुख और आनन्द आ जाता है। ये दो गुण हैं - आकर्षण और सम्मोहन। ये दोनों गुण एक नहीं हैं, अलग-अलग हैं। आकर्षण का तात्पर्य है आपके लकेत्व में वह शुद्धता, उदात भावना, उच्च चरित्र, स्वभाविक नुस्कान किया। तभी तो वे प्रत्येक के मन के सम्राट बन सके।

और आनन्द हो जो आपके चेहरे से ही नहीं, रोम-रोम से इलके। आकर्षण के लिये आवश्यक नहीं है कि आप छः फुट के व्यक्तित्व हों अथवा रंग गोरा हो अथवा काया में सुगन्ध हो। आकर्षण वह तत्व है जो दूसरों को आपकी मुस्कान से, आपके हाव-भाव से, आपकी भावना से आपकी ओर आकर्षित करता है और लोगों को आपके पास बैठने से, बात करने से आनन्द मिलता है। यह एक ऐसा गुण है, जिसे केवल शुद्ध मन से ही विकसित किया जा सकता है। स्वार्थ भरे मन से, जोड़-तोड़ की भावना से यह आकर्षण का गुण उत्पन्न नहीं किया जा सकता। इसके लिये अपने आपको बदलना पड़ता है, अपने विचारों में परिवर्तन लाना पड़ता है, अपनी सोच को बदलना पड़ता है, दूसरे से फायदा उठाने की बजाय, दूसरों को मदद, सहयोग देने की भावना अन्दर से होनी चाहिए। इसके साथ जिस चीज के बारे में आपको ज्ञात नहीं है, उसके बारे में असत्य भी न बोलें अर्थात् आकर्षण शुद्ध व्यक्तित्व में ही होता है, जिसमें स्वार्थ, छल, कपट, नीचता को कोई स्थान नहीं है। जब हम अपने जीवन को इस रूप में बदलने की क्रिया करते हैं तो धीरे-धीरे आकर्षण तत्व जाग्रत होता है ... और जब आकर्षण तत्व जाग्रत होता है तो चेहरे पर तेज आता है व्यक्तित्व में आभा आती है।

यह भी सत्य है कि जिन व्यक्तियों ने अपने जीवन में आकर्षक गुणों का विकास किया है, उनके व्यक्तित्व में ही सम्मोहन आता है। अर्थात् आकर्षण युक्त व्यक्तित्व किसी से बात करता है, किसी की ओर देखता है तो सामने वाला सम्मोहित हो जाता है वह उसके पास ज्यादा से ज्यादा बात करना चाहता है, बैठना चाहता है, उसे स्पर्श करना चाहता है, उसकी बात को सुनकर प्रसन्नता होती है। यही तो सम्मोहन है, सम्मोहन के लिये प्रयास नहीं करना पड़ता। किसी की आंखों में आंखें डालकर पांच मिनट घूरने की आवश्यकता नहीं है। किसी को नींद की दवा देकर उसे सुलाकर उसके मन की बात निकलवाने की क्रिया को सम्मोहन नहीं कहते हैं। सम्मोहन का सीधा तात्पर्य है कि आप 'सम' और 'मोहन' अर्थात् स्वयं कृष्ण बनें। कृष्ण का एक नाम 'मोहन' भी है। कृष्ण तभी बन सकते हैं, जब आपका मन शुद्ध हो, सदैव सत्य के साथ हो, कृष्ण चाहते तो स्वयं पूरे भारत वर्ष के चक्रवर्ती सम्राट बन सकते थे क्योंकि उनमें शक्ति, क्षमता सहित घोड़श कलाएं विद्यमान थीं लेकिन उन्होंने जिसका जो हक है वह अधिकार दिलाने का ही कार्य किया। तभी तो वे प्रत्येक के मन के सम्राट बन सके।

उपरोक्त गुणों में मैंने कृष्ण-राधा प्रसंग, प्रेम प्रसंग, कृष्ण-रुक्मणी विवाह, रास-लीला इत्यादि का कोई विवेचन नहीं किया है क्योंकि उनका विवेचन एक अलग प्रकार की विषय वस्तु है। आपके जीवन में रास-लीला, प्रेम-प्रसंग प्रमुख नहीं है। आपके जीवन में प्रमुख है कैसे आपका व्यक्तित्व आकर्षण युक्त बने, कैसे आपमें सम्मोहन की शक्ति प्राप्त हो।

शक्तिपात

क्या किसी व्यक्तित्व में सम्मोहन, आकर्षण की शक्ति प्रदान कि जा सकती है? इसका सीधा उत्तर है समर्थ व्यक्ति द्वारा योग्य व्यक्ति को शक्ति प्रदान करना। जो उस शक्ति तत्व को संभाल कर रखें और उस शक्तितत्व का विकास करें, उसे ही शक्तिपात की क्रिया कहा गया है। जिस प्रकार गंगोत्री से गंगा बनती है, उसी प्रकार गुरु रूपी हिमालय से भी शक्ति का प्रवाह प्रारम्भ होता है और यह शक्ति का प्रवाह योग्य व्यक्तियों के लिये पुण्यदायी, आनन्ददायक है और अयोग्य व्यक्तियों के लिये एक सामान्य जल है। जब जीवन में आकर्षण और सम्मोहन का बीज प्रस्फुटित होता है तो व्यक्ति का रोम-रोम खिल उठता है, चेहरे पर निखार आता है और एक ऐसी अपूर्व कांति तथा शांति दोनों का प्रभाव देखने को मिलता है जो व्यक्तित्व को बदल देता है। इसमें समर्थ गुरु और योग्य शिष्य दो की ही आवश्यकता है। तीसरा बीच में कोई नहीं है।

‘कल्मी’ बीज मंत्र -

जगद्गुरु श्रीकृष्ण का बीज मंत्र है - कल्मी। कल्मी बीज मंत्र शक्ति मंत्र है। इसका तात्पर्य है आकर्षण और सम्मोहन। कृष्ण के विशिष्ट मंत्र हैं -

॥कल्मी कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन्न वल्लभाय
स्वाहा॥

॥कल्मी हस्तिके शाय नमः ॥

॥ॐ श्रीं ह्रीं कल्मी कृष्णायै गोविन्दायै स्वाहा॥

॥ॐ श्रीकृष्णायै असुराक्रन्त भारहारिणी नमः ॥

इन सब मंत्रों का आधार कल्मी बीज मंत्र ही है। जिस प्रकार दुर्गा का बीज मंत्र दुं, भुवनेश्वरी का बीज मंत्र ‘ह्रीं’ है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण का बीज मंत्र ‘कल्मी’ है जो कि महाकाली का भी बीज मंत्र है। अर्थात् जब कृष्ण के साथ महाकाली शक्ति संयुक्त होती है तो पूर्ण श्रीकृष्ण बनता है। इसीलिये साधकों को जपा-अजपा कल्मी बीज मंत्र का जप अवश्य करना चाहिए। होती है।

कृष्ण याक्षिं दत्त्व चुक्ष
श्रावणिं - चामोहन प्रदायक

दत्तीं दीक्षा

दीक्षा के सम्बन्ध में, शक्तिपात के सम्बन्ध में, दीक्षा के महत्व और प्रभाव के सम्बन्ध में सुधि पाठकों को, साधकों को पूर्ण जानकारी है इसलिये इस विषय को यहां दोहराना नहीं चाहता लेकिन इतना अवश्य कहूँगा कि आकर्षण और सम्मोहन जीवन के आवश्यक तत्व हैं। यदि आपके जीवन में ये दो तत्व नहीं हैं तो स्पष्ट रूप से आपका जीवन बेकार है। आपके पास धन है, दौलत है, माया है, पत्नी है, बच्चे हैं, लेकिन जीवन का मूल तत्व आकर्षण, सम्मोहन ही नहीं है तो आप ठीक उसी प्रकार का जीवन जी रहे हैं जैसे संसार के सारे प्राणी जी रहे हैं। ये दो तत्व तो जीवन-आनन्द के आधार तत्व हैं और आपके जीवन में सम्मोहन, आकर्षण का गुण, शक्ति कोई और नहीं दे सकता है, यह तो समर्थ गुरु के वश की ही बात होती है कि वह आपके आज्ञा चक्र पर हाथ रखकर शक्ति का वह तीव्र प्रवाह करें कि इन दोनों गुणों का अंकुरण हो जाए और यह गुण हर स्त्री, पुरुष, बालक, बुद्ध के जीवन का आधार है। ... और इसके लिये कृष्ण जन्माष्टमी से श्रेष्ठ कोई मुहूर्त नहीं है, जिस दिन सद्गुरु स्वयं ब्रह्माण्डीय शक्ति का आह्वान कर आपको वे विशिष्ट शक्ति तरंगें प्रवाहित करेंगे जो सीधे आपके रोम-रोम में प्रवाहित हो जायें और आपका जीवन बदलने की क्रिया प्रारम्भ हो जाये। इसे महादीक्षा कहा गया है।

... और आकर्षण-सम्मोहन शक्ति प्रत्येक शिष्य को गुरु से प्राप्त करनी चाहिए। वैसे तो दीक्षा के सम्बन्ध में कोई मुहूर्त की आवश्यकता नहीं है, प्रत्येक दिन शुभ दिन है। जब शिष्य के मन में अपने जीवन के उत्थान हेतु शक्तितत्व को ग्रहण करने की भावना आये, वही श्रेष्ठतम दीक्षा दिवस है लेकिन इसके साथ यह भी सत्य है कि जिस प्रकार नवरात्रि, दीपावली, होली, महाशिवरात्रि शुभ मुहूर्त कहे गये हैं उसी प्रकार कृष्ण जन्माष्टमी भी श्रेष्ठतम मुहूर्त है, जिस दिन आकर्षण, सम्मोहन, वशीकरण इत्यादि से सम्बन्धित साधनाएं सम्पन्न करनी चाहिए। उसी प्रकार कृष्ण जन्माष्टमी का दिवस ‘कृष्ण शक्ति तत्व युक्त - आकर्षण-सम्मोहन प्रदायक - कल्मी दीक्षा’ के लिये सर्वश्रेष्ठ दिवस है। जो साधक इस दिन पूर्ण श्रद्धा से अपने गुरु और जगद्गुरु श्रीकृष्ण का ध्यान, पूजन, साधना सम्पन्न करता है उसे वैसे ही गुणों और ज्ञान की प्राप्ति अवश्य होती है।

नियम

- ❖ आप इस प्रपत्र को भर कर आज ही लिफाफे में भेज दीजिए, हम आपका प्रपत्र गुरुदेव के समक्ष प्रेषित कर देंगे।
- ❖ गुरुदेव की आज्ञा से आपको “कृष्ण शक्ति तत्व युक्त - आकर्षण-सम्मोहन प्रदायक कलीं दीक्षा” एवं 570/- की वी.पी. से भेज रहे हैं, जिसे आप पोस्ट मैन को देकर वी.पी. छुड़वा लें, और “कृष्ण शक्ति तत्व युक्त - आकर्षण-सम्मोहन प्रदायक कलीं दीक्षा हेतु सामग्री” पहले से ही मंगवा कर अपने पास सुरक्षित रख लें।
- ❖ वी.पी. छूटने पर आपने जो दो मित्रों का पता दिया है, उन्हें एक वर्ष का पत्रिका सदस्य बना कर पूरे वर्ष भर पत्रिका नियमित रूप से भेजते रहेंगे।
- ❖ 2 सितम्बर 2010 को कृष्ण जन्माष्टमी के दिन सामग्री पैकेट के साथ प्राप्त पत्रानुसार पूजन सम्पन्न करें और अपने आपको ऊर्जा प्राप्ति के लिए तत्पर करें।
- ❖ पूज्य गुरुदेव 2 सितम्बर 2010 को दीक्षा प्राप्त: 6.00 से 8.24 तक विशेष मुहूर्त में विशेष ऊर्जा प्रवाहित करेंगे। प्रत्येक साधनारत साधक विशेष गुरु चेतना अनुभव भी करेंगे, और आपके पूरे शरीर में कृष्ण शक्ति स्थापित हो सकेगी। इस काल में निम्न मंत्र का उच्चारण कृष्ण बीज मंत्र से प्राण प्रतिष्ठित ‘सम्मोहन माला’ से करना है। यदि ध्यान भंग भी होता है तो कोई विंता नहीं करें, गुरुदेव के चित्र की ओर देखते रहें -

मंत्र : // दत्तीं //

- ❖ दीक्षां से सम्बन्धित पूर्ण-विधि विधान पूजन पैकेट में प्राप्त दिशा निर्देशों के अनुसार सम्पन्न करें।

आपके जीवन का सौभाग्य

कृष्ण शक्ति तत्व युक्त - आकर्षण सम्मोहन - कलीं दीक्षा

जो आपके सम्पूर्ण जीवन को सिद्धि प्रदान करने एवं जगमगाहट देने में समर्थ है।

आप “कृष्ण शक्ति तत्व युक्त - आकर्षण-सम्मोहन प्रदायक कलीं दीक्षा” पैकेट

570/- रु की वी.पी. से निम्न पते पर भेजें। वी.पी. आने पर मैं छुड़ा लूंगा।

मेरी सदस्या संख्या मेरा पूरा नाम

मेरा पूरा पता

वी.पी. छूटने पर आप मेरे निम्न दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बना दें और रसीद मुझे भेज दें।

मित्र का नाम

मित्र का नाम

पता

पता

बल, बुद्धि, शौर्य, निडरता प्राप्ति हेतु
भूतप्रेत, निर्बलता, भय अनिष्ट निवारण हेतु



हनुमान सिद्धि यंत्र

यह सत्य है, कि जीवन सीधा-सादा नहीं है, जीवन में तो सैकड़ों परेशानियां हैं, संकट हैं, सैकड़ों अड़चने हैं, पग-पग पर शत्रु हम पर वार करने के लिए तैयार हैं; वे तो हमें ऊंचा उठाना देखकर पीठ पीछे से सैकड़ों प्रकार के घड़यंत्र तैयार कर लेते हैं और हमारा सारा जीवन विषाद, तनाव, बाधाओं, अड़चनों और परेशानियों से जूझते हुए व्यतीत होने लगता है... और हम जीवन में जो कुछ करना चाहते हैं, वह नहीं कर पाते, और वह यदि नहीं कर पाते तो जीवन एक साधारण जीवन बन करके रह जाता है।

फिर किस प्रकार इस जीवन में तेजस्विता, उत्साह, प्रफुल्लता और जोश आये? कौन सा ऐसा माध्यम है, जिसके माध्यम से हम दिखा सकें कि एक सामान्य परिवार में उत्पन्न होकर भी बहुत कुछ कर सकते हैं - यह बहुत कुछ कर देने की क्षमता 'हनुमान सिद्धि' के माध्यम से संभव है।

साधक मंगलवार को लाल रंग के आसन पर 'हनुमान सिद्धि यंत्र' स्थापित करें एवं स्वयं भी लाल रंग के वस्त्र धारण कर लाल रंग के ही आसन पर दक्षिण की ओर मुँह करके बैठें। सामने तेल का दीपक जलायें एवं गुड़ का भोग (धी में सान कर) लगायें तथा मूँगे की सिद्ध माला से निम्न मंत्र का 11 माला जप करें।

// ॐ नमो हनुमन्तराय अरवेश्य अरवेश्य स्वाहा //

इस प्रकार नित्य प्रति रात्रि में ही (दस बजे के बाद) 11 दिन तक करें। प्रतिदिन जो भोग लगाएं रात में मूर्ति के सामने ही रहने वें एवं दूसरे प्रातः यह भोग हनुमान के भक्तों में वितरित कर दें तथा स्वयं भी ग्रहण करें। यह अनुष्ठान 11 दिनों का है। बारहवें दिन यंत्र को किसी हनुमान मंदिर में दक्षिणा सहित अर्पित कर दें। साधना काल में साधक पूर्ण ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठदान - 'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

क्या करें आप?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि 'मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूँ एवं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूँ। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'हनुमान सिद्धि यंत्र तथा मूँगा माला' 492/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 402/- + डाक व्यय 90/-) को वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूँगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें', आपका पत्र आने पर हम 402/- + डाक व्यय 90/- = 492/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'हनुमान सिद्धि यंत्र तथा मूँगा माला' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

सम्पर्क :- अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

गुरुकृष्णाम् जोधपुर

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि

पर ये विष्य साधनाटमक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के
लिए यह योजना प्रारंभ हुई है।
इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों
पर जोधपुर 'सिद्धाश्रम' में
पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये
साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के
साथ सम्पन्न कराई जाती हैं,
जो कि उस दिन शाम 6 से 8
बजे के बीच सम्पन्न होती है।
यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो
उसी दिन से साधनाओं में
सिद्धि का अनुभव भी होने
लगता है।

शुक्रवार, 06-08-10

द्वापर युग अर्थात् श्री कृष्ण के समय का काल तो नारी-सौन्दर्य की पूजा-अर्चना, साधना का सर्वोत्तम काल कहा जा सकता है, स्वयं श्री कृष्ण ने अपने पूरे जीवन में उसको पूर्ण महत्व दिया है। रूप-सौन्दर्य उनके वश में था और इसीलिए वे विभिन्न योग-मायाएं करते हुए 'योगेश्वर श्रीकृष्ण' कहलाये।

इसी कारण रूप-सौन्दर्य की पूजा अर्चना और उसे दैहिक अथवा मानसिक रूप से प्राप्त करने की इच्छा अदम्य रूप से रही है और यह इच्छा एक ऐसी इच्छा है, जिसे जब तक सम्पूर्ण रूप से प्राप्त न कर लिया जाय, तब तक शांति नहीं मिलती।

यह तो निश्चित सत्य है कि सुन्दरता सब को अपनी ओर सहज आकर्षित कर लेती है। सुगन्ध मोदिनी अप्सरा सिद्ध साधक सम्मोहन शक्ति प्राप्त कर लेता है। वह किसी को भी अपने वश में कर सकता है, उसके आत्म-विश्वास में कई गुना वृद्धि हो जाती है, उसके कार्य करने की क्षमता बढ़ जाती है और वह बड़ी चुनौतियों को पार करने के लिए तत्पर हो जाता है।

शनिवार, 07-08-10

शिव-गौरी प्रयोग

विवाह दो आत्माओं का संयोग है। यदि यह संयोग ठीक न बैठा तो गृहस्थ जीवन विषमय, कष्टकारी बन जाता है। विवाह को दाम्पत्य-सूत्र-बन्धन भी कहा जाता है, परन्तु यह तो एक वैचारिक दृष्टिकोण है। यदि किसी चीज को प्रारम्भ में ही बन्धन मान लिया जाए, तो वह आजीवन बंधन ही लगती है और परिणाम स्वरूप मिलता है अवसाद, कलह। ठीक इसके विपरीत यदि उसे बन्धन न मानकर एक बंधन मुक्त होने की क्रिया के रूप में देखें, तो वही स्थिति सुखद बन जाती है। वैवाहिक जीवन को सुखद बनाने के लिये शिवगौरी-प्रयोग सम्पन्न करें। शिव-गौरी-प्रयोग सम्पन्न कर वैवाहिक जीवन में सुख-सौभाग्य, होनहार संतान, यश, सम्मान, वैभव, सुख, सुविधा, धर्म आदि की प्राप्ति होती है।

रविवार, 80-08-10

पद्मावती धनदात्री प्रयोग

भारत में जैन धर्म एक ऐसा धर्म है, जिसमें प्रायः सभी लोग सम्पन्न, धनाढ़ी, समाज में सुस्थापित और धन-धान्य से परिपूर्ण मिलेंगे। जैनियों में बहुत कम ऐसे लोग मिलेंगे जो अर्थाभाव अथवा अभाव में जीवन यापन कर रहे हों। कारण यही है कि जैन धर्म में देवी पद्मावती की पूजा, साधना का विशेष प्रचलन है। अहिंसा को आधार मानते हुए भी, सात्त्विकता को अपनाकर जिस तरह जैन धर्मावलम्बी आज समाज में उच्च पदों पर आसीन हैं, बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों के मालिक हैं, तो उनके पीछे कहीं न कहीं देवी पद्मावती की साधना ही छिपी है। देवी पद्मावती जैन धर्म में धन, सम्पन्नता, वैभव एवं ऐश्वर्य की देवी हैं। इनकी साधना से कोई भी साधक कर अपने जीवन में अर्थाभाव को हमेशा के लिए समाप्त कर सकता है। इसकी विधि-विधान सहित साधना एवं तांत्रिक रूप में प्रयोग साधकों के लिए वरदान है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर जोधपुर, गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की एक सदस्यता का वार्षिक शुल्क रुपये 303/- है, जबकि आपको दो सदस्यों का शुल्क मात्र रुपये 570/- ही जमा करवाना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

2. यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका की वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

3. पत्रिका-सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि-परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान-धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयोग से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क है और गुरु-कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर-राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है कि मंदिर में मंत्र-जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है; यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो, और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है, यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करें, और यदि गुरुदेव अपने आश्रम, अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें तो इससे बड़ा सौभाग्य तो और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सदगुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर, प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु-चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ-स्थल पुण्यप्रद हैं, पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सदगुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु-चरणों में उपस्थित होकर गुरु-मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी जोधपुर गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना के बारे में इन 3 दिनों के लिये **06-07-08 अगस्त 2010**

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 300x5=Rs.1500/- जमा करा के या उपरोक्त राशि का बैंक डाप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते निवासाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच समस्यों की सदस्यता शुल्क की राशि का डाप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर जोधपुर कार्यालय के पते पर भेजें। आपका फोटो, पांच समस्यों के नाम, पते एवं डाप्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जाने चाहिए। पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा संभव न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

शक्तिपात्र युक्त दीक्षा

भुवनेश्वरी दीक्षा

भुवन अर्थात् इस संसार की स्वामिनी भुवनेश्वरी, जो 'हीं' बीज मंत्र धारिणी हैं, वे भुवनेश्वरी ब्रह्मा की भी अधिष्ठात्री देवी हैं। महाविद्याओं में प्रमुख भुवनेश्वरी

ज्ञान और शक्ति दोनों की समन्वित देवी मानी जाती हैं। जो भुवनेश्वरी द्विद्वित्र प्राप्त करता है, उस साधक में आज्ञा चक्र जाग्रत होकर ज्ञान-शक्ति, चेतना-शक्ति, स्मरण-शक्ति अत्यन्त विकसित हो जाती है। भुवनेश्वरी को जगत्धात्री अर्थात् जगत-सुख प्रदान करने वाली देवी कहा गया है। दरिद्रता नाश, कुबेर द्विद्वित्र, रतिप्रीति प्राप्ति के लिए भुवनेश्वरी साधना उत्तम मानी गई है। इस महाविद्या की आराधना एवं दीक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति की वाणी में सरस्वती का वास होता है। इस महाविद्या की दीक्षा प्राप्त कर भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करने से साधक को चतुर्वर्ग लाभ प्राप्त होता ही है। यह दीक्षा प्राप्त कर यदि भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करें तो निश्चित ही पूर्ण द्विद्वित्र प्राप्त होती है।

* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की ऊँचाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अध्येत्यन को ढूँढ़ कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शैर्य प्राप्त कर लेने का, साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का ...।

* गुरु-प्रदत्त शक्तिपात्र द्वारा शिष्य जिस कार्य द्वारा जो दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें नियुक्ति प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है...

* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों को जल से अमृत-अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात्र प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में साथ ७ बजे प्रदान की जाएगी।

Shani Sadhana



If there is anything that the knowledgeable of astrology fear most it is the Dasa or the period of Saturn. And no wonder, for even if Saturn is a benefic in one's horoscope, it does show some of its natural ill effects during its Dasa.

And if by chance it is a malefic in the horoscope then it could simply unbalance life and make one go through unimaginable and unforeseeable trials and tribulations during this nineteen year long period.

However it is not a lost case altogether if you are currently in the Dasa of Shani (Saturn period).

There are so many popular ways to make Saturn favourable. Many believe that there is no cure for it. Others resort to rituals through priests which could or could not work. Some believe that wearing iron rings or stones or giving away black cloth and mustard oil on Saturdays could negate the effect. Not that these methods are futile but the best way to counter the fury of Saturn is a Sadhana as prescribed by our Rishi.

Through these Sadhanas devised by the great Yogi s, who were master astrologers as well, one could not just nullify Saturn's negative effect but also make it favourable so that it could give benefic results in its Dasa. And know it that once one has appeased Saturn then there's no looking back for the person in terms of success and fame earned.

Saturn also rules over professions like engineering, medicine, politics, police and army, explosives and industry. So any one related to these fields could also try Saturn Sadhana for more success.

Presented here is a wonderful Saturn Sadhana that has been tried with amazing results by Sadhaks over the ages. Lord Krishna himself made Arjun accomplish this Sadhana before the start of Mahabharat war

and no wonder Arjun remained invincible in the battle.

Try this Sadhana on any **Saturday**. It has to be repeated on three consecutive Saturdays.

In the night of a Saturday after 10 pm have a bath and wear black clothes. Sit on a black mat or blanket facing the South.

Cover a wooden seat with a black cloth and on it make a mound of black sesame seeds. On the mound place the **Shani Yantra**.

Then contemplate on the form of Lord Saturn chanting the following verse.

**Om Shanno Deveerabhishtaya Aapo Bhavantu
Peetaye Shanyorabhistrabhavantu Nah**

After this make a mark of saffron on the Yantra and light a mustard oil lamp. Then pray to Lord Saturn to free you of all obstacles, fears, problems, pains and afflictions. Then chant one round of Guru Mantra and pray to the Guru for success in the Sadhana.

Then with a **Black Hakeek Rosary** chant eleven rounds of the following Mantra.

Om Sham Shaneishcharaay Namah

Repeat this Sadhana on three consecutive Saturdays. Before Sadhana on each Saturday during the day give away black sesame seeds, black cloth, iron made objects and black lentils as gifts to a poor needy person.

After Sadhana drop the Sadhana articles in a river or pond. This is a very powerful and one of the best Sadhanas for appeasing Saturn and through it sure enough one could gain the blessings and benefic effects of Saturn and achieve remarkable success even during the Dasa of the naturally malefic planet.

Sadhana Articles - 360/-

Sammohan

Sadhana

Personality is a strange word. None would debate the point that it is a strong personality that can take one to the highest echelons of success. But what does one mean by a strong personality?

Does it mean being six foot tall? Does it mean being handsome and physically attractive? Or does it mean being rich and affluent? Without doubt beauty, looks and wealth are forces to reckon with but it is also a fact that personality is something more than all these. Mahatma Gandhi was hardly five foot five inches tall and weighed not more than forty five kgs. and yet he had the entire British regime in India on its toes. Napoleon was a pygmy when compared with his generals and yet the authority that he commanded sent shivers through the most brave men.

So it is not necessary to be physically beautiful to possess a strong persona. Lord Krishna was said to be dark complexioned and yet the magnetic attraction that one felt in his presence was something beyond this world.

To succeed in this world it is necessary to possess a magnetic and attractive persona. You might not be born with this virtue but through the power of Mantras you could instil a divinity in yourself that could make others feel overawed in your presence. The divine energy in Mantras could instil a unique confidence and radiance in you making you star of every gathering and the cen-

tre of attraction everywhere.

Presented here is a Sadhana based on a very such Mantra that is powerful and unfailing. In fact this Sadhana was devised by Guru Sandeepan and given to Lord Krishna. It was by virtue of this Mantra that Lord Krishna was able to virtually hypnotise and influence everyone who came into his contact. Whatever field you are in, this Sadhana could come in handy for it could fill you with charm and magnetism and endow you with a divine persona that could not just steal young hearts but also overawe all and sundry.

In the night of a Friday after 10 PM. have a bath and wear fresh yellow clothes. Sit facing North on a yellow worship mat. Cover a wooden seat with yellow cloth and on it in a copper plate place a **Sammohan Vashikaran Yantra**. Then worship the Yantra with vermillion, rose petals and rice grains. Light a ghee lamp. There after chant 11 rounds of the following Mantra with **Sammohan rosary**.

**Om Sudarshanaay Vidmahe Mahaajwaalaay
Dheemahi Tannashchakrah Prachodayaat.**

This is a very powerful Sadhana and within three four days its effect would manifest and from the changing attitude of the people around you, you could know that the Mantra is working its charm. Repeat this Sadhana for six consecutive Fridays for best results.

Sadhana Articles – 300/-

11 जुलाई 2010

महामृत्युंजय साधना शिविर, मुम्बई

शिविर स्थल: रेलवे ट्रैलफेरर हॉल, मद्या रेलवे वक्त शांप, आम्बेडकर रोड,
वी.आई.पी. शोखम के सामने, परेल (ईस्ट), मुम्बई

आयोजक: दिलीप शर्मा - 098678-38683 ○ तुलसी महतो - 099671-63865 ○ पियुष एवं मानवेन्द्र - 093217-88314 ○ जयश्री एवं राकेश सोलंकी ○ सक्सेना परिवार ○ एस.सी.कालरा ○ देवेन्द्र एवं अलका पंचाल ○ योगेश मिश्रा ○ राकेश तिवारी ○ बुद्धीराम पाण्डेय ○ अमरजीत ○ राहुल पाण्डेय ○ दीपक तिवारी ○ नागसेन ○ अजय ○ संतलाल पाल ○ श्रीराम एवं रमेया ○ भासकरन परिवार ○ लोबो जी ○ अनिल कुंभाटे ○ द्विवेदी जी ○ सूर्यकांत गुप्ता ○ अनिता एवं हंसराज भारद्वाज ○ राजकुमार शर्मा ○ प्रीतम भारद्वाज ○ पुष्पा गोपाल पाण्डेय ○ गोपाल पाण्डेय ○ कवटे परिवार ○ जगदीश पारेख ○ मूलचंद जी ○ जगदीश भाई ○ नटु भाई ○ अनिल भंगेरा ○ गंगा बेन एवं धनराज ○ दयालकर परिवार ○ सुशीला बेन एवं परिवार ○ धनाजी ○ विश्वकर्मा परिवार ○ धनाजी ○ गुरुमीत ○ सुजीत ○ वृद्धवन ○ हरे कृष्ण पांडा ○ वसंत पुरबिया ○ जितेन्द्र ○ विलास ○ आनंद ○ यशवंत ○ पाठक परिवार ○ राजकुमार मिश्रा ○ निशा एवं वंदना बेन ○ सुधीर सेठिया ○ सुनील भाई ○ मंगला एवं एस.एम. चित्ते ○ हंसल सागिया ○ विरेन्द्र जी

A decorative horizontal separator at the bottom of the page. It features two rows of diamond-shaped patterns. The top row has four diamonds in each of the ten segments. The bottom row has three diamonds in each of the ten segments.

23-24-25 जुलाई 2010

ਗੁਰੂ ਪ੍ਰਿਣਿਮਾ ਮਹੋਤਸਵ, ਹਰਿਆਰ

शिविर स्थल: श्री प्रेम नगर आश्रम, ज्वालापुर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

आयोजक: अशोक शर्मा - 098888-39585 ○ अशोक खुराना - 094160-84960 ○ विजय नागरु - 093125-66369
○ विजय शास्त्री - 094161-17631 ○ पी.सी.सौपर्ण - 094164-17344 ○ श्रवण कुमार - 092552-74770 ○ कपिल
वांसल - 098298-00999 ○ गौतम - 098133-41100 ○ कपिल चानना - 097299-00999 ○ पंकज चन्देल - 098722-
31666 ○ कमल मनचंदा - 098991-53867 ○ कृष्णा खुराना - 094165-47994 ○ जगदीश पाण्डेर्य - 093695-20921
○ संजय मिश्रा - 099685-87488 ○ बबला उपाध्याय - 094255-73575 ○ संतोष सोनी - 098265-16245 ○ सुदामा
चंद्रा - 094255-74265 ○ हरि नारायण सिंह बिसेन - 094153-18363 ○ कैलाश सिंह - 099187-96838 ○ अच्छे लाल
यादव - 094505-32131 ○ चन्द्र दामोदर - 098450-41395 ○ एस. एल. धुर्वे - 099931-55686 ○ वासुदेव ठाकरे -
094209-62749 ○ आर. एस. मिन्हास - 094181-61585 ○ प्रमोद दास - 099381-70010 ○ जया शर्मा - 094112-
06768 ○ बी. के. आर्य - 092348-88896 ○ चन्द्रा प्रभु कापड़ी - 098247-34230 ○ राजेन्द्र सिंह सैंगर - 098230-
19750 ○ अनिल सुपेकर - 097673-15044 ○ हरिशचन्द्र कदम - 099226-40064 ○ दिलीप शर्मा - 098678-
38683 ○ विष्णु न्यौपाने (नेपाल) - 00977-98032-84684 ○ जनक लाल मवासे - 094253-61761 ○ अजय गावा -
094165-65547 ○ गोपाल - 098961-87061 ○ पी.एन. पाण्डेर्य - 094311-27345 ○ विजय कुमार झा - 094313-
79234 ○ के.के.तिवारी - 098279-55731 ○ राजीव चौपडा - 093547-48956 ○ तेजीन्दर अरोड़ा - 098966-51405
○ हरिश (काकू) - 093548-45858 ○ प्रमोद वर्मा - 093190-74567 ○ सिद्धाश्रम साधक परिवार, फरीदाबाद -
099106-05725 ○ सिद्धाश्रम साधक परिवार, सहारनपुर - 099271-20654/094114-06812, 099176-66670 ○ सिद्धाश्रम
साधक परिवार, चण्डीगढ़ ○ सिद्धाश्रम साधक परिवार, देहरादून ○ सिद्धाश्रम साधक परिवार, बिजनौर
○ इन्द्रपाल - 098183-83931 ○ राधेश्याम ○ सुरेश भारद्वाज - 094160-31474 ○ श्रीमती नीलम शर्मा - 098888-
39585 ○ के. एल. छाबडा - 094666-94070 ○ सिद्धाश्रम साधक परिवार, लुधियाना ○ सिद्धाश्रम साधक
परिवार, अमृतसर ○ प्रद्युमन शर्मा - 090458-03135 ○ अजय सिंह ○ राजवीर सिंह ○ अभय नारायण सिंह
○ वरुणेन्द्र श्रीवास्तव ○ करुणेन्द्र श्रीवास्तव ○ सुनील कुमार ○ प्रियदर्शी ○ राम आसरे मिश्रा ○ रामचन्द्र
मिश्रा ○ राजकुमार ○ मोती चौहान ○ सुजीत राय ○ आनन्द तिवारी ○ एम. पी. सिंह ○ डॉ. चन्द्र प्रकाश

★ ○राम नारायण पटवा ○एस. बी. सिंह ○महेन्द्र प्रताप सिंह ○ईश्वर प्रसाद सिंह ○रणविजय सिंह ○आशीष
मौर्य ○अनिल गुप्ता ○प्रदीप भारद्वाज ○सिद्धाश्रम साधक परिवार, रायबरेली ○अच्छेलाल ○बी. के. भाई
★ ○रामबाबू सक्सेना ○सावित्री चन्द्र प्रकाश शर्मा ○प्रकाश यादव ○लालमणी निखिल ○ शिवशंकर यादव
○के.के. निखिल ○सिद्धाश्रम साधक परिवार, आगरा ○श्रीमती चन्द्रावती आर्या ○दिनेश चन्द्र पाण्डेय
○श्याम सिंह यादव ○तेहराज सिंह ○गोकरन सिंह ○वीरेन्द्र त्रिवेदी ○ओमकार सिंह ○राजेन्द्र सिंह
★ ○योगी प्रकाशानन्द ○भगवान सिंह राणा ○डॉ. धर्मेन्द्र सुरीरा ○डॉ. सूर्यमणि डंगवाल ○डॉ.एम.बी.भास्कर
○लक्ष्मण सिंह विष्ट ○हुकुम सिंह विष्ट ○अब्बल सिंह ○केदार सिंह ○शैलेन्द्र लिंगवाल ○कल्याण सिंह
★ ○एस.एन.डिमरी ○कर्ण सिंह ○शिवाजी ○

A decorative horizontal separator at the bottom of the page, featuring a repeating pattern of diamond shapes.

08 अगस्त 2010

शंकराचार्य प्रणित कनकधारा यंत्र साधना शिविर, अलूच

शिविर स्थल: जे.पी. आर्ट एण्ड साइन्स कॉलेज,

जुना N.H. - 8, एकसीस बैंक पास, स्टेशन रोड (पूर्व) भरुच

आयोजक: आर.सी.सिंह - 093762-15564 ○ हरेश जोशी - 098255-23924 ○ शेतबान सहानी - 098241-25625
 ○ हेमंत भट्ट - 094262-85578 ○ ठाकोर काक - 094281-12378 ○ आर. के. दास - 02642-225317 ○ प्रशांत भट्ट -
 098241-01656 ○ विजयनाथ सहानी - 098980-32172 ○ राजेन्द्र चौहान - 098252-45277 ○ देवेन व्यास -
 095588-07927 ○ श्री कौशिक विवेदी - 099252-45899 ○ परेश भाई पी. जोशी - 094274-14201 ○ पी.पी.सिन्हा -
 094271-44283 ○ प्रकाश भाई राजपूत - 098980-38055 ○ किशोर गौड - 098243-75499 ○ हिंतेश शुक्ला -
 096386-91175 ○ रमई मिस्त्री - 093774-31545 ○ नरेन्द्र सिंह खैर - 097277-74125 ○ अनुल मिश्रा - 094274-
 77481 ○ मुकेश चौहान - 098243-31692 ○ गुरुचरण विश्वकर्मा - 098255-45438 ○ जीतमेन सहानी - 097238-
 83893 ○ गजानन सहानी - 098797-26967 ○ शिवशंकर प्रसाद - 094271-57750 ○ राकेश अग्रवाल - 098244-
 89587 ○ एन. के. त्रिपाठी - 080007-29561 ○ अल्पेश दरजी - 094275-87072 ○ दिनेश पटेल - 099749-37511
 ○ एस. के. सिन्हा - 099984-11983 ○ चेतन पटेल - 098254-29041 ○ प्रवीण गुज्जर - 094271-43563 ○ शैलेन्द्र
 कुबावत - 099982-13452 ○ गोविंद सहानी - 098243-45868 ○ राजेश धींगरा - 02642-239531 ○

14-15 अगस्त 2010

शिविर स्थल: दूरिजम क्लब हाऊस, मनाली, (हि.प्र.)

★ आयोजक: ○मनाली: शिव कुमार - 093189-70111 ○राजीव निखिल - 098164-32441 ○कृष्ण चन्द - 094182-81400 ○मेहर चन्द - 094181-33409 ○मण्डी: महेन्द्र लाल गुप्ता - 094180-43420 ○शैलेन्द्र शैली - 098166-11050 ○बंशी राम ठाकुर - 098050-42544 ○जीवन कान्त - 094183-00217 ○सुन्दर नगर: मान सिंह - 098170-04634 ○रविन्द्र नाथ - 094187-26430 ○श्याम सिंह - 098170-42859 ○नन्द लाल - 094180-09920
 ★ ○रामचन्द्र - 094187-71841 ○सरकाधाट: रोशन लाल - 01905-250877 ○रोशन लाल - 098173-15467
 ○राकेश कुमार - 094182-01564 ○ज्ञान चन्द्र - 094180-00677 ○पालमपुर: आर.एस.मिन्हास - 094181-61585 ○नगरोटा सूरियां: ओमप्रकाश शर्मा - 094182-50674 ○मिन्टू - 094184-34476 ○कुशल सिंह - 01893-265184 ○कांगड़ा: संजीव - 093185-89800 ○धर्मशाला: संध्या - 098161-84327 ○ऊना: प्रदीप राणा - 094653-26009 ○अमरजीत - 094184-50285 ○चिन्तपूर्णी: जीत लाल कालिया - 098170-45856 ○शिमला: चमन लाल कौण्डल - 094180-40507 ○तुलसी राम कौण्डल - 094186-94858 ○अशोक कुमार - 094181-20691
 ○दूनी चन्द - 094184-00059 ○गोपी राम - 094180-30917 ○सुरेन्द्र कमर - 094180-25976 ○हेतराम जसवाल

- 094181-41941 ○ कोटरवाई: तेजराम - 094181-81759 ○ सोलन: प्रेम चन्द्र मस्ताना - 094182-67121 ○ मोहन ☆
 लाल भारद्वाज - 098167-80676 ○ नाहन: गौरव मैहता - 094184-77239 ○ चम्बा: अमरीक सिंह - 094182-
 21352 ○ अयोध्या प्रसाद - 094181-80707 ○ मुर्नीष - 094181-01341 ○ हमीरपुर: राजेन्द्र शर्मा - 094181-03439 ☆
 ○ कुलदीप - 094590-12418 ○ कमल देव - 091829-8492 ○ राज कुमार - 094592-19993 ○ गगन - 094181-
 25421 ○ बिलासपुर: जीवनलंता - 094180-46465 ○ रत्न लाल - 091812-4816 ○ प्रेम सागर - 094183-29008
 ○ चैनलाल - 098056-50078 ○ सुरेश चन्द - 092187-78875 ○ ठाकुर दत्त - 098172-23806 ○ धनीराम -
 098171-53257 ○ शेखर अग्रवाल - 094180-00234 ○ बलदेव - 094183-03127 ○ बरमाणा: ज्ञान चन्द - 091782-
 44618 ○ घुमारवी: जगरनाथ नड़ा - 094182-55835 ○ राजू सेन - 098166-42366 ○ सुमन शर्मा - 094182-
 57738 ○ गोवर्धन शर्मा - 098160-93560 ○ प्रकाश चन्द - 098171-64446 ○ लेखराम - 098161-28250 ○ राम
 कुमार - 093187-95419 ○ सोनू - 098173-10833 ○ शिव कुमार - 094181-14916 ○ प्रकाशोंदेवी - 094180-24207
 ○ अनन्त राम - 097364-49856 ○ हेमराज - 094186-73337 ○ संतोष कुमार - 098161-60261 ○ उत्तम - 091719-
 0815 ○ धर्म सिंह - 098058-20830 ○ पिंकी - 098170-68928 ○ रोशन लाल - 093187-15278 ○ के.डी. शर्मा -
 094180-65655 ○ राजेश कुमार - 098173-09088 ○ हेमलता कौण्डल - 098053-48006 ○ रविन्द्र कुमार - 094182-
 84016 ○ ओम निखिल - 094180-05016 ○ श्रीराम - 098164-91011 ○ ज्ञान चन्द रत्न - 094180-90783 ○
 ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

21-22 अगस्त 2010

दस महाविद्या साधना शिविर, धनबाद

शिविर स्थल: गोल्फ गाउण्ड, डी.सी. कोर्ट के पास, धनबाद (झारखण्ड)
 आयोजक: यू. पी. सिंह - 093868-05016 ○ राजेन्द्र सिंह - 094314-53725 ○ पी. आर. ताह - 094317-30663
 ○ जे. पी. सिंह - 094705-96486 ○ भोला सिंह - 093340-07090 ○ युधीष्ठीर महतो ○ सचिता सिंह - 098355-
 27995 ○ आर. के. प्रसाद ○ योगेन्द्र प्रसाद सिन्हा - 099050-33018 ○ रामायण चौधरी ○ सुरेश साव ○ लेखो
 चौहान ○ बी. के. श्रीवास्तव - 094301-32386 ○ अजय कुमार सिंह - 094312-64126 ○ नीरज कुमार सिंह -
 099341-13637 ○ एन. एल. शर्मा ○ अरुण श्रीवास्तव ○ प्रकाश सिंह ○ गोविन्द खैरवार ○ नवीन कुमार गुप्ता
 ○ बी. के. मिश्रा - 092348-69267 ○ अरुण कुमार सिंह - 094317-31522 ○ दिलीप पेन्टर - 093867-03106
 ○ प्रमोद कुमार ○ धनेश्वर निखिल ○ भगवान दास ○ मनोज कुमार सिंह - 093343-82318 ○ कमलेश दवे -
 099341-98527 ○ मनु चौधरी ○ जनार्दन प्रसाद प्रजापति - 099396-08140 ○ श्यामुवल मराण्डी ○
 ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

पत्रिका के पृष्ठ संख्या 72 पर कृष्ण शक्ति युक्त सम्मोहन-आकर्षण प्रदायक 'कली' दीक्षा के सम्बन्ध में विस्तार से विवेचन एवं प्रपत्र दिया गया है। यह देखा गया है कि कई साधक सम्बन्धित प्रपत्र भेजते समय इस बहुमूल्य पत्रिका का वह पेज फाइकर भेज देते हैं। यह उचित नहीं है, आप इसकी फोटोकॉपी करवाकर साफ-साफ शब्दों में पूरा प्रपत्र भर कर भेजे। आप एक साफ कागज पर पूरा प्रपत्र हाथ से लिखकर भी भेज सकते हैं। लेकिन समय रहते प्रपत्र अवश्य ही भरकर भेज दें। इससे सम्बन्धित मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त साधना सामग्री पर कार्य प्रारम्भ हो चुका है और यह सीमित मात्रा में ही उपलब्ध हो सकेगा।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव जो कि 23-24-25 जुलाई 2010 को हरिद्वार में सम्पन्न होने जा रहा है, उस सम्बन्ध में साधकों के बड़े ही उत्साहवर्द्धक समाचार पूरे भारत वर्ष तथा विदेशों से प्राप्त हो रहे हैं। इस सम्बन्ध में सम्बन्धित व्यक्तियों के फोन नम्बर पिछले तथा इस अंक में भी दिये जा रहे हैं। यह गुरु पूर्णिमा महोत्सव वर्ष का सबसे महत्वपूर्ण अवसर है और गुरु परिवार का तथा सभी आयोजकों का आग्रह है कि आप पूरे परिवार सहित इस आयोजन तथा शिविर में भाग लें। जो साधक शिविर के पश्चात् आगे गंगोत्री, बद्रीनाथ इत्यादि की यात्रा करना चाहते हैं, उनके लिये भी उचित व्यवस्था करने का प्रयास किया जा रहा है।

ब्रु कहूँ पौधिन बाची, मैं कहूँ आर्द्धिन देखी
यान सूर्पी गंगा, क्रिया सूर्पी यमुना, वाणी सूर्पी सरस्वती का मेल है -



सद्गुरुदेव के अमृत वचलों में, जो सिंचन कर देते हैं
साधकों के हृदय और मन को।

जिस वाणी में है -

ब्रह्म का ज्ञान, शिव का ओज और

विष्णु का तेज समाहित है -

ऐसे अमृत प्रवचन सुनिये बार-बार -

आॅडियो फैस्ट/सी.डी

- ❖ गुरु मुखी स्तोत्र
- ❖ भजन कुछ कर ले
- ❖ नारायण नारायण
- ❖ सद्गुरुदेव
- ❖ भजन सागर
- ❖ तू व्यापक डाली डाली है
- ❖ ध्यान योग
- ❖ गुरु हमारी जाति
- ❖ अब तो जाग
- ❖ कुबेर पति शिव शक्ति साधना
- ❖ पारदेश्वर शिवलिंग पूजन
- ❖ शिवसूत्र
- ❖ महाशिवरात्रि पूजन
- ❖ घोडश गुरु पूजन
- ❖ विशेष गुरु पूजन
- ❖ गुरु वाणी भाग १-२-३
- ❖ सिद्धाश्रम महात्म्य
- ❖ मंजुल महोत्सव-९८ भाग १-५
- ❖ महातंत्र साधना शिविर-९५ भाग १-६
- ❖ महासरस्वती स्वरूप साधना
- ❖ ऐं बीज साधना
- ❖ बसन्त पंचमी साधना

वीडियो सी.डी

- ❖ एकादश रुद्र साधना शिविर
वाराणसी-९८ भाग १-६
- ❖ महाशिवरात्रि शिविर-९७ भाग १-३
- ❖ निखिलेश्वरम् महोत्सव
इलाहाबाद-९३ भाग १-३
- ❖ गुरु पूर्णिमा
हैदराबाद-९७ भाग १-३
- ❖ निखिलेश्वरम् महोत्सव
गोधरा-९२, भाग १-३
- ❖ राज्याभिषेक दीक्षा
दिल्ली-९७, भाग १-६
- ❖ निखिलेश्वरम् महोत्सव
जोधपुर-९२, भाग १-३
- ❖ सिद्धाश्रम
- ❖ सिद्धाश्रम प्रश्नोत्तर
- ❖ गुरु पादुका पूजन



न्यौछावर प्रति आॅडियो कैसेट - 30/-
न्यौछावर प्रति आॅडियो सी.डी. - 30/-
न्यौछावर प्रति वीडियो सी.डी. - 60/-



मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट, कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, फैक्स : 0291-2432010



COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्कलेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27352248, टेली फैक्स 11-27356700

रजिस्ट्रेशन नं. 35305/81
With Registrar Newspapers of India
Posting Date 02-03 JULY 2010

A.H.W

Postal No. JU/65/2009-11
Licence to post Without pre payment
Licence No. RJ/WR/PP04/2009-11



माह : अगस्त में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
06-07-08 अगस्त

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
27-28-29 अगस्त

प्रेषक -

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342031 (राजस्थान)
फोन : 0291-2432209, 2433623,
टेलीफैक्स - 0291-2432010

वर्ष - 30

अंक - 07

Mem. No. 19657

Upto 04/2012

July - 2010

SHRI BIMAL MISHRA
20/1-A. SHIB KRISHNA DAW LANE
KANKURGACHI

Post : KOLKATA
Distt : KOLKATA (W.B.)

Pin : 0